

VASUNDHARA COLLEGE OF ARTS, SCIENCE & COMMERCE, GHATNANDUR

NAAC Accredited 'B' Grade, With CGPA 2.47.

Affiliated to Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad

Dr. Arun Dalve
(M.A., B.Ed., Ph.D.)
Principal



Mob:9424342148

Mob:9822898727

Mob. 9923019540

Website: www.vasundharacollege.org

E-mail - Principalvcg@rediffmail.Com

E-mail-vasundharacollege2000@gmail.com

Ghatnandur, Tq. Ambajogai, Dist. Beed, Pin – 431519 (Maharashtra)

Outward No.VCG /20

Date / /

3.3.1

3.3.1 Number of research papers published per teacher in the Journals notified on UGC website on Academic year 21-22

Sr. no	Name of teacher	Name of journal	Title of paper	ISSN number	Page No
1.	Dr. Sawane G.B	Current Global Reviewer	Aardhanarishwar Me Bhartiya Tatha Pashyatya Snskruti Ka Samanvay	2319-8648	4 to 7
2.	Dr. Gangane A.U	B. Aadhar international Peer-Reviewed Index Research Journal	Bhartiya Swatantra Ladhyatil Mahilancha Sahabag	2278-9308	8 to 12
3.	DR. Deshmukh A.B	Universal research Analysis	Voice Of Feminism: Jaya In Shashi Deshpande's Novel That long Silence	2229-4406	13to 22
4.	DR. Deshmukh A.B	Current Global Reviewer	Rohinton Mistry's Novel Such A Long Journey: A journey Of Hope And Despair	2319-8648	23 to 27
5.	Dr. Gangane A.U	B. Aadhar international Peer-Reviewed Index Research Journal	Yashwant Rao Chavan Yanche Shaikshanik Karya	2278-9308	28 to 33
6.	Dr. Gangane A.U	Journal Of Research And Development	Samaj Sudharak Chhatrapati Shahu Maharaj	2230-9578	34 to 36
7.	Dr. More A.M	Indo Asian Social Science Research Journal	Gramin Vikasat Mahilanche Yoagdan	2393-8412	37 to 41
8.	Asst. Prof. Jogdand M. B	World Wide International Interdisciplinary Research Journal	Rajyapalanchya Aadhikaranche Aadhyayan	2454-7905	42 to 48

9.	Asst. Prof. Jogdand M. B	International Journal For All Research Education And Scientific Method	Yashwant Rao Chavan Yanche Rajkiya Karya	2455-6211	49 to 52
10.	Asst. Prof. Jogdand M. B	Saraswathi The Research Journal	Kendra Va Ghatak Rajya Yanchyatil Prashaskiya Aani aarthik Sambandh	2229-5224	53 to 59
11.	Dr. Khadap S. B	International Journal For All Research Education And Scientific Method	Yashwant Rao Chavan Yanche Lalit Sahitya	1455-6211	60 to 63
12.	Dr. Khadap S. B	Journal Of Research And Development	Vicharvant Aani Sudharak Chhatrapati Shahu Maharaj	2230-9578	64 to 69
13.	Asst. Prof. Kirdant V.G	World Wide International Interdisciplinary Research Journal	Mulyankit Mahavidyalain Granthalayancha Vittiya Vyavstapanancha Aabhyas	2454-7905	70 to 79
14.	DR. Deshmukh M.B	International Journal For All Research Education And Scientific Method	Maharashtrachi Samajik Jadan Ghadan Aani Yashwantrao Chavan Yanche Yogadan	2455-6211	80 to 83
15.	DR. Deshmukh M.B	Vidyawarta	Dr. Babasaheb Ambedkar Yanche Samajik Vichar Va Karya: Ek Samajshatriya Aabhyas	2319-9318	84 to 87
16.	DR. Deshmukh M.B	B. Aadhar international Peer-Reviewed Index Research Journal	Impact of Covid-19 on the Environment: A Social Study	2278-9308	88 to 91
17.	DR. Deshmukh M.B	Excel's International Journal of Social Science & Humanities	Gramsabha: Gramin Vikasatil Yogdanacha Samajshatriya Aabhyas	2277-7539	92 to 95
18.	Dr. More A.M	World Wide International Interdisciplinary Research Journal	Bhartatil Samajsudharakanche Aarthik Vichar Aani Prasangikta	2454-7905	96 to 103
19.	Dr. More A.M	Journal Of Research And Development	Dr. B.R. Ambedkar Ka aarthik Vichar or Yogdan	2230-9578	104 to 108
20.	Dr. Ranmal P. S	International Journal For All Research Education And Scientific Method	Yashwantrao Chavan Yanche Rajkiya Yogadan	2455-6211	109 to 113

21.	Dr. Ranmal P. S	World Wide International Interdisciplinary Research Journal	Importance Of Diet During Covid-19 Situation	2454-7905	114 to 119
22.	Dr. Ranmal P. S	Excel's International Journal of Social Science & Humanities	Marathawadyatil Gramin Khel	2277-7579	120 to 123
23.	Dr. Ranmal P. S	Interlink Research analysis	Aantarmahavidyalayin Mulinchya Krida Spardha Va Kridashikshkanchi aabhivrti	0976-0377	124 to 130
24.	Asst. Prof. Zadke G. R	Vision Research Journal for Geography & Geology	Ambajogai Aani Kaij Tahashil Aantargat Peek Vivdhatecha Tulnatmak Aabhyas	2278-9820	131 to 135
25.	Dr. Gangane A.U	International Journal For All Research Education And Scientific Method	Gramin Vikasachya VividhaYojana	2455-6211	136 to 139


PRINCIPAL
 Vasundhara College, Ghatnandur
 Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648

Impact Factor - 7.139

Indexed (SJIF)

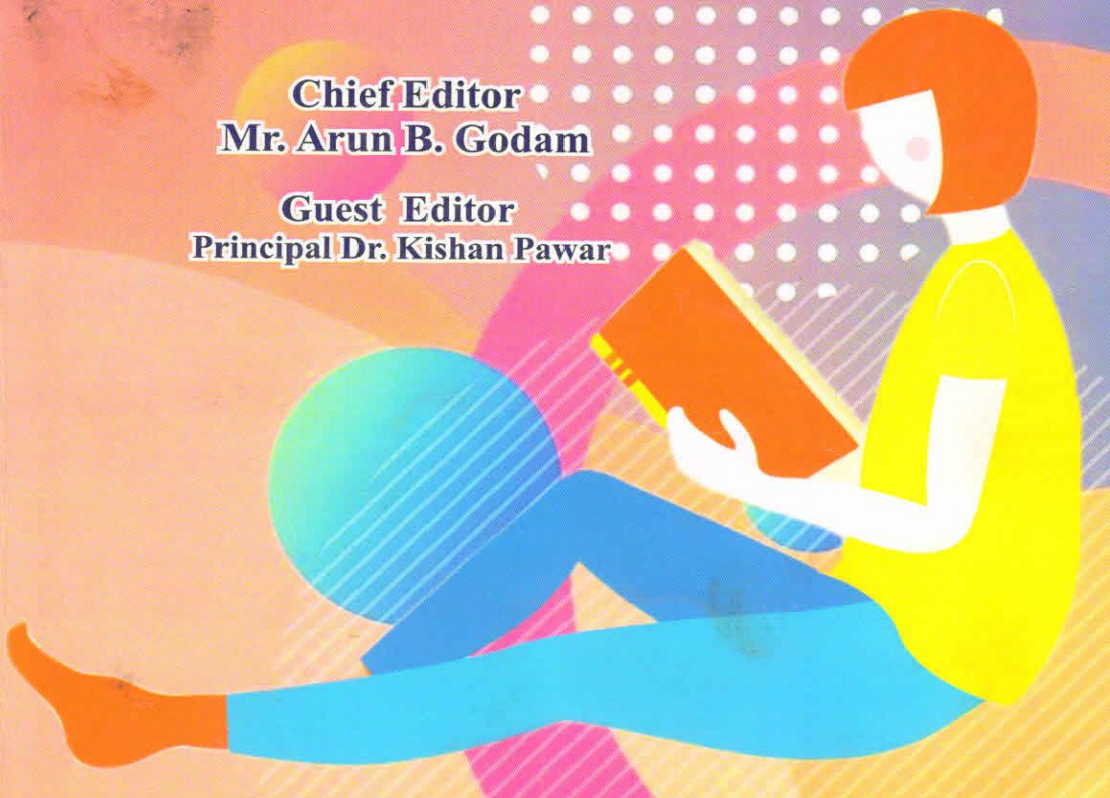
05 Sept. 2021

Special Issue-43 Vol. I

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar



14. साहित्य, संस्कृति और मीडिया के उपलक्ष्य में प्रस्तुत शोधालेख "आधुनिक साहित्य में चित्रित मनोवैज्ञानिकता"
प्रा.डॉ.संजय ब्यंकराव जोशी 50
- ✓ 15. 'अर्धनारीश्वर' में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय
प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे, प्रा.डॉ. गजानन सवने 52
16. श्री तेजपाल धामा के कथात्मक साहित्य में भारतीय संस्कृति
सुश्री स्वाति हिराजी देडे, डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ 54
17. साहित्य और संस्कृति
प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी 56
18. वाचन संस्कृती आणि माध्यमे
प्रा.अशोक शि.खेत्री 58
19. वाचनसंस्कृती
प्रा.ज्ञानेश्वर को. गवते 60
20. ऑनलाइन शिक्षण आणि आपण
सह.प्रा.उघडे सुहास मुरलीधर 62
21. साहित्य, संस्कृति व प्रसार माध्यमे
डॉ. लक्ष्मण बळीराम थिड्डे 65
22. वाचन संस्कृतीवर समाजमाध्यमांचा पडलेला प्रभाव
प्रा. डॉ. रमेश औताडे 67
23. वाचनसंस्कृती आणि प्रसारमाध्यमे
सहा. प्रा.डा. रवींद्र बाबासाहेब ढास 70
24. अध्ययन-अध्यापनात माध्यमांची भूमिका
डॉ. सीता ल.केंद्रे 74
25. साहित्य आणि प्रसार माध्यमे
प्रा.डॉ.लक्ष्मण गित्ते 77
26. अध्ययन- अध्यापनात माध्यमांची भूमिका
प्रा.डॉ. रामहारी मायकर 79

‘अर्धनारीश्वर’ में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय

प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे,
सहयोगी प्राध्यापक,
सुंदररावजी सौंळके महाविद्यालय, माजलगांव, जि. बीड

प्रा.डॉ. गजानन सवने
सहायक प्राध्यापक
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, जि. बीड

प्रस्तावना :-

विष्णु प्रभाकर जी हिन्दी साहित्य के मुर्धन्य साहित्यकार हैं। जिन्होंने साहित्य के लगभग सभी विधाओं में उत्कृष्ट लेखन कार्य किया है। विष्णु प्रभाकर जी को देखकर कहा जाता सकता है कि उनके विशाल हृदय मानवता के लिए समर्पित हैं। व्यक्तित्व की यही समस्त विशेषताएँ हमें उनके साहित्य में दृष्टिगत होती। ‘आवास मसीहा’ का लेखन कार्य उन्होंने चौदह वर्षों के अथक परिश्रम के बाद किया था। जो कि साहित्य जगत की एक अविस्मरणीय घटना है। विष्णु प्रभाकर जी ने नाटक विधा में विलक्षण योगदान हैं। इसके साथ उन्होंने उत्कृष्ट कहानी एवं उपन्यासों का सृजन किया है। ‘अर्धनारीश्वर’ यह इनका प्रसिद्ध उपन्यास है। इस कृति को साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनकी प्रत्येक रचना में मानवीय मूल्य एवं आदर्शों के साथ बृहत् सामाजिक हित भी भावना निहित होती है।

‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास घटना प्रधान एवं चरित्र प्रधान है। उसमें बलात्कार की घटना प्रमुख है। सुमिता यह प्रमुख नारी चरित्र है। यह उपन्यास नारी विमर्श का महत्वपूर्ण है। बलात्कार पीड़ित नारी की संवेदना को सृजित करने का विष्णु प्रभाकरजी ने किया है। उसके साथ भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय करके नये नारी पुरुषों की मापदंड को समाज के सामने रखने का काम किया है। ‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास तीन खण्डों में विभाजित है। उपन्यास का पहला खण्ड व्यक्ति का मन है, जिसमें पात्रों के मानसिक अंतर्द्वन्द्व को अंकित किया है। समाज मन दुसरा खण्ड है, जिसमें विभिन्न घटनाओं को लेकर सामाजिक प्रतिक्रियाओं का आकलन है। तीसरा खंड अन्तर मन है, जिसमें व्यक्तियों की कुंठाओं एवं शंकाओं को दूर कर एक स्वस्थ मानसिकता की आधार भूमि तैयार की गई है।

विष्णु प्रभाकर जीने बलात्कार नारी को भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीड़ित नारी को भारतीय संस्कृति में बलात्कार पीड़ित नारी को बचछलन, अभागी नारी के रूप में देखते है। तो पाश्चात्य संस्कृति में नारी को बचछलन कहकर नहीं पुकारते है। ‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास की सुमिता अपने पति, नंदन और बच्चों की गुण्डों से जान बचाने के लिए गुण्डों के साथ जाती है। सुमिता कहती है, “मैं कहती हूँ, उसे मत छुना। मैं चलींगी तुम्हारे साथ।”¹ इसके बाद सुमिता को गुण्डे बलात्कार कर देते है। लेखकने बलात्कार करनेवाले गुण्डे के मुँह यह कहलाते है की, बलात्कार क्यों कर रहे हैं। एक गुण्डा कहता है, “मैं इसे मार कर शहिद बना दूँ। नहीं, नहीं, यह जिन्दा रहेगी आर तडपेगी गरम रेत पर पडी मछली की तरह। मुझे इन्तकाम लेना है उन सफेद पोशों से।”² यह बदले के भावना को आम नारी के जीवन को नरक बनाने का काम यह कर रहे हैं।

बलात्कार होने के, बाद भारतीय संस्कृति में नारी को समाज, घर के पति अलग नजरे से देखते है। सुमिता का पति अजित कहता है कि, “क्या यह सम्भव नहीं कि रति क्रिया में वह मुझ से सन्तुष्ट नहीं हो सकी, पर परम्परागत मूल्यों के कारण एक हिन्दू नारी होने के नाते उसने इस बात की कभी शिकायत नहीं की। नहीं करना चाही, लेकिन अनजाने और अनचाहे भी वह असन्तोष धीरे – धीरे जड़ जमाता रहा, उसके अपनी इच्छा से उनके साथ जाने का।”³ इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में पीड़ित नारियों का साहारा बननेवाले सहृदय वाले व्यक्ति मिल जाते हैं। लेकिन समाज पीड़ित नारियों को हीन नजरेसे देखते है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में बलात्कार पीड़ित नारी को मान सम्मान प्राप्त करके देते हैं। लेखक ने राजकली के माध्यम से भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय दिखाया है। राजकली कहती है, “बहुत सी युवतियाँ है, जो अपने यारों के साथ मुँह काला करती है या उनकी भाषा में कहूँ तो आनन्द मनाती है, भेद खुलने पर जरूर वे कुछ दिन के लिए बदनाम हो जाती है, फिर लोग उन्हें भूल जाते है। वे मेरी तरह हमेशा-हमेशा के लिए ‘अछुत’ नहीं हो जाती।”⁴ राजकली कुछ दिन कुटाग्रस्त रहती है। उसके साथ शादी भी कोई करने को तैयार नहीं होता। लेकिन एक ख्रिश्चन अध्यापक विलियम उसके साथ शादी करता है और उसे बलात्कार पीड़ित होने के भय से मुक्ति मिलती है।

बहुविवाह पध्दती दोनों संस्कृति में है। भारतीय संस्कृति में पुरुष बहुविवाह करता है और नारी को बहुविवाह करने की अनुमती नहीं है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति में नारी पुरुष दोनों ही बहुविवाह करते हैं। ‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास में लेखक ने श्यामला पात्र के माध्यम से भारतीय संस्कृति का फोल खोला है। वह अपने जीवन को पुनर्त्व लाने के लिए शादी करती है। वह तीन पुरुषों के साथ विवाह करती है लेकिन उसे कोई भी अपनाता नहीं है, इसलिए समाज उसे वैश्या समझता है। श्यामला स्वयं कहती है, “नाना प्रकार के लांछन लगाते हैं यहाँ के लोग। वैश्यातक कहते है।”⁵

पाश्चात्य संस्कृति का मुक्त यौन सम्बन्ध पर ‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास में चित्रण किया है। सुमिता नीग्रो युवक डेविड के साथ उसी के रूप में नहीं जाती क्योंकि उसके मन पर भारतीय संस्कृति के प्रतिव्रता का प्रभाव है और वह अपने

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, Vol. 1
Sept. 2021

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

पति से एकनिष्ठ है। इसलिए डेविड सुनिता से पुच्छता है कि क्यों नहीं आती मेरे रुम में। तो उसे कहती है, “अगर इस समय मेरे स्थानपर तुम्हारी पत्नी हो और तुम्हारे स्थान पर मेरे पति तो क्या तुम उसे सह सकोगे?”⁶ ऐसा सवाल करती है तों डेविड कहता है की, हमारे यहाँ ऐसा कोई बन्धन नहीं है। सुनिता उसे समझाती है। इसमें भारतीय संस्कृति के गुण उजागर होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि, आज भारतीय संस्कृति का विश्व में नाम लिया जा रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति के रहन सहन, खान पान विचारों को विश्व में सम्मान रहा है। लेकिन जिस भारतीय संस्कृति का प्रभाव पाश्चात्य देशों में हो रहा है। उसी प्रकार पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर हो रहा है। भारतीय संस्कृति में नारी को स्वयं का स्वतंत्र्य नहीं, परम्परा, प्रथा, संस्कृति में जकडी रहती है। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण नारी आज पुरुष के आगे है। विष्णु प्रभाकर जी ने ‘अर्धनारीश्वर’ उपन्यास में भारतीय संस्कृति के दोषों को दुर करना तथा पाश्चात्य संस्कृति के अच्छे मूल्यों को अवगत करना चाहते हैं। इससे एक उत्कृष्ट नारी पुरुष ‘अर्धनारीश्वर’ बन जाएंगे।

संदर्भ :-

1. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 34
2. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 146
3. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 72
4. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 56
5. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 76
6. विष्णु प्रभाकर, अर्धनारीश्वर, शब्दाकार 159, गुरु अंगदनगर (वैस्ट) दिल्ली 110092, सं. 2002 पृ. 148

Impact Factor-8.575 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

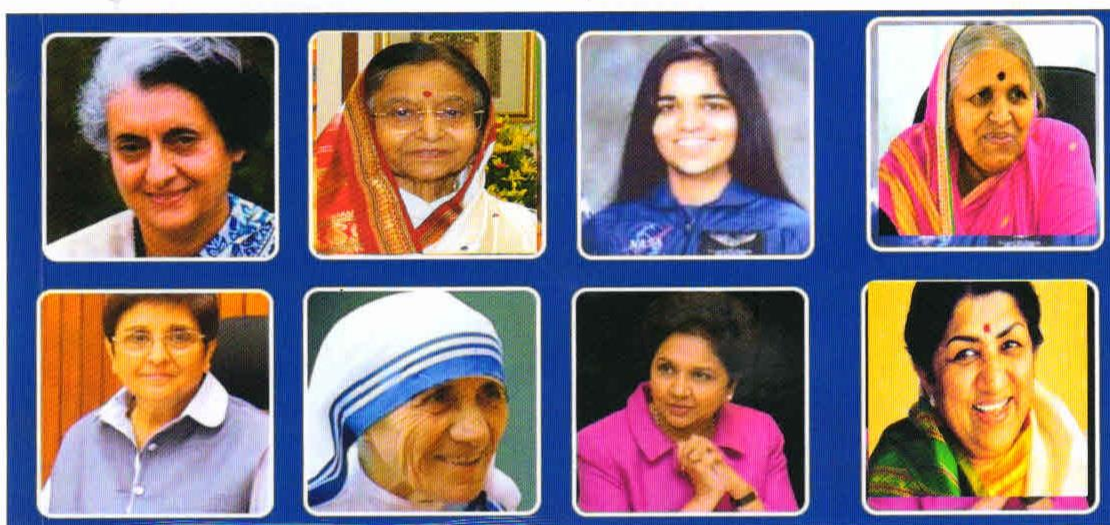
Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2022

ISSUE No- (CCCXLIII) 343

INDIAN WOMEN: PRESENT, PAST AND FUTURE



Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor

Director
A.S.R.&.D. T.I., Amravati.

Dr. D.V. Meshram,
Chief organizer:
I/C Principal

Dr. B.V. Kendre,
IQAC Coordinator
& Head Dept. of Chemistry

Dr. Babasaheb Shep
Editors
Head of History Department

Dr. Ramesh Rathod,
Editors
Head, Department of Sociology

Dr. V. B. Gaikwad
Editors
Department of Zoology

Vaidyanath College of Arts, Science & Commerce, Parli-Vaijnath



This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	जागतिक राजकारणात महिला सहभाग	प्रा. डॉ.बापुराव वि.आंधळे	1
2	हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामातील महिलांचे योगदान	बांगर स्वाती आदिनाथ	4
3	असंगठित क्षेत्रातील महिलांचे सबलीकरण-एक अभ्यास	प्रा. डॉ. आंबादास पांडुरंग बर्वे	8
4	भारतीय राष्ट्रीय स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्रिया	डॉ. बाबलगावे सी. एम.	13
5	संततिनियमन चळवळीतील पहिल्या शिलेदार : मालतीबाई कर्वे	डॉ. सुभाष गणपतराव बेंजलवार	17
6	भारतीय स्त्रियांची सुरक्षा आणि दलित चळवळ	डॉ. किरण चक्रे	22
7	ग्रामीण भागातील स्त्रियांच्या समस्या	आबासाहेब माणिकराव देशमुख	25
8	पंडिता रमाबाई : प्रागतिक भूमिका व कार्य	प्रा. एम.पी.देशपांडे	28
9	आर्थिक सामाजिक समावेशनाचा स्त्रियांच्या सशक्तीकरणातील योगदान	डिके विनोद रमेश	33
✓10	भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचा सहभाग	डॉ. गंगणे अमोल उत्तमराव	39
11	भारतीय क्रांतीकारकांच्या चळवळी आणि स्त्रियांचे योगदान	प्रा. डॉ. जाधवर बी.डी.	42
12	भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामातील क्रांतीकारी स्त्रियांचे योगदान	प्रा.डॉ.कदम मोतीराम विठ्ठलराव	45
13	बौद्ध संघातील स्त्रियांचे योगदान : एक अभ्यास	प्रा. डॉ.रामभाऊ देवराव काशीद	50
14	क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांचे शैक्षणिक कार्य	डॉ. सतीश खरात	53
15	स्त्रीवादी साहित्य कादंबरी (१८५० ते १९५०) एक ऐतिहासिक दृष्टिक्षेप.	प्रा. श्री. अमोल अरूण कुंभार	56
16	शिलाहारकालीन जैन धर्मिय स्त्रियांची कामगिरी	कु. वनिता गंपू कुंभार	61
17	प्राचीन, मध्ययुगीन, आधुनिक स्त्रीजीवन एक अभ्यास	प्रा. डॉ. सौ. एस. पी. लाखे	64
18	कोरोना महामारीचा महिलांच्या जीवनावर झालेला दूरगामी परिणाम	चित्रा भारत पगारे /डॉ. जयश्री महाजन	71
19	सातवाहन नृपती हाल संपादित गाहासत्तसई (गाथासप्तशती)तील स्त्रीजीवन	प्रा. डॉ.माधवी महाके /श्रीमाला के.जी	76
20	जागतिकीकरण आणि भारतीय स्त्री : एक सामाजिक दृष्टीकोन	डॉ. गजानन रा. मुधोळकर	82

भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यातील महिलांचा सहभाग**डॉ. गंगणे अमोल उत्तमराव**

(इतिहास विभाग) वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर ता.अंबाजोगाई जि.बीड

प्रस्तावना :

भारताला स्वातंत्र्य १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी मिळाले. हे स्वातंत्र्य सहज मिळालेली बाब नव्हते. भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्तीकरिता अनेक स्वरूपाचे उठाव, क्रांतिकारकांच्या संघटना, गांधी युगातील चळवळी, आझाद हिंद सेना, अशा अनेक संघटना, उठाव व चळवळींनी योगदान दिले आहे. स्वातंत्र्य प्राप्तीच्या संघटना, उठाव व चळवळी मध्ये पुरुषांच्या बरोबर अनेक महिलांनी सहभाग नोंदविलेला आहे. या मध्ये झाशीची राणी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, बेगम हजरत महल, विजयालक्ष्मी पंडित, सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायडू, अरुणा असफ अली, डॉ.सुशीला नायर, उषा मेहता, कस्तुरबा गांधी, डॉ.दुर्गाबाई देशमुख, कमला नेहरु, वीणा दास, येसुबाई सावरकर, कल्पना दत्त, कॅप्टन लक्ष्मी सहगल इत्यादी महिलांनी आपला सहभाग नोंदविलेला आहे. या महिलांनी संघटना, उठाव व चळवळीच्या माध्यमातून ब्रिटिश सत्तेच्या विरोधात बंड करून देशवासीयांच्या मनात स्वातंत्र्याची ज्योत पेटवण्याचे कार्य केले. कार्याचे स्वरूप आणि त्यांच्या कार्याचा परिणाम प्रस्तुत करण्याकरिता सदरील संशोधनाची उद्दिष्ट्ये पुढीलप्रमाणे मांडण्यात आली आहेत.

संशोधनाची उद्दिष्ट्ये :

- १) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांच्या सहभागाचे स्वरूप अभ्यासणे.
 - २) स्वातंत्र्याच्या वेगवेगळ्या चळवळीतील महिलांच्या सहभागाचे अध्ययन करणे.
 - ३) स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांच्या कार्याचा आढावा घेणे.
 - ४) स्वातंत्र्य चळवळीतील महिला सहभागाच्या परिणामाचा अभ्यास करणे.
- सदरील संशोधनाकरिता मांडण्यात आलेल्या उद्दिष्ट्यांच्या पूर्तते करिता खालीलप्रमाणे गृहितकृत्यांची मांडणी करण्यात आली.

गृहितके :

- १) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळी मध्ये महिलांचा सहभाग विपुल प्रमाणात होता.
- २) स्वातंत्र्य प्राप्ती च्या चळवळीत महिलांचे कार्य उल्लेखनीय आहे.
- ३) स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांचे कार्य स्वातंत्र्योत्तर काळात महिलांच्या कृतत्वास प्रेरणादायी ठरत आहे.

प्रस्तुत संशोधनाकरिता मांडण्यात आलेल्या गृहितकांच्या पडताळणी करिता पुढील प्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधनाच्या तथ्य संकलनाकरिता द्वितीयक स्रोताचा अवलंब करण्यात आला. या मध्ये प्रकाशित स्रोतामध्ये संदर्भग्रंथ, मासिके, वर्तमान पत्रातील लेख, शासनाचे अहवाल इत्यादीचा वापर करण्यात आला. तर अप्रकाशित स्रोतामध्ये एम.फिल.पीएच.डी चे प्रबंध निम्नशासकीय संस्थेचे अहवाल, इंटरनेट इत्यादीचा वापर करण्यात आला.

सदरील शोध निबंधाच्या मांडणीकरिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक संशोधन आराखडाचा अवलंब करण्यात आला.

विषय प्रतिपादन :

भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत प्रामुख्याने १८५७ चा उठाव, गांधीवादी अंदोलन, क्रांतिकारकांच्या चळवळी, आझाद हिंद सेना इत्यादीचा समावेश झालेला आहे. स्वातंत्र्याच्या चळवळी, उठाव आणि आंदोलनामध्ये सहभाग नोंदविलेल्या महिला, त्यांची कार्ये व त्यांच्या कार्याचे स्वरूप खालीलप्रमाणे नमुद करता येते.

१) भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामातील १८५७ च्या उठावातील महिला :

१८५७ च्या उठावापूर्वीच अनेक संस्थानाच्या स्त्रियांनी ब्रिटिशांच्या राजवटीस विरोध केला. यामध्ये झाशी संस्थानाची राणी लक्ष्मीबाई यांचा समावेश होतो. लॉर्ड डलहौसीने राणी लक्ष्मीबाई यांनी दत्तक घेतलेल्या ५ वर्षांच्या पुत्रास झाशीच्या गादीचा वारस म्हणून मान्यता दिली नाही. तसेच झाशी संस्थानाचे खालसा करण केले. त्यामुळे झाशीची राणी लक्ष्मीबाई खुप संतापल्या तेव्हा राणी

लक्ष्मीबाई यांचे वय फक्त २३ वर्ष होते. राणी लक्ष्मीबाई यांनी ब्रिटिश शासना बरोबर युद्ध केले. या युद्धामध्ये झाशीचे ५ हजार सैनिक मृत्यूमुखी पडले. या युद्धात राणी लक्ष्मीबाई दत्तक पुत्रास पाठीशी बांधुन स्वतः लढली. तीने ब्रिटिश सैन्याच्या मनात दहशत निर्माण केली राणीला पराजयाची जाणीव होताच तीने मध्यरात्रीस घोड्यावरून १०२ मैल पलायन केले. तीच्या कार्याबद्दल वि.दा.सावरकर म्हणतात 'झाशीची राणी ही १८५७ च्या स्फोटातून निर्माण झालेली तेजस्वी ज्वाला होय.' राणी लक्ष्मीबाईची दासी झलकारीबाई ही हुशार व युद्ध कौशल्यात प्रविण होती तीनेच राणी लक्ष्मीबाईला झाशीच्या किल्याबाहेर काढून दिले. व स्वतः राणीचा वेश परिधान करुन ब्रिटिशांबरोबर युद्ध चालू ठेवले. या युद्धात तीचा तोफेचा गोळा लागुण तीचा मृत्यू झाला. अवध संस्थानाची राणी बेगम हजरत महल ही कुशाग्र बुद्धीची राणी होती. तीने स्वतःच्या ११ वर्षांच्या मुलाला लखनौच्या गादीवर बसवून व ती स्वतः राज्य कारभार पाहत होती. ब्रिटिश शासन अवध संस्थानिकाचे खालसाकरण करण्याकरिता युद्धाचा दबाव निर्माण करीत होते. बेगम हजरतने हिंदू-मुस्लीम असा कोणताही भेदभाव न करता, पात्रते प्रमाणे राजकीय उच्च पदे समानतेने वाटली. त्यामुळे हिंदू-मुस्लीम एकात्मता निर्माण झाली. हिंदू मुस्लीम एकत्रीत ब्रिटिशांबरोबर लढले. मैना पेशवे हि ब्रिटिशांच्या विरुद्ध नानासाहेब पेशवे यांच्या बरोबर युद्ध कार्यात सक्रिय सहभाग घेत असे. ती नानासाहेब पेशवे यांना गनिमी काव्याच्या योजना आखण्यात मदत करीत असे. तर कानपूरची अजीजन बेगम ही व्यावसायाने नर्तकी होती. ती क्रांतिकारकाशी संपर्क ठेवून असे ती घोड्यावर स्वार होऊन सैनिकी पोशाख परिधान करुन हाती ती पिस्तुल घेऊन ब्रिटिश छावण्यावर हल्ला करीत असे. तीने अनेक ब्रिटिश महिलांची कत्तल केली.

२) गांधीवादी स्वातंत्र्य चळवळीतील महिला :

१९२० ते १९४७ हा कालखंड स्वातंत्र्य चळवळीतील गांधीवादी युग म्हणून ओळखले जाते. या कालखंडात पंडीत नेहरु यांची बहिण विजया लक्ष्मी पंडीत ह्या गांधीजीच्या विचाराशी समरस होत्या. त्यांच्या देशाच्या राजकारणात व स्वातंत्र्याच्या आंदोलनात सक्रिय सहभाग होता. त्यांनी सविनय कायदेभंगाच्या चळवळीत भाग घेतला. त्यामध्ये त्यांना तुरुंगवासाची शिक्षा झाली. सुचेता कृपलानी ह्या उच्च शिक्षित होत्या. त्यांनी प्राध्यापिकाची नोकरी सोडून गांधीजीच्या सविनय कायदेभंगाच्या चळवळीत सक्रिय सहभाग घेतला. त्यांनी अरुणा असफ अली बरोबर भूमिगत राहून भूमिगत स्वयंसेवक दल स्थापन केले. त्यांना राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलनात सहभाग नोंदविल्याबद्दल अटक झाली. त्या स्वातंत्र्यपूर्व काळात अखिल भारतीय महिला काँग्रेस कमिटीच्या अध्यक्ष होत्या. पंजाबच्या राजकीय सभेत इंग्रज सरकारवर उघडपणे टिका केल्याबद्दल त्यांना तिहार तुरुंगात ठेवण्यात आले. त्यांनी तुरुंगात राजकीय कैद्यांना दिल्या जाणाऱ्या अपमानास्पद वागणूकी विरुद्ध आवाज उठवला. त्याबद्दल त्यांना तुरुंगातच एकांतवासाची शिक्षा झाली.

सरोजिनी नायडू ह्या उच्चशिक्षित होत्या. त्यांचा भारतीय स्वातंत्र्याच्या आंदोलनात सक्रिय सहभाग होता. त्यांनी मिठाचा सत्याग्रह, सविनय कायदेभंगाचे आंदोलन, भारत छोडो चळवळ इत्यादी मध्ये सक्रिय सहभाग घेतला. ब्रिटिश शासनाने त्यांना अटक केली. त्यांचे कार्य स्वातंत्र्य चळवळी पुरतेच मर्यादित नव्हते तर त्या समाज सेवेचे कार्य हि करीत होत्या. त्यांनी हिंदू-मुस्लिम एकात्मता निर्माण करण्याचे कार्य केले. डॉ.सुशिला नायर ह्या मूळ पूर्व पंजाब मधील होय. त्यांनी गांधीजीच्या चळवळीत सक्रिय सहभाग नोंदविला. त्या बदल त्यांना तुरुंगवास हि भोगावा लागला. त्या 'कस्तुरबा गांधी हेल्थ सोसायटी' च्या अध्यक्षा होत्या. कस्तुरबागांधी यांनी गांधीजीच्या असहकार चळवळ आणि विदेशी वस्तुवर बहिष्कार या आंदोलनात सक्रिय सहभाग घेतला. त्यांनी असहकार व विदेशी वस्तुवरील बहिष्काराचे गुजरात व मुंबई प्रांतातील जनतेला महत्त्व पटवून सांगण्याचे कार्य केले. कस्तुरबा गांधी १९४२ च्या लढ्यात सहभागी होवून गोलमेज परिषदेसाठी इंग्लंडला गेल्या होत्या. गांधीजीच्या स्वातंत्र्याच्या विचाराने प्रेरित होवून सविनय कायदेभंग चळवळ, असहकार चळवळी मध्ये अनेक महिलांनी योगदान दिले आहे. यामध्ये पंजाबच्या राजकुमारी कौर, बंगालच्या उर्मिला देवी, उषा मेहता, बेळगावच्या अनुसया काळे, सोलापूरच्या पंडिता सुमती शहा, सातारच्या अर्वांतिका गोखले, डॉ.दुर्गाबाई देशमुख, कमला नेहरु या महिलांनी स्वातंत्र्याच्या संग्रामात विशेष योगदान दिले आहे.

३) स्वातंत्र्य लढ्यातील क्रांतिकारक चळवळीतील महिला :

भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीत क्रांतिकारक पुरुषांचे जसे योगदान आहे. तसेच महिला क्रांतिकारकांचे ही योगदान आहे. यामध्ये कलकत्याच्या विणादास, सुहासिनी गांगुली, ह्या दोघी ही उच्च शिक्षित होत्या. त्यानी गव्हर्नर सर स्टेन्ले जॅक्सन यांच्यावर गोळ्या झाडल्या. त्याबद्दल त्यांना १३ वर्षांचा कारावास झाला. शांती घोष, सुनिता चौधरी, व उज्वला मुजुमदार या तीघींनी माफीचा अर्ज घेऊन जिल्हा मॅजिस्ट्रेट सी.बी.स्टीव्हन्स यांच्या घरी गेल्या. ते अर्ज वाचीत असताना त्यांनी त्यांच्या वर गोळ्या झाडल्या त्याबद्दल त्यांना ८ वर्षे सक्तमजुरीची शिक्षा झाली. बंगालच्या मातांगिनी हाजरा, सुशीला घोष, पारुल मुखर्जी ह्या महिला त्याच बरोबर त्या भूमिगत राहुन ब्रिटिश सरकारच्या विरुद्ध जनजागृती करित होत्या. त्याबद्दल त्यांना ६ वर्षे सक्त मजुरीची शिक्षा झाली.

कलकत्याच्या प्रतिलता वडुवार ह्या धाडसी व क्रांतिकारक महिला होय. या सतत पुरुषाच्या पोशाखात राहत असत. त्यांनी कलकत्ता शहरातील युरोपियन क्लब वर बॉम्ब फेक केली. त्याच बरोबर त्यांनी चितगाव रेल्वे क्लबच्या अधिकाऱ्यावर गोळ्या झाडल्या. त्याबद्दल त्यांना तुरुंगवास भोगावा लागला. सांगली जिल्ह्याच्या राजमती पाटील ह्या प्रतिसरकार चळवळीच्या सदस्य होत्या. त्या भूमिगत राहून क्रांतिकारकांना पिस्तुल चालवण्याचे प्रशिक्षण देत व क्रांतिकारकांना शास्त्रास्त्रे पुरवण्याचे काम करीत. बंगालच्या ज्योतीकिरण दत्त व कल्पना दत्त यांनी क्रांतिकारक संघटनेत सहभाग घेतला. त्यांनी पिस्तुल चालवणे व बॉम्ब तयार करण्याचे प्रशिक्षण घेतले. त्यांच्या मते 'स्वातंत्र्य प्राप्तीसाठी गांधीजींच्या अहिंसेपेक्षा सुसंघटित दहशतवादच उपयोगी पडतो.'

त्यांनी चितगावच्या कलेक्टरला ठार मारण्याचा कट रचला. त्या बद्दल त्यांना जन्मठेपेची शिक्षा झाली. उत्तरप्रदेशच्या दुर्गादेवी बोहरा यमुनादास, नानीबाला मुखर्जी, सावित्री चक्रवर्ती या महिला क्रांतिकारकांच्या चळवळीत सहभागी होवून क्रांतिकारकांना ब्रिटिश शासनाच्या हालचालीची माहिती पुरवणे. बॉम्ब तयार करणे, क्रांतिकारकांना शस्त्रे चालवणे. इत्यादीचे प्रशिक्षण देत असत. तसेच भूमिगत राहून ब्रिटिश अधिकाऱ्यांच्या हत्याचा कट रचणे, त्यांची हत्या करणे अशा कार्यामध्ये या महिलांनी अनमोल कार्य केले.

४) आझाद हिंद सेनेतील महिला :

सुभाषचंद्र बोस यांनी सिंगापूर येथे आझाद हिंद सरकार या सेनेची स्थापना केली. या सेनेचा उद्देश भारताला स्वातंत्र्य मिळवून देणे व परराष्ट्रात असलेल्या भारतीय कैद्यांना सोडवणे हा होता. या करीता ही सेना सैन्यदलाच्या स्वरूपात लढाया करीत असे. या सैन्यदलात कॅप्टन लक्ष्मी सहगल, श्रीमती एम.ए. चिदंबरम, प्रतिमा सेन, बेला मुखर्जी, शकुंतला शहा, गुरुदयाल कौर इत्यादी महिलांनी अंगी धाडस, शौर्य, कठोरता, राष्ट्रभक्ती बाळगून कार्य केले.

मुख्यमापन :

भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्ती करीता स्थळ, काळ व परिस्थितीनुसार वेगवेगळ्या चळवळी संघटना उठव निर्माण झाले. स्वातंत्र्याच्या चळवळीत पुरुषांच्या बरोबरीने महिलांनी ही सहभाग नोंदविला. महिलांनी संघटनेनी सोपवलेली कामे खंबीर राहून धाडसाने, शौर्याने पार पाडली. स्वातंत्र्य संग्रामाची कामे पार पाडीत असताना अनेक महिलांना तुरुंगवास, नजर कैद भोगावी लागली. तर अनेक महिलांचा बळी गेला. स्वातंत्र्य चळवळीतील महिलांचा सहभाग व त्यांची कामे पाहून देशामधील तळागाळातील नागरीकामध्ये देशभक्तीची भावना निर्माण झाली. त्यांना भारतीय स्वातंत्र्याची अस्ता वाटू लागली. ते हि भारतीय स्वातंत्र्याच्या चळवळीत सहभाग घेऊ लागले. त्यामुळे देशात सर्वत्र स्वातंत्र्य प्राप्तीची लाट निर्माण झाली. तेंव्हा ब्रिटिश शासनाला भारतावर राज्य करणे कठीण झाले. याचाच परिणाम म्हणून भारताला १५ ऑगस्ट १९४७ रोजी स्वातंत्र्य मिळाले. भारतीय स्वातंत्र्य प्राप्तीमध्ये पुरुषांच्या बरोबरीने महिलांचा धाडसी सक्रिय सहभाग आहे. हे सत्य नाकारता येत नाही.

संदर्भसूची :

- १) प्रा.एस.एन. गंदेवार 'समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती' विद्याभारती प्रकाशन, लातूर
- २) प्रा.घाटोळे रा.ना. 'सामाजिक शास्त्रातील संशोधनाची तत्त्वे व पध्दती' श्री मंगेश प्रकाशन नागपूर.
- ३) वासंती फडके (अनु.) 'भारतीय स्वातंत्र्यलढयातील स्त्रिया' मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे.
- ४) नंदिता शहा 'स्त्री संघर्षाची नवी रूपे' पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई.
- ५) मेधा नानिबडेकर 'महाराष्ट्रातील स्त्री चळवळीचा मागोवा' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे.
- ६) बालाजी चिरडे 'भारतीय इतिहासातील स्त्रिया' कल्पना प्रकाशन, नांदेड.
- ७) दयमंती पाठक 'भारताच्या स्वातंत्र्य लढयातील वैदभीय महिलांचे योगदान' मंगेश प्रकाशन, नागपूर.
- ८) तारा धर्माधिकारी 'स्वातंत्र्य लढयातील स्त्रिया' क्रांती प्रकाशन मुंबई.
- ९) कांचन सगर 'थोर क्रांतिकारक महिला' अरुणा प्रकाशन, लातूर.
- १०) पुष्पा गोडे 'भारतातील महिला विकासाची वाटचाल' डायमंड पब्लिकेशन, पुणे.

22
ch. A. B

ISSN 2229-4406

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL

RESEARCH ANALYSIS



EDITOR IN CHIEF
Dr. BALAJI KAMBLE

[Signature]
PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Tal. Ambajogai Dist. Nashik

35. A. B. 421324

**IMPACT FACTOR
6.10**

ISSN 2229-4406



URA

*UGC Approved International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects*

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XXIII, Vol. III
Year - XII (Half Yearly)
Sept. 2021 To Feb. 2022

Editorial Office :
'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 9503814000
9637935252 / 7276301000

Website

www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (MS)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya,
Latur, Dist. Latur(M.S.)India.

EXECUTIVE EDITORS

Dr. E. Siva Nagi Reddy
Director, National Institute
of Hospitality & Tourism Management,
Hyderabad (A.P.)

Dr. D. Raja Reddy
Chairman, International Neuro Surgery
Association,
Banjara Hill, Hyderabad (A.P.)

Dr. Rajendra R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldhana

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics,
SKNG Mahavidyalaya
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

Dr. Yu Takamine
Professor, Faculty of Law & Letters,
University of Ryukyus,
Okinawa, (Japan).

Dr. A. H. Jamadar
Chairman, BOS Hindi, SRTMUN &
Head, Dept. of Hindi, BKD
College, Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Shaikh Moynoddin G.
Dept. of Commerce,
Lal Bahadur Shastri College,
Dharmabad, Dist. Nanded(M. S.)

Scott A. Venezia
Director, School of Business,
Ensenada Campus,
California, (U.S.A.)

DEPUTY-EDITOR

Dr. N. G. Mali
Head, Dept. of Geography,
M. B. College,
Latur, Dist. Latur.(M.S.)

Dr. Babasaheb M. Gore
Principal,
Smt. S.D.D.M.College
Latur, Dist. Latur (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. V.J. Vilegave
Head, Dept. of P.A.,
Shri. Guru Buddhiswami College,
Puma, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Omshiva V. Ligade
Head, Dept. of History
Shivjagruti College, Nalegaon,
Dist. Latur. (M.S.)

Dr. S. B. Wadekar
Dept. of Dairy Science,
Adarsh College,
Hingoli, Dist. Hingoli.(M.S.)

Dr. Shivanand M. Giri
Dept. of Marathi,
Bhai Kishanrao Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur.(M.S.)

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	To study the impact of sovereign wealth fund on Indian economy and its challenges and opportunities for India in economic development Dr. Savita V. Nichit	1
2	Comparative Study of Various Existing Video Conferencing Platforms in ACS College Navapur Dist : Nandurbar Dr. Sharad D. Patil	13
3	Voice of Feminism: Jaya in Shashi Deshpande's Novel That Long Silence Dr. A. B. Deshmukh	22
4	Role of physical education and yoga for improving and maintenance of Health and physical fitness Ashok Jayaji Chatse, Dr. Vinod Nagnath Ganacharya	28
5	व्यापारात ई-कॉमर्सची भूमिका आणि प्रभाव डॉ. रिता देशमुख	33
6	नव कृषी तंत्रज्ञान स्वीकारण्याची निर्धारके व कृषीवरील परिणाम संतोष बालाजी पाटील, डॉ. ई. डी. कोरपकवाड	39
7	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार : एक अध्ययन रविकुमार हरिश जसमतिया, डॉ. राजेंद्रकुमार रामराव गव्हाळे	47
8	विश्वपुरुषोत्तम संत एकनाथ महाराज : एक चिंतन डॉ. राजाभाऊ भाऊसाहेब धायगुडे	54
9	ऐतिहासिक कादंबरीचे स्वरूप आणि आकलन डॉ. सुनिल राठोड	58
10	म. गांधी आणि सत्याग्रह डॉ. रजनी अ. बोरोळे	62



3

Voice of Feminism: Jaya in Shashi Deshpande's Novel *That Long Silence*

Dr. A. B. Deshmukhi
Dept. of English,
Vasundhara College,
Ghatnandur, Dist. Beed

Research Paper - English

ABSTRACT

Since the Independence of India, many changes have been occurred in social, Political and Literature. The most important and noteworthy change in Indian English fiction is the emergence of interest in Indian women changing the social milieu through their literary writing in English. Many novelist have attempted to analysis the predicaments of women from various angles. Though the problems of women have been highlighted of all major India writing in English, these problems have formed bulk and core of the creativ output of Indian women novelists writing in English. The contribution wome writers in Indio-Anglian novel have been found appreciable.

"Feminism is the belief In social, and political equality of the sexes (Britannica.com) feminism is largely manifested worldwide and it is represented by various countries and committed to activity on behalf of women's rights and interests. The feminist struggle for liberation is considered like the framework of freedom crisis. Woman born free as man but unfortunately they are bound by much patriarchal society, not only in India but all over the world's countries.

Keywords: inner conflict, unconscious, patriarchy, identity crisis, self-introspection, despair, joy etc.



A free autonomous being like all creatures (a Woman) finds herself living in a world where men compel Her to assume the status of the other. (Simone de Beauvoir)

Shashi Deshpande's *That Long Silence* (1988), is the masterpiece of feminist writing in Indian- Anglofiction, it is an indication of the salience of the modern Indian women. Many women writers have tried to express the long silence but they could only provide the psychological depths to their characters. But Shashi Deshpande's success lies in her representation of real life experience. This novel expresses the voice of feminism through the main protagonist Jaya. It describes the inner conflict of Jaya, the protagonist and her quest for self identity. Deshpande herself says:

And then I wrote *That Long Silence* almost entirely a Women's novel nevertheless, a book about the silencing Of one-half of humanity. A lifetime of introspection went Into this novel, the one closest to me personally: the *Thinking and ideas in this are closest to my own.* (Jain 2000:210)

The novel opens with Jaya and her husband Mohan moving back into the old Dadar flat in Bombay from their cosy and palatial house. Mohan was accused of corrupt practices at office an inquiry against him has set up. Their children have gone out for holiday with their family friends. He expects from Jaya to go into hiding with him; but she refuses to honor his wish. Since Jaya is alone in the small old Dadar flat, she gets ample time for self-introspection. This is why she becomes an introvert and goes into deep contemplation of her past and her childhood. If there had been no such crisis in their life, she would never have given a thought on herself or her individuality. Adele King opines: "Jaya finds her normal routine so disrupted that for the first time she can look at her life and attempt to decide who she really is" (King 1988:77)

She manages successfully to suppress her feeling to suppress her feelings for seventeen years of her married life because she thought it is very important to become good wife rather than good writer. With loyal she played a role of caring mother and wife by hiding her desires, self-actualization and fulfillment. She suppressed not only her carrier but also her association with her neighbor. Kamat. Her career as successful writer

A free autonomous being like all creatures (a Woman) finds herself living in a world where men compel Her to assume the status of the other. (Simone de Beauvoir)

Shashi Deshpande's *That Long Silence* (1988), is the masterpiece of feminist writing in Indian- Anglo-Indian fiction, it is an indication of the salience of the modern Indian women. Many women writers have tried to express the long silence but they could only provide the psychological depths to their characters. But Shashi Deshpande's success lies in her representation of real life experience. This novel expresses the voice of feminism through the main protagonist Jaya. It describes the inner conflict of Jaya, the protagonist and her quest for self identity. Deshpande herself says:

And then I wrote *That Long Silence* almost entirely a Women's novel nevertheless, a book about the silencing Of one-half of humanity. A lifetime of introspection went Into this novel, the one closest to me personally: the *Thinking and ideas in this are closest to my own.* (Jain 2000:210)

The novel opens with Jaya and her husband Mohan moving back into the old Dadar flat in Bombay from their cosy and palatial house. Mohan was accused of corrupt practices at office an inquiry against him has set up. Their children have gone out for holiday with their family friends. He expects from Jaya to go into hiding with him; but she refuses to honor his wish. Since Jaya is alone in the small old Dadar flat, she gets ample time for self-introspection. This is why she becomes an introvert and goes into deep contemplation of her past and her childhood. If there had been no such crisis in their life, she would never have given a thought on herself or her individuality. Adele King opines: "Jaya finds her normal routine so disrupted that for the first time she can look at her life and attempt to decide who she really is" (King 1988:77)

She manages successfully to suppress her feeling to suppress her feelings for seventeen years of her married life because she thought it is very important to become good wife rather than good writer. With loyal she played a role of caring mother and wife by hiding her desires, self-actualization and fulfillment. She suppressed not only her carrier but also her association with her neighbor. Kamat. Her career as successful writer



is endanger since she had married. A short story of her bags the prize and also gets published in a magazine. She was depressed about to get recognition as a creative writer when Mohan expressed his displeasure at a particular story written by her. The story is about a man who cannot reach out to his wife except through her body. Mohan suspects if the man portrayed in the story is not he himself, and is apprehensive lest people should take him for the man in the story. She thinks, “looking at his stricken face, I had been convinced I had done him wrong. And I had stopped writing after that” (144). But Jaya keeps herself writing she begins to write pseudonym, which doesn't help and her stories are rejected one after one. Her neighbor, Kamat, analyses the reason behind the rejections and tells her that her stories are lack of emotions as she has suppressed her anger and frustration. But she cannot express her anger or feelings because it will be destroy her relation with Mohan. She had learnt to control on her anger and emotions, as Mohan considers this trait in a woman as a “unwomanly” (83). She tells Kamat: “Because no woman can be angry. Have you ever heard of an angry young woman?” (147). On this comment Kamat warns her against indulging in self-pity as it would only prove destructive to her. He admonishes her: “I'm warning You-beware of this ‘women are the victims’ theory of yours. This opinion about yourself will drag you down into self-pity. Take yourself seriously, women don't skull behind a false name” (148). Later she begins to write humorous pieces on the travails of a middleclass housewife in a column entitled “Seeta” she not only gets encouraging response from the readers but also a nod of approval from Mohan. Jaya says:

And for me, she had been the means through which I had
Shut the door, firmly, on all those women who had invaded
My being, screaming for attention ; women I had known
I could not write about, because they might – it was just
Possible- resemble Mohan's mother, or aunt, or my
Mother or aunt. (149).

Therefore, she had merely been glossing over the reality or truth, and something her inner conscious to avoid endangering her marriage. She rejects in her work the reflection of her individuality or self to play the role model of typical Indian middle-class woman.



Kamat her neighbor, is competent enough to understand her literary capability and criticizes her for writing such stuff: "You know something I never can imagine you writing this" (149). Adele rightly remarks: "in Jaya's stories they lived happily ever after although she knows the falsity of the view of life" (1990:66).

Jaya's bosom relationship with Kamat,, widower living above her flat , creates relationship between them. As Jaya drawn towards him as he treats her as his equal and offers constructive criticism to Jaya on her writings. Even she sends mail on his address to avoid any confrontation with her husband. He focuses her attention on her writings, as he is the lonely who supports her unconditionally. Unlike other men he does not consider the women are meant for only domestic work. His opinion about women attracts to Jaya , so she opens her all the problems front of him. She likes his attitude to be against wallowing in self-pity and asks her to pursue her literary career by giving expression to her real inner self. Being inspired by his valuable advice, she kept on writing which may be termed as a silent but effective tool of revolt against the patriarchal society giving a new dimension to the Indian feminism. Arati Biswal's views expressed in her article are noteworthy:

She rejects the image of Mohan and herself as "a pair of
Bullocks yoked together". Her awareness of an unjust
System that coerces a woman to play second fiddle: to
Accept the position as an inferior being brings in her sense
Of outrage that ruefully reminds her of rigid rules of
Sanskrit drama that forced women to speak Prakrit, while
Reserving the classical Sanskrit for the superior male
Characters. Jaya refuses to accept such distinction. She
Refuses to concede to Mohan the authority he wielded
Over her earlier (1997: 43)

There are so many reasons that causes the obstacles to fulfill her individuality. In her enthusiasm to play out the role of a loyal wife and caring mother, she forgotten her real self. like other women she has been indoctrinated right from her childhood. She does not protect her name Jaya to Suhasini at her marriage just to keep Mohan happy. Her inner consciousness never accepted change in her name after marriage. In her article



“Feminism vis-a-vis Women’s Dignity: A Study of Shashi Deshpande’s *That Long Silence*”

T. Ashoka Rani remarks

The fact that Jaya was rechristened at Suhasini by her By her husband on their wedding day confuses Jaya in her

Search for identity. The pseudonym, under which she operates As a writer further complicated the issues. Jaya stands for revolt Whereas Suhasini symbolizes submission. Jaya rejects the name Suhasini and its significant as a manifestation of her protest Against such customs. But her sense of identity is never certain She is torn between being Jaya herself and Suhasini, the good wife; Between building a self as a writer and self as wife and mother (1996:20)

Conclusion: by considering the condition of Jaya women is the victims for generations of conditioning in which women is unchangeable slotted. The husband is given role the role of mentor and guide. To serve ones husband is to serve god! Feminine incapability is exaggerated to increase the authority of husband. Simon de Beauvoir says: “Marriage incites man to a capricious imperialism” (Beauvoir 1997:483) among human beings the temptation to dominate on women is universally irresistible and the traditional marriage provides this opportunity to men. In orthodox Indian marriages, it is enough for the husband to be approved and admired. And it affects totally on women’s self realization and she often remains in search of her identity.

References :-

- 1) De Beauvoir, Simone. *The Second Sex*, Trans. And Edit. H.M. Parshley, (New York: Vintage Books, 1974)
- 2) Jain, Jasbir. *Creative Theory: Writers on writing*. Delhi. Pencrafts International, 2000
- 3) King, Adele. “Shashi Deshpande: Portraits of an Indian Woman”. *The New Indian Novel in English: A Study of the 1980s*. Viney Kirpal (ed). New Delhi: Allied, 1990.



- 4) Deshpande, Shashi. That Long Silence. London: Virago Pres Ltd., 1988.
- 5) Biswal, Arati. "Sound of the Silenced: Shashi Deshpande's That Long Silence." Revolution, Vil. 3, No. 1. Pp.39-44.
- 6) Rani, T. Ashoka. 1996. "Feminism Vis-à-vis Women's Dignity: A Study of Shashi Deshpande's That Ling Silence." The Journal of Indian Writing in English. Vol. 24, No. 1. Jan. pp. 17-22
- 7) Beauvoir, Simon de. 1997. The Second Sex. H.M. Parshley. (trans. & ed). London, Vintage


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogar Dist. Beed 431519

2021-22
Deshmukh, P.S.



Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Impact Factor - 7.139 Indexed (SJIF)

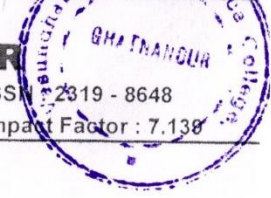
05 Sept. 2021 Special Issue-43 Vol. I

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar


PRINCIPAL
Chetandur

**Index**

1. Role of Digital Media in the Study of Literature Mr.PradipGunderaoKolhe	11
2. Role of Digital Media in the Study of English Literature and Language Mr.Maske Gaurav Rambhau	14
3. An Analysis of Thomas Hardy's Novel 'Far From the Madding Crowd' Dr. Dwijendra Nath Burman	17
4. Rohinton Mistry's Novel <i>Such a Long Journey: A Journey of Hope and Despair</i> Dr Alka Bharatrao Deshmukh	21
5. Impact of Social Media on Libraries Dr. Sunil Ashurba Mutkule	24
6. Censorship and the Right to Free Speech and Expression With Special Reference to the Screen World Dr Manisha Dashrath Sasane	28
7. Caribbean Literature and Culture: An Overview Sanjay Bhagwat Salunke	32
8. Post-colonial Literature and It's Importance Dr.Balasaheb S. Bhosale, Sanjay Bhagwat Salunke	36
9. हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति डॉ कुलकर्णी वनिता बाबूराव	38
10. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में भारतीय संस्कृति का चित्रण प्रा. डॉ. देशपांडे आर.के.	41
11. भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य डॉ गोविन्द पांडव	43
12. कोरोना काल की कविताई डॉ.निम्मी ए.ए	45
13. हिंदी साहित्य और भारतीय संस्कृति	46

Rohinton Mistry's Novel *Such a Long Journey*: A Journey of Hope and Despair

Dr Alka Bharatrao Deshmukh
Vasundhara College, Ghatnandur.

Introduction:

Such a Long Journey is a story of middle class characters in the contemporary India. It deals with basic and serious issues of life. The writer tries to reveal those pathetic and gloomy experiences of the protagonist in the novel who is working as a teller in a bank. Though he has to confront hardships in life, yet he has some dreams about the future of his life.

Gustad Noble is a main protagonist. He is a father of three children, two sons Shorab, Darius and Roshan, the daughter. He lives at Khodadad building with his wife Dilnavaz and three children happily. He has two faithful friends Major Jimmy Bilimoria and Dinshawji who also live in Khodadad building.

Key Words: aspirations, expectations, destruction, demolish, shattered.

Gustad Noble's dreams and aspirations are quite modest; when it does not come true the things are very hard to accept him. Some unusual events take place in Gustad Noble's life. First of all, the sudden disappearance of Major Jimmy Bilimoria from Khodadad building, this incident shocks him because he is his bosom friend, philosopher and guide. Only Dilnavaz can recognize his feelings of pains. Gustad is sorry for whatever Major Bilimoria has done. He comments upon his friends manner:
'To live like this, after being neighbours for so many years, is a shameful way of behaving? Bloody bad manners.'⁹

Another tragic event is Gustad Noble is extremely upset with his son's strange behavior. Shorab breaks his heart when he refuses to enroll himself as an IIT student. Poor Gustad Noble has great expectations for his son Shorab's future prosperity. But his dreams are shattered when Shorab's bad manners and violent – temper spoils the ninth birthday of his dear daughter Roshan, culminating his dissatisfaction of his home. When the celebrations of Roshan's birthday are going on, Gustad wants to know what has happened to Shorab suddenly. Shorab reacts:

'it's not suddenly. I'm sick tired of IIT, IIT, IIT all the time. I am not interested in it, I'm not jolly hood fellow about it and I'm not going there'¹⁰.

Gustad's dream of launching his son as a competent engineer is a lofty one as well as a purely Indian one. Many middle class men like Gustad have such dreams as are often shattered. Commenting upon Gustad Nobel's plight, M.L. Pandit observes:

'Gustad Noble's dreams and expectations are modest indeed, but circumstances prevailing in the India of his times conspire to deny him even these. It is very hard on him that he cannot make things happen in such a way as to fulfill his aspirations. Forces, stranger than himself, come in the way of his achieving his ambitions. His elder son does not join the IIT, Roshan, his favorite child, suffers from a prolonged illness; Dinshawji, his best friend, dies of a cancer; and another friend, Bilimoria, betrays his trust. Gradually, Gustad Noble modifies his dreams and dilutes his expectations. It is quite obvious that he is not in control of things. But this does not make him turn into defeats. In the true oriental way, his triumph consists in the calm manner with which he faces each trial of his life. It lies in his acceptance of the harsh realities of the world to which he belongs. His grandest moment comes towards the end of the novel, which he forgives his erring son, and clasps him to his bosom in a noble gesture of acceptance of Shorab's decision to lead his own life'.¹¹

Gustad Noble has face to problems at every stage of life. For instance, his daughter Roshan suffers from diarrhea, which is a complicated case of prolonged illness. Strongly enough Gustad received a big package from Major Bilimoria. It results into a big trouble from him because hiding ten lakh rupees for an average middle class man is not a child's play. His dear friend Dinshawji falls ill and his eventual death shocks Gustad so much. He is the only male-mourner at the funeral of Dinshawji. The event of the tragic death of Tehmulungra an idiot and retorted child, an inmate of Khodadad Building disturbs Gustad so much. Over and above this the destruction of his 'Scared wall' by the Municipal Authorities adds fuel to the fire. After the fall of the wall he and family are almost in a hell. The protection of his house from external dirt and disturbances has been demolished forever.

Soon Gustad has some conflict with Mr. Rabadi, another inmate of Khodadad Building over the latter's change that Darius has an affair with his daughter. Mr. Rabadi is known as the dogwala in the area of Khodadad Building. Gustad thinks that the dogwala idiot would say anything in connection with his son's affair with his daughter Jasmine. When Darius returns home he wants to know what the matter is. Darius says that he only talks to Jasmine if she is there with his friends. Then Gustad says to Darius:

'Listen, her father is a crackpot. So just stay away. If she is with your friends, you don't join them.'

Thus, Gustad takes care in every possible way to avoid unnecessary confrontation with anyone but very often he is helpless. Eight years ago Gustad saved Sohrab's life at the cost of his hip that got fractures causing him limp. He spends a lot of money on buying almonds to make Sohrab's brainy.

Gradually things proceed towards the climax in the novel. The news regarding the arrest of Major Bilimoria on charges of corruption is published in the newspaper. Dr. Paymaster reports to Gustad about Roshan's prolonged illness. The Doctor thinks that Gustad has modified the prescription at will so the speedy recovery is out of question. Monetary crisis entraps Gustad. He fails to make both ends meet. He is compelled to sell his camera and his wife's two gold marriage bangles. At the same time his precious belongings like his rose plant, the Vinca and Subjo bush are hacked to the ground. His daughter Roshan's big doll in bridal array which she got as the first prize in Annual school Raffle is missing, his prayer for the speedy recovery of both Roshan and Dinshwaji to Mount Marry does not work. Then Gustad visits Delhi to meet his friend Major Bilimoria who tells him everything about his plight. He tells Gustad that the Prime Minister's office is involved in that money scandal. Major Bilimoria is arrested and tortured beyond limit until he has been kept with him. When Gustad sees him bed-ridden, his pitiable condition makes him want to weep. Rohinton Mistry describes Major Bilimoria's plight thus:

On the bed nothing more than a shadow. The shadow
Of the powerfully built army man who once lived in
Khodadad building. His hairline had receded, and sunken
Cheeks made the bones just sharp and grotesque. The
Regal handlebar moustache was no more. His eyes had
Disappeared within their sockets. The neck, what he

Could see of it, was as scrawny as poor behest Dinshwaji's while under the sheet there seemed barely a trace

Those strong shoulders and deep chest which Gustad
And Dilnavaz used to point out as a good example to their

Sons, reminding them always to walk erect, with Chest out and stomach in, like Major Uncle' 13.

Major Bilimoria is imprisoned for four years. He dies of heart attack before the period of his imprisonment is over. His funeral takes place at the Tower of Silence. While Major Bilimoria's funeral is going on, Shorab comes to see his mother. Dilnavaz advises Shorab to talk to his father nicely when he comes back after attending the funeral. At this stage Shorab does not know how his father will react to his return. He confides to his mother:

'It's no use. I spoilt all his dreams, he is not interested in me any more.' 14.

Gustad Noble has seen several ups and downs in his life. Circumstances have remolded him. At this stage he gladly accepts the return of his 'prodigal son' Shorab. Mistry narrates this emotional event thus:

Gustad turned around. He saw his son standing in the
Doorway and each held the other's eyes. Still he sat,
Gazing upon his son, Shorab waited motionless in the
Doorway, till at last Gustad got to his feet slowly. Then
He went up and put his arms around him. "Yes", said
Gustad, running his bloodstained fingers once through
Shorab's hair. "Yes", he said, "Yes", and hugged him
Tightly once more.' 15

Thus, things become somewhat better for Gustad towards the end of the novel. Even the illness of Roshan is effectively cured through magivo-religious rites performed by Mrs. Dilnavaz following the advice of Miss. Kutpitia who is ever ready to help and advise people on matters unexplainable by the laws of nature.

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, Vol. 1
Sept. 2021

Peer Reviewed
SJIF



References:

- 1) Rohinton Mistry . Such A Long Journey. 9,11,to 15
- 2) M.L.Pandit, "Fiction Across Words: Some Writers of Indian Origin in Canada" *The Fiction OF Rohinton Mistry: Critical Studies*, P. 19
- 3) Britannica Encyclopedia Vol. 3. New Delhi: Encyclopedia Britannica (India) Pvt. And Impulse Marketing, 2005
- 4) The Oxford Advanced Learners Dictionary of Current English, 5th Ed. Oxford: OUP, 1997.
- 5) William, Saffron. "Diasporas in Modern Societies: Myth of Homeland and Return". *Diaspora* vol 1-2, 1991

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

July -2021

ISSUE No- (CCXCIX) 299

आधुनिक महाराष्ट्राच्या निर्मितीत यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. D. B. Tanduljekar
IC Principal
Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed

Editor
Dr. Anant Dadarao Markale
Head, Dept. of Hist.
Yeshwantrao Chavan College,
Ambejogai, Dist.- Beed

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publication Amaravati

Website—www.aadharsocial.com—Email—aadharsocial@gmail.com.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
To, Ambajogai, Dist. Beed



B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

July-2021

ISSUE No- (CCXCIX) 299

आधुनिक महाराष्ट्राच्या निर्मितीत
यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान

Prof. Virag.S.Gawande

Chief Editor
Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr. D. B. Tanduljekar

Executive Editors

I/C Principal

Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai, Dist.- Beed

Dr. Anant Dadarao Markale

Editor

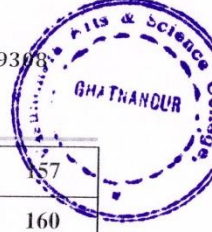
Head, Dept. of Hist.

Yeshwantrao Chavan College, Ambejogai, Dist.- Beed

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



40	यशवंतराव चव्हाण : शैक्षणिक आणि सामाजिक योगदान	प्रा. डॉ. संजय सुरेवाड	157
41	यशवंतराव चव्हाण यांचे शिक्षणविषयक कार्य	प्रा.डॉ. अमोल गंगणे	160
42	आधुनिक महाराष्ट्राच्या निर्मितीत यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान	रमेश गोवर्धन जाधव	163
43	समृद्ध महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक जडणघडणीत यशवंतराव चव्हाण यांच्या योगदानाचा अभ्यास	वैशाली रामकृष्ण सारणीकर / प्राचार्य डॉ. विजय गोरोबा सरपे	165
44	यशवंतराव चव्हाण: एक थोर साहित्यिक	श्री काचगुंडे हनुमंत महादेव / प्रा. डॉ. दिलीप भिसे	168
45	आधुनिक महाराष्ट्राच्या निर्मितीत यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान	परमेश्वर ज्ञानोबा रूपनर	171
46	अष्टपैलू यशवंतराव चव्हाण	श्रीकांत दीनकरराव तांदळे	174
47	Krushnakath: The Inspiring Autobiography of Sensitive Politician Yeshwantrao Chavan.	Dr. M. S. Rajpankhe	178



यशवंतराव चव्हाण यांचे शिक्षणविषयक कार्य
प्रा.डॉ. अमोल गंगणे
इतिहास विभाग, वसुंधरा महाविद्यालय घाटनांदुर, जि. बिड
मो. ९४२०६५२६७८

महाराष्ट्राच्या भवितव्याचा विचार करताना यशवंतराव चव्हाणांनी ज्या घटकांचा जाणिवपूर्वक विचार केला त्यात शिक्षण या विषयाला त्यांनी विशेष महत्व दिले. यशवंतराव चव्हाण यांनी शिक्षणाची एक सरळ आणि साधी व्याख्या केली आहे, यशवंतराव चव्हाण म्हणतात शिक्षित व्यक्तीला स्वतःच्या आजुबाजूला घडणाऱ्या गोष्टी आणि जगात घडणाऱ्या इतर गोष्टी यांची ज्यामुळे काही संगती लावता येते, त्यांचा योग्य अर्थ समजावून घेता येतो आणि त्यांचा परिणाम आपल्या जीवनावर काय घडतो हे समजावून घेता येते आणि समजावून देता येते, त्याला मी शिक्षण मानत आलो आहे. यशवंतराव चव्हाण म्हणतात की, शिक्षण हे सर्वांगीण विकासाचे साधन आहे. आपणाला सर्वांगीण प्रगती साध्य करायची असेल तर देशातील शैक्षणिक संस्था, विद्यापीठे, शासन आणि त्याचे नियोजन करणारे नियोजनकार या सर्वांनी मिळून शैक्षणिक विकासासाठी प्रयत्न केले पाहिजेत आणि ज्यांच्या विकासासाठी करणे आवश्यक आहेत त्यांचा त्यात सहभाग असणे हे देखील तितकेच महत्वाचे आहे.

महाराष्ट्राच्या समाजकारणामध्ये अनेक घटकांच्या माध्यमातून जी क्रांती घडून आली त्यापैकी शिक्षणक्षेत्र हा एक महात्वाचा घटक आहे. महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, पंडिता रमाबाई, महर्षी कर्वे, शाहू महाराज, कर्मवीर भाऊराव पाटील यांनी शिक्षण या क्षेत्रात फारमोठी भरीव कामगिरी केलेली दिसून येते. महाराष्ट्राच्या या शैक्षणिक परंपरेचा वारसा पुढे समर्थपणे चालविण्याचे गौरवशाली कार्य केलेली व्यक्ती म्हणजे यशवंतराव चव्हाण होय. त्यांनी शिक्षणविषयीची तळमळ आपणांस स्वातंत्र्यापूर्वीच दिसून येते. दत्ताजी साळुंखे यांना स्वातंत्र्यापूर्वीच शिक्षणाचे महत्व सांगताना यशवंतराव चव्हाण म्हणतात, “दत्ता उत्तम शिक्षण घेऊन आपल्या देशातल्या लोकांना साक्षर करणे, मोठमोठे शोध लावून देशाचे नाव उज्वल करणे हा देखिल एक प्रकारे स्वातंत्र्यलढाच आहे” २ शिक्षणामुळे देश कसा प्रगत होईल हे डि.सी.शाहा यांच्याशी चर्चा करताना यशवंतराव चव्हाण म्हणतात “ देवचंदभाई या भागात शिक्षणाचा प्रसार करा, विस्तार करा, महाराष्ट्र संस्कृतीच्या वाढीसाठी शाळा, कॉलेज काढा, लोकांना शहाणे करा देशाच्या प्रगतीचा तो खरा मार्ग आहे. जनता शहाणी व सुसंस्कृत झाली तर देश आपोआपच प्रगत होईल तेव्हा तुमच्या कार्याला या भागात खूपच वाव आहे”

आज देशात अनेक क्षेत्रे तरूण-तरूणीच्या कर्तृत्वाचे स्वागत करण्यासाठी सिध्द आहेत. अखंड भारताचे संरक्षण करण्याची व आपणाला मिळालेले स्वातंत्र्य चिटकाल टिकविण्याची जबाबदारी देशातील तरूण वर्गावर आहे. स्वतःचे रक्षण करू न शकणारा देश स्वाभिमानाने व स्वतंत्र कधीच राहू शकत नाही. म्हणून प्रत्येक तरूणाने हे ठरविले पाहिजे की, आपल्या कर्तृत्वाचा उपयोग प्रथम देशाच्या संरक्षणासाठी झाला पाहिजे. आजचा तरूण व सैनिक शिक्षण या वरती देखील यशवंतराव चव्हाण यांनी आपले मत प्रतिपादन केलेले दिसून येते. सैन्य हा जीवनाचा एक आवश्यक भाग झाला तरच एवढ्या विशाल देशाचे संरक्षण होऊ शकेल. म्हणून ते म्हणतात, आम्ही शत्रुमध्ये धडली भरविणारी सामर्थ्य संपन्न आधुनिक सेना निर्माण करित आहोत. देशात तरूण वर्गाला महाविद्यालयीन जीवनापासून सैनिकी शिक्षणाचे प्रशिक्षण मिळावे म्हणून भारत



सरकारने १५ ऑगस्ट १९६३ पासून एन.सी.सी. चे शिक्षण देण्यास सुरवात केली आहे. कारण देशासंरक्षणाच्या शिक्षणाशिवाय विद्यार्थ्यांचे शिक्षण अपूर्ण आहे म्हणून यशवंतराव चव्हाण महत्त्व की, प्रत्येक विद्यार्थ्यांनी स्वतःहून एन.सी.सी.च्या शिक्षण घेण्यासाठी पुढे आले पाहिजे. त्यांच्या मते, एन.सी.सी.च्या शिक्षणामुळे तरुणांमध्ये चारित्र्य, बंधुभाव, देशप्रेम, त्यागवृत्ती, सेवावृत्ती इ. गुणांची जोपासना व वाढ होते.

यशवंतराव चव्हाण यांना तळमळीने वाटत की, शालेय जीवनात विद्यार्थ्यांनी आपले लक्ष वैज्ञानिक विषयांकडे दवून त्यांचा अभ्यास केला पाहिजे शास्त्रीय ज्ञानाचा आधार घेतल्याशिवाय आपल्याला आपला विकास साध्य करता येणार नाही. यासाठी शास्त्रीय ज्ञान घेण्याची सामान्य माणसामध्ये कुवत निर्माण होणे गरजेचे आहे. ही कुवत निर्माण करायची असेल तर लोक साक्षर होणे गरजेचे आहे. म्हणून यशवंतराव चव्हाण म्हणतात की, देशातील सर्व स्तरातील नागरिकांना प्राथमिक शिक्षण मोफत देणे आवश्यक आहे. कारण प्राथमिक शिक्षणाच्या प्रसाराशिवाय लोकशाही समाजाची कल्पनाही आपणास करता येणार नाही. सामान्य लोकांनी प्राथमिक शिक्षण घेतलेतर त्यातून लोकशाही शक्तीचा अविष्कार प्रभावीपणे हाऊ शकतो. प्राथमिक शिक्षण हे तळागाळातील व सर्वदूर पसरलेल्या ग्रामिण भागातील पिढ्यानपिढया शिक्षणापासून वंचित राहिलेल्या बहुजन समाजाला उपलब्ध करून देता आला तरच भारतीय लोकशाहीची पाळेमुळे खोलवर रूजतील अशी यशवंतराव चव्हाणांची प्रामाणिक धारणा होती. यशवंतरावांनी एका ठिकाणी केलेल्या भाषणात म्हणाले होते की, शिक्षण प्रसार ही प्रौढ मतदान पध्दत हा लोकशाही राज्यकारभाराचा पाया आहे. म्हणून आपल्या लोकशाहीची मुळे खोलवर रूजविण्याच्या दृष्टीने प्राथमिक शिक्षणाच्या प्रसारास राजकीय महत्त्व देखील आहे. प्राथमिक शिक्षणावरोबर त्यांनी माध्यमिक शिक्षणाच्या विकासासाठी प्रयत्न केले. माध्यमिक शिक्षणामध्ये सुसुत्रता निर्माण व्हावी यासाठी त्यांनी 'महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक शिक्षण मंडळाची' स्थापना केली. शिक्षणाचे माध्यम मराठी करून त्यांनी उच्च शिक्षण देखील सर्वांसाठी खुले केले उच्च शिक्षणाची संधी समाजातील सर्व थरातील लोकांना मिळवून द्यायची असेत तर ते शिक्षण मातृभाषेतून द्यावे लागेल असे त्यांचे मत होते. शिक्षण जर आम्हाला खालच्या स्तरापर्यंत जाणार नाही. ज्ञानप्राप्तीची भाषा व लोकांची भाषा एकच असली तरच त्या ज्ञानाचा आपल्या जीवनात उपयोग करून घेता येईल. अन्यथा बहुसंख्या समाज शिक्षणापासून वंचित राहिल. महाराष्ट्रातील विद्यापीठांनी उच्च शिक्षणाचे माध्यम म्हणून मराठीचा अवलंब करण्याच्या दृष्टीने पावले उचललीत, अशी अपेक्षा त्यांनी व्यक्त केली. यशवंतराव सतत म्हणत, हिंदूस्थानमध्ये सामाजिक परिवर्तन झाले नाही याचे मुख्य कारण म्हणजे लोकभाषा व ज्ञानभाषा या वेगवेगळ्या होत्या. यामुळे ठराविक वर्गाचे सांस्कृतिक जीवनामध्ये वर्चस्व निर्माण झाले. म्हणून स्वातंत्र्यानंतर असे होऊ नये म्हणून यशवंतराव म्हणतात की, 'उच्च शिक्षण' हे संस्कृतीचे प्रवेशद्वार आहे. पण या प्रवेशद्वाराची किल्ली मात्र आता विज्ञानाच्या हातात गेली आहे. म्हणून निरनिराळ्या शास्त्रांचे ज्ञान मराठीत आले पाहिजे संशोधनाच्या क्षेत्रात नवे विचार आणण्याचा प्रयत्न करणारी माणसे जशी निर्माण होतील तशी भाषा वाढत जाईल. थोडक्यात सर्वांगीण विकासाच्या कार्यातून भाषा विकसीत होते आणि भाषेच्या विकासातून सांस्कृतिक संपन्नता वाढते. या सर्व गोष्टींचे संक्रमण आणि संवर्धन उच्च शिक्षणातून व्हायला हवे.

यशवंतराव चव्हाण यांनी महाराष्ट्राच्या सर्वांगीण विकासासाठी त्यांनी दाखविलेली दुरदृष्टी आणि घेतले अचुक निर्णय यातूनच आजचा प्रगत शील महाराष्ट्र घडला आहे. यशवंतराव चव्हाण साहेबांच्या उतुंग व्यक्तीमत्वाचे अनेक पैलू आपणास सांगता येतील. महाराष्ट्राच्या भवितव्याचा विचार करताना यशवंतराव चव्हाणांनी ज्या घटकांचा जाणिवपूर्वक विचार कला त्यात शिक्षण या विषयाला त्यांनी विशेष महत्त्व दिले होते. आपल्या मुख्यमंत्री पदाच्या कार्यकाळात शिक्षणाच्या



संदर्भात त्यांनी अनेक महत्वाचे निर्णय घेतले. प्रौढ शिक्षणाची व्याप्ती वाढविली, शैक्षणिक प्रसारासाठी अर्थसंकल्पात अनुदानाची व्यवस्था केली. संपूर्ण महाराष्ट्रात शिक्षणाचा प्रसार व्हावा यासाठी शाळा, महाविद्यालये, विद्यापीठे, कृषी विद्यापीठे इ. संस्था स्थापन करण्यास प्रयत्न केले. त्यांना सतत वाटत महाराष्ट्राची औद्योगिक प्रगती करण्याचा, शेतीचे औद्योगीकरण करण्याचा कार्यक्रम जितका महत्वाचा आहे. तितकाच शिक्षणाच्या प्रसाराचा कार्यक्रम जितका महत्वाचा आहे. तितकाच शिक्षणाच्या प्रसाराचा कार्यक्रमही महत्वाचा आहे.

यशवंतराव चव्हाण यांचा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च, व्यावसायिक या सर्व प्रकारांच्या शिक्षणाची व्यवस्था निर्माण करण्याचा प्रामाणिक प्रयत्न दिसून येतो. प्रत्येक स्तराच्या घटकापर्यंत शिक्षण पोहोचवण्यासाठी इंग्रजी, हिंदी भाषेतून तसेच मातृभाषा म्हणजे मराठी भाषेचा आग्रह फार मोलाचा ठरतो. गरीबातल्या गरीब विद्यार्थ्यांपर्यंत शिक्षण पोहोचवण्यासाठी त्यांनी मोफत शिक्षण व शिष्यवृत्ती देण्याची व्यवस्था निर्माण केली. आजचा जो शिक्षित महाराष्ट्र आपणास दिसतो त्याचे फार मोठे श्रेय मा. यशवंतराव चव्हाण यांना द्यावेच लागेल. ते संरक्षणमंत्री, गृहमंत्री, अर्थमंत्री, परराष्ट्रमंत्री बनलेले परंतु शिक्षणमंत्री होऊन महाराष्ट्रातील, भारतातील जनतेची सेवा करता आली नाही याची सल त्यांना कायम राहिली. एकंदरीत त्यांच्या कार्याचा विचार करता ते समाजाभिमुख शिक्षण देणारे रयतेचे राजे होते हे आपणास ठामपणे म्हणता येईल. शिक्षण हा यशवंतराव चव्हाण यांचा अत्यंत जिवाळयाचा विषय होता. इ. बी. सी. ची सवलत लागू करते वेळी मंत्रीमंडळाच्या बैठकीत यशवंतराव एकाकी पडले होते. पण त्यांनी अतिशय कठोर भूमिका घेतली व म्हणाले की हा निर्णय मंत्रीमंडळात जर होणार नसेल तर मला मुख्यमंत्र्यांच्या खुर्चीवर राहण्यास कसल्यास प्रकारचे स्वारस्य नाही. एवढेच नव्हे तर या निर्णयामुळे महाराष्ट्राचे दिवाळे निघून जर बहुजनंना शिक्षणाची संधी मिळणार असेल तर तो निर्णय घेतल्याच पाहिजे अशी ठाम भूमिका त्यांनी घेतली. उच्च व तंत्राशिक्षणातही प्रगती झाल्याशिवाय कुशल मनुष्यवळ तयार होणार नाही. यासाठी वेगवेगळ्या पातळीवर शैक्षणिक संस्था स्थापन केल्या एवढेच नव्हे तर शैक्षणिक कार्यात जो कोणी पुढाकार घेईल त्याला सर्वांगीन मदत करण्याची भूमिका त्यांनी घेतलेली दिसून येते. थोडक्यात पिढ्यानपिढ्या अंधारात खितपत पडलेल्या समाजाला प्रकाश देण्याचे काम यशवंतराव चव्हाण यांनी केले. त्यामुळे खऱ्या अर्थाने शिक्षणापासून वंचित असलेला समाज शिक्षणाच्या प्रवाहात आला. याचे पुर्ण श्रेय स्व. यशवंतराव चव्हाण साहेबांनाच द्यावे लोगते.

संदर्भसूची :-

१. प्राचार्य डॉ. अशोक खैरनार, प्रा. कांतीलाल सोनवणे, डॉ. सुभाकर जाधव, महाराष्ट्राच्या विकासात यशवंतराव चव्हाणांची भूमिका व कार्य, अथर्व पब्लिकेशन्स धुळे, प्रथमावृत्ती ९ मार्च २०१३, पृष्ठ ६१.
२. डॉ. सरोजिनी बाबर (संपादिका), मी पाहिलेले यशवंतराव, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ मुंबई, दुसरी आवृत्ती ऑगस्ट २००७.
३. यशवंतराव चव्हाण, भूमिका, रोहण प्रकाशन पुणे, नविन डिलक्स आवृत्ती १२ मार्च २०१३.
४. डॉ. प्रकाश दुळळे, यशवंतराव चव्हाण माणूस आणि लेखक, ग्रंथाली प्रकाशन दादर मुंबई, पहिली आवृत्ती १२ मार्च २०१२.
५. प्रा. के. जी कदम, आधुनिक महाराष्ट्र के शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान मुंबई, प्रथम आवृत्ती ९ मे २०१३.

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Deed 431519



समाज सुधारक छत्रपति शाहू महाराज

डॉ. अमोल गंगणे

वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, तेहसील अंबाजोगाई, जि. बीड, महाराष्ट्र राज्य, ४३१५१९.

सोपवारा:

छत्रपति शाहू महाराज भारत में एक सच्चे लोकतंत्रवादी और समाज सुधारक के रूप में जाने जाते थे। वह आज भी कोल्हापुर के इतिहास में एक अमूल्य रत्न के रूप में प्रसिद्ध हैं। छत्रपति शाहू महाराज एक ऐसे व्यक्ति थे जो राजा होते हुए भी शोषित और शोषित वर्ग की पीड़ा को समझते थे और हमेशा उनके करीब रहते थे। उन्होंने दलित बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने की प्रक्रिया शुरू की थी। गरीब छात्रों के लिए छात्रावास की स्थापना की और बाहरी छात्रों को आश्रय प्रदान करने का आदेश दिया। शाहू महाराज के शासन के दौरान, 'बाल विवाह' पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया था। उन्होंने डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर को उनकी शिक्षा के साथ-साथ मूकनायक अखबार के लिए भी सहायता प्रदान की गई थी। उन्होंने चित्रकार अबलाल रहमान जैसे कलाकारों को शाही संरक्षण देकर प्रोत्साहित किया। छत्रपति शाहू महाराज एक प्रमुख समाज सुधारक थे। शाहू महाराज को बहुजनों का मुक्तिदाता कहा जाता है। बहुजन समाज के सभी मानदंडों, रीति-रिवाजों और परंपराओं को दरकिनार करते हुए, शाहू महाराजजी ने समाज के समग्र विकास के लिए अथक प्रयास किया। उनके अनेकों कार्यों पर प्रकाश डम शोध से किया गया है।

परिचय:

छत्रपति राजर्षि शाहू महाराज एक महान शासक और एक महान समाज सुधारक के रूप में समाज में पूजनीय हैं। उनका चरित्र न केवल एक ऐतिहासिक व्यक्ति है बल्कि एक ऐसा चरित्र भी है जिसे हर किसी को किसी भी समय आदर्श माना जाना चाहिए। छत्रपति शाहू महाराजने उस समय के समाज की कई अवांछनीय रूढ़ियों पर आधुनिक और गहन सोच का कोप लेकर समाज में कई सकारात्मक बदलाव किए। यह स्वीकार करते हुए कि यदि समाज को सुधारना है, तो उन्होंने प्राथमिक और उच्च शिक्षा के लिए सुविधाओं का निर्माण करना शुरू कर दिया। छत्रपति शाहू महाराजको रायता का राजा लोकराज कहा जाता था। उनका समाजके प्रति शोषित, पिढीत, महिलाओं पर उपकार है। लोगों के मन में हर जगह शासक का भय देखा जाता है लेकिन साथ ही लोगों का प्यार, स्नेह और विश्वास अर्जित करने वाला शासक दुर्लभ होता है।

शिक्षा के विचार और आरक्षण की व्यवस्था:

शाहू महाराज ने अथरपगड जातियों को आरक्षण देकर मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया। इसके बाद डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने इस आरक्षण को संवैधानिक संरक्षण दिया। महाराज सरकार का आदेश है कि इस आदेश की प्राप्ति की तिथि से 50 प्रतिशत रिक्तियों को पिछड़े लोगों से भरा जाए। यदि कार्यालय में पिछड़े वर्ग के अधिकारियों की संख्या वर्तमान में 50% से कम है तो अगली नियुक्ति इस चरित्र के व्यक्ति द्वारा की जानी चाहिए। इस आदेश के प्रकाशन के बाद की गई सभी नियुक्तियों की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रत्येक विभाग के प्रमुख को भेजी जाए। 1894 में जब ताज पहनाया गया तब शाहू महाराज मुश्किल से 20 वर्ष के थे। अगले 28 वर्षों तक, जब तक उनका निधन नहीं हुआ, उन्होंने कानून में लिखा और पिछड़े वर्गों और महिलाओं के लिए शिक्षा, उद्योग और श्रम से लेकर विविध क्षेत्रों में कई सुधारों को लागू किया। कृषि, अर्थव्यवस्था और बाजार, सिंचाई और बांध, अन्य। उनमें से किसी एक के साथ उनकी पहचान करना कठिन और अनुचित होगा, लेकिन यदि आवश्यक हो, तो उन्हें शैक्षणिक संस्थानों और नौकरियों में समाज के कमजोर वर्गों के लिए आरक्षण के अग्रदूत के रूप में होना होगा। हालांकि, युवाओं के लिए अध्ययन करना आसान नहीं था-खासकर महिलाओं के लिए - प्रचलित दृष्टिकोण या वित्त की कमी को देखते हुए। इसलिए, छात्रवृत्तियां स्थापित की गईं और छात्रों के लिए सामुदायिक आधार पर छात्रावास खोले गए। जैसे-जैसे शिक्षा के द्वार खुले, पीढ़ियों को लाभ हुआ। जैसा कि वे कहते हैं, कोल्हापुर में, वास्तव में पश्चिमी महाराष्ट्र में, एक भी पिछड़ा वर्ग परिवार नहीं है जिसका जीवन शाहू महाराज के सुधारों से अछूता हो।


PRINCIPAL

प्रथा और शाहू महाराजजी का कार्य:

राजर्षि शाहू महाराजजीने अपने राज्य में गैर-ब्राह्मण आंदोलन का नेतृत्व किया और बावामाहेव अम्बेडकर को समर्थन प्रदान किया। उन्हें एक सच्चा लोकतांत्रिक और समाज सुधारक माना जाता था। उनके कई सुधारों में कोल्हापुर राज्य में आरक्षण की व्यवस्था क्रांतिकारी मानी जाती है। उन्होंने जाति के बावजूद सभी के लिए अनिवार्य शिक्षा मुफ्त कर दी। उन्होंने जाति व्यवस्था के तीन प्रतिबंधों पर निशाना साधा। वह नियमित रूप से तथाकथित निचली जातियों द्वारा बनाया गया खाना खाते थे। उन्होंने अपने राज्य में अंतर्जातीय विवाह के खिलाफ कानूनों को समाप्त कर दिया। उन्होंने 22 फरवरी 1918 को 'बलूतेदारी प्रथा' को भी समाप्त कर दिया, जिससे किसी भी जाति द्वारा सामाजिक दासता को समाप्त करने वाले किसी भी कार्य को करने की अनुमति प्रदान की गई।

राजर्षि शाहू महाराजद्वारा कृषि में सुधार:

राजर्षि शाहू महाराज ने किसानों की स्थिति में सुधार के लिए स्थायी उपाय किए। 1902 के सूखे के दौरान, उन्होंने किसान समुदाय की कठिनाई को पहचाना और कृषि गतिविधियों में समस्याओं को हल करने के लिए ईमानदार प्रयास किए। उन्होंने उसी वर्ष "बड़े पैमाने पर सिंचाई नीति" पेश की। इस नीति के लिए उन्होंने सिंचाई अधिकारियों को नियुक्त किया जिन्होंने अपने प्रांत के हर गांव की जांच की और सूखे की स्थिति की गंभीरता के अनुसार गांवों के लिए सिंचाई निधि की व्यवस्था की। उन्होंने सिंचाई की समस्याओं के समाधान के लिए कोल्हापुर शहर में 18 फरवरी, 1907 को राधानगरी बांध के निर्माण की भी पहल की। यह परियोजना 1935 में पूरी हुई थी। बांध छत्रपति शाहू के अपने विषयों के कल्याण के प्रति दृष्टिकोण का प्रमाण है और कोल्हापुर को पानी में आत्मनिर्भर बना दिया है। उन्होंने न केवल किसानों को सिंचाई उपलब्ध कराने के प्रयास किए, बल्कि तकनीकी उपकरण खरीदने के इच्छुक किसानों के लिए भी ऋण सुलभ कराया। उन्होंने किसानों को उनकी फसल की उपज और विभिन्न कृषि विधियों को बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक सिखाने के लिए किंग एडवर्ड कृषि संस्थान की भी स्थापना की। उन्होंने कई परियोजनाएं शुरू कीं जो उनके राज्य के नागरिकों को आत्मनिर्भर व्यवसाय विकसित करने में सक्षम बनाती हैं जैसे कि शाहू छत्रपति स्पिनगि एंड वीविंग मिल, किसानों के लिए समर्पित बाजार और किसानों के लिए सहकारी समिति ताकि व्यापार में बिचौलियों की भागीदारी को समाप्त किया जा सके। उन्होंने हमेशा अपने विषय के लिए बुद्धि और विकास का माहौल बनाने का प्रयास किया।

महिलाओं के प्रति कार्य:

फुले से प्रेरित होकर, शाहू महाराज ने लड़कियों और महिलाओं के लिए स्कूलों की अवधारणा पर विस्तार किया और उन्हें हर अवसर पर महिलाओं को शिक्षित करने की आवश्यकता पर बात की, जैसा कि उनके जीवनी लेखक बताते हैं। वह जानता था कि एक रूढ़िवादी समाज को इस तरह की बातचीत और सार्वजनिक प्रवचन की जरूरत है। महिलाओं की शिक्षा उनके विवाह से टकराती है क्योंकि लड़कियों की शादी यौवन पर या उससे पहले कर दी जाती है। शाहू महाराज ने अनुनय-विनय के माध्यम से बाल विवाह को रोकने का प्रयास किया। जब औपनिवेशिक सरकार ने सहमति युग विधेयक पेश किया, तो उन्होंने इसका समर्थन किया, हालांकि उस समय के रूढ़िवादियों जैसे बाल गंगाधर तिलक ने इसका कड़ा विरोध किया। दूरगामी प्रभावों को देखते हुए दो अन्य पहलों का उल्लेख किया जाना चाहिए। 1917 में शाहू महाराज ने विधवा पुनर्विवाह को वैध कर दिया, जिसका उद्भव जाति के हिंदुओं के भारी विरोध के साथ स्वागत किया गया। तीन साल बाद, उन्होंने देवदामी प्रणाली पर प्रतिबंध लगाने वाला एक कानून पेश किया, जो इस क्षेत्र में व्यापक रूप से प्रचलित था, जिसमें युवा लड़कियों को भगवान या मंदिरों में पारंपरिक रूप से चढ़ाया जाता था, जिससे उनका यौन शोषण और मानसिक उत्पीड़न होता था। देवदामी प्रथा अभी तक इतिहास नहीं है, लेकिन इसका श्रेय उन्होंने एक सदी पहले इसके खिलाफ कानून बनाया था।

निष्कर्ष:

राजर्षि शाहू महाराज की नीतियां समाज में सभी प्रकार के परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण थीं। शाहू महाराज द्वारा किए गए शानदार काम पर फिर से गौर करने लायक है, खासकर अब, जब दलितों और पिछड़े वर्गों के खिलाफ क्रूर बर्बरता की कहानियां प्रचलित हैं। कुलीन वर्ग के लोगों की दृष्टि में बाइक चलाने या खाने के लिए दलितों पर हमला किया गया या मार डाला जाता है। दलित महिलाओं के साथ बलात्कार और अत्याचार नियमित रूप से होते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार, एमसी आवादी के आधे से थोड़ा अधिक वाले नौ राज्यों में 2019 में



अत्याचार के 84% मामले दर्ज किए गए। ऐसे समय में जब जाति वर्चस्व और धार्मिक असहिष्णुता ने भारत के विचारों को विकृत कर दिया है, जब सत्ता का इस्तेमाल सांप्रदायिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए किया जा रहा है, उनकी विरासत आगे का रास्ता रोशन करती है। अगले मई में उनकी मृत्यु के लिए एक शताब्दी होगी, लेकिन छत्रपति शाहू महाराज की प्रासंगिकता कम नहीं होती है, क्योंकि भारत में सामाजिक समानता एक अधूरी परियोजना है। उनके विचारों को अभी अमल में लाना जरूरी है।

संदर्भ सूची:

1. <https://www.newsclick.in/shahu-maharaj-why-he-matters-today-much-century-ago>
2. "Prabodhan Monthly Magazine (Marathi)." (1926), 64.
3. P.B. Salunke (Ed), chhatrapati Shahu the pillar of social democracy.
4. Pawar, J., ed. (2001). Rajashree Shahu Smarak Granth. Maharashtra Academy of History, Kolhapur.
5. Shahu Chhatrapati by Keer Dhananjay.
6. राजरूपि छत्रपति शाहू जी महाराज एक सिंहावलोकन पेपरबैक – इनके द्वारा Dr Vipin Kumar Singh.

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519

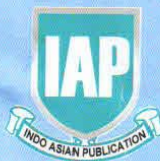
ISSN 2393-8412

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for Social Sciences

INDO ASIAN SOCIAL SCIENCE RESEARCH JOURNAL

(UGC Approved, Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

Year-VIII, Issue - XVI, Vol.-I Impact Factor 6.10 Feb. 2022 To July 2022
(GRIFI)



EDITOR IN CHIEF

DR. JAIDEEP R. SOLUNKE

**INDEX**

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Integration of Technology and Transformation of Education Dr. Madhuri Isave	1
2	Spatial Patterns of Urbanization in Solapur District (Maharashtra) Dr. Jaideep R. Solunke	7
3	Parental Attitude and Involvement in children's Education Archana Kundlikrao Chavare	16
4	India in the Post Cold War World Order Dr. G. N. Sonawane	20
5	A Study of Body Composition, Body type and selected Motor Abilities of Female Gymnasts in relation to their Performance Dr. Alok Kumar Pandey	28
6	Is Exercise is wise for Healthy Life Dr. Santosh M. Dandyagol	34
7	Spiritual values of Yoga Dr. Jyoti A. Upadhye	37
8	Study of effect on Physical Fitness and Physiological Factors of Kho-Kho Players Dr. Umesh Rathi	40
9	Comparative study of Anxiety among sports Person and non sports Person Dr. R. Y. Deshmukh	45
10	Yoga For Energy Dr. Kalavati Poti	49
11	ग्रामीण विकासात महिलांचे योगदान डॉ. अर्जून मोहनराव मोरे	52
12	पोटाचे आरोग्य - आहार व योग अभ्यास डॉ. पी. एल. कराड	55
13	भारतीय लोकशाही समोरली आव्हाने डॉ. जे.टी. कांबळे	62

ग्रामीण विकासात महिलांचे योगदान

डॉ. अर्जून मोहनराव मोरे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख,
वसुंधरा महाविद्यालय,
घाटनांदूर, जि. बीड

प्रस्तावना :

भारत हा कृषि प्रधान असून खेडयांचा देश आहे. देशाच्या एकूण लोकसंख्या पैकी 76% लोकसंख्या ग्रामीण भागात वास्तव्य करते. अशा विशाल स्वरूपात ग्रामीण भागात वास्तव्य करणाऱ्या लोकांचा सर्वांगीन विकास करण्याकरिता केंद्र व राज्यशासन यांनी वेगवेगळ्या विकासात्मक लोककल्याणकारी योजना मुळे ग्रामीण विकासाला दिशा मिळाली आहे. परंतु शासनाच्या योजनाच विकास प्रक्रियेला पुरेशा नसतात. कारण विकास ही अखंड चालणारी प्रक्रिया आहे. विकासाची अखंड चालणारी प्रक्रिया परिपूर्ण करण्याकरिता मानवाच्या कार्याची ही आवश्यकता असते. शासनाच्या योजना आणि मानवाचे कार्य यांच्या संयोगातून विकास प्रक्रियेला गती प्राप्त होते. विकासाच्या संकल्पनेत देशाची अथवा समाजाची सर्वांगीन प्रगती अभिप्रेत असते. विकासाच्या प्रक्रियेत आर्थिक आणि सामाजिक घटकांच्या व्यवस्थेत परिवर्तन होते. या विकास प्रक्रियेचा केंद्र बिंदू मानव आहे. विकास मानवी समाजाचे एक ध्येय व उद्दिष्ट आहे. विकास या संकल्पनेत केवळ प्रगती किंवा आर्थिक वृद्धी एवढेच अभिप्रेत नाही. तर मानवाच्या सामाजिक, आर्थिक, राजकीय आणि सांस्कृतिक बाबींचा विकास समाविष्ट आहे. ग्रामीण विकास हा लोकांच्या एका विशिष्ट समुहाच्या आर्थिक किंवा सामाजिक सुधारणा आणण्यासाठी स्विकारलेली व्युहरचना आहे.

ग्रामीण विकास प्रक्रियेत महिलांचा सहभाग मोठ्या प्रमाणात आहे. महिला आर्थिक विकासामध्ये लघुउद्योग, कुटीर उद्योग, व्यापार, शेतीपूरक व्यवसाय, बचतगट इत्यादीच्या माध्यमातून आर्थिक विकास करीत आहेत. पंचायतराज व्यवस्थेच्या माध्यमातून महिला स्थानिक स्वराज्य संस्थेच्या विविध राजकीय पदावर विराजमान होवून समाजाचे नेतृत्व करीत आहेत. महिला नेतृत्वाच्या माध्यमातून ग्रामीण भागात शासनाच्या विविध योजनावर, राबवून आर्थिक व भौतिक सुविधा निर्माण करीत आहेत. आज ग्रामीण महिला शिक्षण, वित्तीय संस्था, तांत्रिक शेती, शेतीपूरक व्यवसाय इत्यादीच्या माध्यमातून ग्रामीण विकासाला गती देत आहेत. ग्रामीण विकासात महिलांचे कार्य, कार्याचे स्वरूप, कार्यकरताना येणाऱ्या समस्या इत्यादी घटकांचे अध्ययन करण्याकरिता पुढीलप्रमाणे संशोधनाच्या उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- 1) ग्रामीण विकासाचे स्वरूप अभ्यासणे.
- 2) ग्रामीण विकासातील महिलांच्या कार्याचा अभ्यास करणे.
- 3) ग्रामीण विकासात महिला राबवित असलेल्या योजनांचा आढावा घेणे.
सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्तते करिता खालीलप्रमाणे गृहितकांची मांडणी करण्यात आली आहे.

गृहितके :

- 1) ग्रामीण विकासात महिला प्रमुख घटक आहेत.
- 2) ग्रामीण विकासाला महिला नेतृत्वाने गती दिली.
- 3) महिलांना विकास प्रक्रियात अनेक समस्यांना सामोरे जावे लागत आहे.
प्रस्तुत गृहितकांच्या पडताळणी करिता खालील प्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पध्दती :

सदरील शोध निबंधाच्या तथ्य संकलना करिता द्वितीयक स्रोतातील प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतांचा अवलंब करण्यात आला आहे. प्रकाशित स्रोतांमध्ये संदर्भग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, मासिके, वर्तमान पत्रे, वार्षिक अंक इत्यादींचा वापर करण्यात आला. तर अप्रकाशित स्रोतांमध्ये एम.फिल., पीएच.डी चे प्रबंध शासकीय व निम्नशासकीय संस्थांचे अप्रकाशित अहवाल. इंटरनेट इत्यादींचा वापर करण्यात आला आहे. प्रस्तुत शोध निबंधाच्या मांडणीकरिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला.

विषय प्रतिपादन :

आधुनिक काळात महिला सर्वच क्षेत्रात पुरुषांच्या बरोबरीने आपले कृतत्व सिध्द करित आहेत. ग्रामीण विकासाच्या प्रक्रियेत ही महिलांनी आपल्या कार्याचा विशेष प्रभाव निर्माण केला आहे. त्यांचे कार्य आणि कार्याचे स्वरूप पुढीलप्रमाणे नमुद करता येते.

सामाजिक विकासात महिलांची भूमिका :

ग्रामीण भागातील महिला राष्ट्रीय कार्यक्रम, जयंती, पुण्यतिथी चे आयोजन करून ते साजरे करतात. धार्मिक सण, उत्सवाचे आयोजन व नियोजन करित आहेत. तसेच गावात अंधश्रद्धा निर्मुलन कार्यक्रम राबवून नागरीकात वैचारिक व तार्किक दृष्टीकोन निर्माण करित आहेत. ग्रामीण भागातील महिला गाव स्वच्छता, पांदनमुक्ती कार्यक्रमाचे आयोजन करित आहेत. तसेच दारुबंदी, जुगारबंदी, बालविवाह बंदी या कार्यक्रमाचे आयोजन करित आहेत. तसेच बालहत्या, कौटुंबिक हिंसा, महिलावरील अत्याचार या घटनांचा निषेध करून मोर्चा काढित आहेत.

शैक्षणिक कार्य :

ग्रामीण भागातील महिलांना शिक्षणाचे महत्त्व समजले आहे. त्या आपल्या मुला-मुलींमध्ये शिक्षण विषयक कोणत्याही स्वरूपाचा भेदभाव न करता त्यांना इंग्रजी, मराठी शाळेत पाठवित आहेत. अनेक महिला आपल्या मुला मुलींना दर्जदार व उच्च शिक्षण मिळावे या करिता शहरातील शाळा, महाविद्यालयात पाठवित आहेत. म्हणून ग्रामीण भागातील मुली-मुले वैद्यकीय, कृषि, विधी अभियांत्रिकी पदव्या घेत आहेत.

महिला गावातील शालेय व पोषण आहार समितीच्या अध्यक्ष सदस्या आहेत. त्या शाळेतील शिक्षण, शिक्षकांची उपस्थिती शाळेतील प्रश्न इत्यादीवर लक्ष देत आहेत. त्यामुळे ग्रामीण भागात शैक्षणिक विकास होत आहे.

आरोग्य विषयक कार्य :

ग्रामीण भागातील महिला आरोग्य विषयक देव-देवता अंधश्रद्धा, बुवाबाजी, मांत्रिक यावर विश्वास ठेवीत नाहीत. त्या आरोग्या संबंधी वैद्यकीय उपचार घेत आहेत. त्या आपल्या मुलांना लसीचे डोस देत आहेत. तसेच गरोदर माता गावातील आशा, नर्स, डॉक्टर यांचा सल्ला घेत आहेत. त्या आपली प्रसूती शासकीय अथवा खाजगी दवाखान्यात करीत आहेत. ग्रामीण भागातील महिला गावात आरोग्य तपासणी कॅम्प घेत आहेत. त्यांनी कुटूंब नियोजनाला महत्व दिले आहे.

राजकीय विकास :

73 व्या घटनादुरुस्ती मध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या एकूण जागा पैकी 33% जागा महिलाकरिता राखीव ठेवण्यात आल्या. तर 110 व्या घटना दुरुस्ती मध्ये स्थानिक स्वराज्य संस्थेच्या एकूण जागा पैकी 50 टक्के जागा महिला करिता राखीव ठेवण्यात आल्या आहेत. स्थानिक स्वराज्य संस्था मधील राखीव जागामुळे ग्रामीण भागातील महिला ग्रामपंचायत, पंचायत समिती, जिल्हा परिषद या स्तरामध्ये लोकप्रतिनिधी चे कार्य करीत आहेत. खेड्यात वास्तव्य करणाऱ्या महिला ग्रामपंचायत सदस्य, उपसरपंच, सरपंच या पदावर असून त्या गावाचे प्रतिनिधीत्व करीत आहेत. त्याचं बरोबर पंचायत समिती सदस्य, उपसभापती, सभापती, जिल्हा परिषद सदस्य, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या पदावर कार्यरत असून त्या तालुका व जिल्हयाचे प्रतिनिधीत्व करीत आहेत. राजकीय पदावर कार्यरत असणाऱ्या महिलांना पदाचे अधिकार व कार्य याची जाणीव झाली आहे. त्या ग्रामीण विकासा संबंधी शासनाच्या योजना प्रभावीपणे गावात राबवित आहेत. योजनांच्या माध्यमातून गाव, तालुका, जिल्हा यांचा विकास घडून येत आहे.

अध्ययनाचे महत्व :

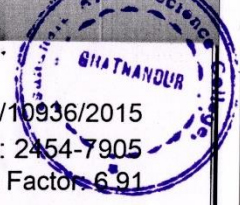
ग्रामीण विकासात महिलांची भूमिका या विषयांच्या अध्ययना अंती निदर्शनास आले की, ग्रामीण भागातील महिला मध्ये शैक्षणिक, व्यावसायिक, तांत्रिक प्रक्रिया, राजकीय, आर्थिक इत्यादी घटकासंबंधी सर्वतोपरी जाणिव झाली आहे. त्या प्रत्येक क्षेत्रात तार्किक विचारातून निर्णय घेत आहेत. त्यामुळे कार्याचे नियोजन कार्याची अमलबजावणी वेळेवर यशस्वीरित्या होत आहे.

संदर्भ सूची :-

- 1) प्रा.गंदेवार एस.एन., संशोधन पध्दती, विद्याभारती प्रकाशन, लातूर 2003.
- 2) महाजन धर्मविर, सामाजिक अनुसंधान की पध्दतियाँ, विवेक प्रकाशन, दिल्ली 2004. ग्रामीण विकासाच्या अरुणोदय मराठवाडा विकास मंडळ औरंगाबाद 2005.
- 3) कराळे गंगाधर, 'ग्रामीण विकास एकात्मिक दृष्टीकोन' श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर 2006.
- 4) पाटील संभाजी, 'महिला सबलीकरण शासनाची भूमिका' गोल्डन रिसर्च थॉट पुणे, 2014.
- 5) एरंडे व्ही.एल., 'ग्रामीण विकासात स्थानिक स्वयंशासनातील नेतृत्वाची भूमिका' मैत्री प्रकाशन,



MAH/NAN/10936/2015
ISSN : 2454-7905
SJIF 2021 - Impact Factor : 6.91



**Worldwide International
Inter Disciplinary Research Journal
(A Peer Reviewed)**

Year - 7, Vol.I, Issue-XLII, 20 December 2021

किसान शिक्षण प्रसारक मंडळ, उदगीर द्वारा संचलित

महात्मा फुले महाविद्यालय

अहमदपूर (पिन-413515) जिल्हा-लातूर महाराष्ट्र (भारत)

(NAAC मान्यताप्राप्त 'B' Grade)

एक दिवसीय राष्ट्रीय (ऑनलाईन) चर्चासत्र

भारतीय राजकारण आणि केंद्र-राज्य संबंधातील तणाव



Edited by

Dr. P. P. Choukate

Address for Correspondence

Mrs. Pallavi Laxman Shete

Editor in Chief : Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal (A Peer Reviewed Referred)

Principal, Sanskriti Public School, Nanded (MH, India) Email : shrishprakashan2009@gmail.com

Dr. Rajesh G. Umbarkar

House No. 624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (Kh.) Nanded - 431605 (India - Maharashtra)

Email - umbarkar.rajesh@yahoo.com, shrishprakashan2009@gmail.com Mob. No. 9623979067

Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International Contacts only + 91-8857894082)

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management,
Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)

PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
7q. Ambajogai Dist. Beed 431519



Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal (A Peer Reviewed Referred)

ISSN – 2454 – 7905

ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor: 6 . 91

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal
Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering,
Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE – XL Year – 7 20 December 2021

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded.

and

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Udgir

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur Dist. Latur – 431515

(NAAC Accredited 'B' Grade)

One Day National Seminar (Online) On

Department of Political Science

“भारतीय राजकारण आणि केंद्र-राज्य संबंधातील तणाव”

:: Editor ::

Dr. P. P. Choukate

Department of Political Science

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur.

Address for Correspondence

Mrs. Pallavi Laxman Shete

Principal, Sanskriti Public School, Nanded.(MH. India)

Website: www.wiidrj.com

House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India -

Maharashtra) Email: Shrishprakashan2009@gmail.com umbarkar.rajesh@yahoo.com

Dr. Rajesh G. Umbarkar Mob. No: +91-9623979067



INDEX

Sr. No.	Title of the Paper	Name of Author	Page No.
01.	संपादकीय	डॉ. पी. पी. चौकटे	Vi
02.	प्रस्तावना	प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार	Vii
03.	THE STRAINED RELATIONS OF THE INDIAN UNION	Dr. Dudhkawade Suresh Ramji	01
04.	INDIAN FEDERALISM: COOPERATING AND CONFLICTING NATURE OF CENTRE-STATE RELATION	Dr. Datta M. Kunchelwad Vijay N. Patil	05
05.	केंद्र राज्य संबंध व राज्यपाल	प्रा. डॉ. साहेब राठोड	09
06.	केंद्र-राज्य संबंध आणि सर्वोच्च न्यायालय	प्रा. कांबळे प्रज्ञा ज्ञानोबा	12
07.	केन्द्रराज्य संबंध व बदलत्या स्वरूपाची कारणे	प्रा. डॉ. मानवते उत्तम हुसनाजी	18
08.	केंद्र-राज्य संबंधातील तणाव	डॉ. कऱ्हाळे व्ही. एल.	21
09.	केंद्र - राज्य संघर्षाची कारणे व उपाययोजना	प्रा. डॉ. नवनाथ गोविंदराव अडकिने	24
10.	राज्यपालाची भूमिका	प्रा. राजेंद्र बनसोडे डॉ. यु. जे. कुलकर्णी	29
11.	पक्षीय राजकारण, केंद्रीय तपासयंत्रणा आणि केंद्र-राज्य संघर्ष	डॉ. शिंदे आर. डी.	33
12.	राज्यपालांच्या अधिकारांचे अध्ययन	प्रा. मकरंद जोगदंड	36
13.	वर्तमान काळातील केंद्र राज्य संबंध व उपाय योजना	प्रा. डॉ. कारिकंटे जी.आर.	40
14.	महाविकास आघाडी सरकारपुढील महत्वपूर्ण आणि आव्हानात्मक राजकीय, सामाजिक मुद्यांचा अभ्यास	प्रा. डॉ. कदम एच. पी.	43
15.	केंद्र सरकार आणि विरोध पक्ष सत्ता-संबंध एक राजकीय विश्लेषण	प्रा. डॉ. डोंगरे एल. बी.	47
16.	केंद्र-राज्य संबंधाचे विश्लेषण	प्रा. डॉ. लक्ष्मणे आर. बी.	52
17.	राज्यपालांची भूमिका आणि अक्षिणार	प्रा. डॉ. वसंत पांडुरंग सरवदे	56
18.	कोरोना काळातील केंद्र राज्य संबंध	प्रा. वाघमारे आर. वाय.	59

राज्यपालांच्या अधिकारांचे अध्ययन

प्रा. मकरंद जोगदंड

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर

प्रास्ताविक :

भारतीय राज्यघटनेच्या 6 व्या भागातील 152 ते 238 अंतर्गत घटक राज्याच्या शासनासंबंधी तरतूद आहेत. या तरतुदीनुसार राज्यपाल हा राज्याचा घटनात्मक प्रमुख आहे. राज्याचा सर्व कारभार राज्यपालाना वाचवणे चालतो. सावंत्र्यपूर्व काळात ब्रिटिशांनी भारतात प्रत्येक प्रांतासाठी एका गव्हर्नरची नेमणूक केली, ही पध्दत स्विकारलेली दिसून येते. राज्यघटनेप्रमाणे राज्यपाल हे राज्यशासनाचे प्रमुख आहेत. राज्यापाल केंद्रसरकारचे प्रतिनिधी म्हणून काम पाहत असतात. केंद्रात राष्ट्रपतींचे जसे स्थान असते तसे राज्यात राज्यपाल स्थान असते. राज्यपालांची नेमणूक राष्ट्रपतींकडून कलम 155 अन्वये केली जाते. काही प्रसंगी एकाच राज्यपाल दोन राज्यांचे प्रशासन पहावे लागते म्हणूनच राज्यापाल पदाचे महत्त्व अनन्य साधारण आहे.

उद्दिष्टे :

- 1) राज्यपाल पदाचे महत्त्व विशद करणे.
- 2) राज्यपालाचे अधिकार स्पष्ट करणे.
- 3) केंद्र व राज्य सरकार यातील दूवा म्हणून राज्यपालाची भूमिका स्पष्ट करणे.
- 4) राज्यपाल सोनेरी पिंजऱ्यातील पक्षी आहेत, ते अभ्यासणे.

गृहीतके :

- 1) राज्यपाल हे राज्याचे घटनात्मक प्रमुख आहेत मात्र ते नाममात्र प्रमुख आहेत.
- 2) राज्याचे मुख्यमंत्री आणि मंत्रिमंडळ यांच्या साहाय्याने राज्यापालांना आपली कामे करावी लागतात.
- 3) राज्याचे राज्यपाल हे राष्ट्रपती व केंद्रशासन यांचे प्रतिनिधी असतात.
- 4) राज्यपालांना अनेकविध अधिकार असतात.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत शोधनिबंधाच्या मांडणीसाठी अध्ययनाकरिता द्वितीय स्त्रोताचा प्रामुख्याने वापर करण्यात आला आहे. त्यामध्ये विविध संदर्भ ग्रंथ, वर्तमानपत्रातील प्रकाशित लेख, मासिके, शासनाचे अहवाल आणि इंटरनेट या उपयोग करण्यात आला आहे. संशोधनाच्या मांडणीकरिता वर्णनात्मक संशोधन पध्दती वापरण्यात आली आहे.

राज्यापालांच्या अधिकारांचे अध्ययन :

भारतीय संघराज्यातील केंद्र व घटक राज्य यांच्या शासन व्यवस्थेसंबंधीच्या तरतुदी संविधानात : करण्यात आल्या आहेत. घटनेनुसार राज्यात सर्वोच्चपदी राज्यपाल असतो घटनेच्या कलम 159 ते 200 या राज्यापालाच्या अधिकाराची तरतुद केली आहे. राज्यापालाच्या अधिकाराचे अध्ययन खालील प्रमाणे करता येई

1) कार्यकारी अधिकार :

राज्यघटनेनुसार राज्यापाल हा घटक राज्याचा प्रमुख असतो. त्यामुळे घटक राज्याचा कारभार राज्यापालाच्या नावे चालतो. राज्यातील सर्व प्रशासकीय आदेश राज्यापालाच्या नावे काढले जातात. त्याचे कार्यकारी अधिकार पूर्वील प्रमाणे आहेत. मुख्यमंत्री आणि त्याच्या शिफारसीनुसार मंत्र्यांची नियुक्ती करण्याचा अधिकार राज्यापालांना असतो. राज्यात निवडणूकानंतर विधानसभेतील बहुमतप्राप्त पक्ष किंवा अनेक पक्षांची आपाही एका नेत्याची निवड करतात व त्या नेत्याचे नाव राज्यापालाकडे पाठविले जाते. त्याची मुख्यमंत्री या पदावर नियुक्ती राज्यापाल करीत असतात. नंतर मुख्यमंत्र्यांच्या सल्ल्याने इतर मंत्री नियुक्त करतात. या सर्वांना राज्यापाल शपथ देतात व मंत्रिमंडळ अस्तित्वात येते हे सर्व अधिकार औपचारिक असले तरी राज्यापाल स्वतःचे खास अधिकार वापरतात. उदा.विधिमंडळात जेव्हा कोणत्याच पक्षाला बहुमत नसेल तेव्हा स्वतःच्या सदसदविवेकाने कोणत्याही व्यक्तीची नियुक्ती मुख्यमंत्री पदावर करतात. तसेच राष्ट्रपतींना अहवाल पाठवून राज्यात 356 कलम लागू करण्याची शिफारस करतात. मंत्रिमंडळाचे विधानसभेतील बहुमत संपुष्टात आल्यास राज्यापाल मंत्रिमंडळ बरखास्त करू शकतो.

संविधानाच्या कलम 165 अन्वये राज्यापालाला राज्याचा महाधिवक्ता, राज्य लोकसेवा आयोगाचा अध्यक्ष, आणि सभासदांची नियुक्ती करण्याचा अधिकार असतो. भारताचा राष्ट्रपती उच्च न्यायालयाच्या न्यायाधिकाऱ्यांची नेमणूक करताना घटक राज्याच्या राज्यापालाचा सल्ला घेतात. राज्यातील विद्यापीठांचा राज्यापाल पदविध कुलपती असतो. विद्यापीठाचे कुलगुरु नियुक्त करण्याचा त्यास अधिकार असतो. मात्र हे सर्व कार्य मुख्यमंत्र्यांच्या सल्ल्यानुसारच करावे लागते. जिल्हाधिकारी, दुय्यम न्यायालयाचे न्यायाधिश, वरिष्ठ पोलिस अधिकारी, विधानपरिषदेतील 1/6 सभासद नेमण्याचा अधिकार राज्यापालाला आहे.

2) कायदेविषयक अधिकार :

राज्यापाल हा कायदेमंडळाचा सभासद नसला तरी कायदेमंडळाचा आवश्यक घटक समजला जातो.

विधिमंडळाची बैठक बोलविताना पहिल्या बैठकीचा शेवटचा दिवस आणि दुसऱ्या बैठकीचा पहिला दिवस यामध्ये किमान 6 महिन्यापेक्षा जास्त आंतर असू नये हे घटनात्मक बंधन राज्यापालाला पाळावे लागते.

नवीन वर्षांच्या पहिल्या अधिवेशनाच्या पहिल्या दिवशी ते विधिमंडळाला उद्देशून भाषण करतात यावेळी विधिमंडळ हे जर द्विगृही असेल तर विधिमंडळाचे ते संयुक्त अधिवेशन बोलविताना.

राज्य विधिमंडळाने पास केलेल्या प्रत्येक विधेयकाला राज्यापालाची संमती आवश्यक असते त्याशिवाय विधेयकाचे कायद्यात रूपांतर होत नसते.

विधिमंडळाच्या एका किंवा दोन्ही सभागृहाला उद्देशून भाषण करण्याचा संदेश पाठविण्याचा, विधिमंडळाचे सभागृहात मतभेद झाल्यास त्यांचे संयुक्त अधिवेशन बोलावण्याचा अधिकार राज्यापालास आहे.

विधिमंडळाचे अधिवेशन चालू नसेल अशा काळात एखादा कायदा करण्याची गरज असल्यास राज्यापालांना घट्टकूम काढण्याचा अधिकार आहे. अर्थात अशा घट्टकूमाला विधिमंडळाचे अधिवेशन भरल्यास 6 आठवड्यांच्या मर्यादा विधिमंडळाची मान्यता घ्यावी लागते.

3) आर्थिक अधिकार :

अर्थविषयक विधेयक राज्यपालाच्या शिफारशीशिवाय किंवा संमतीशिवाय विधानसभेत मांडता येत नाही. त्यांच्या शिफारशीशिवाय अर्थसंकल्प किंवा कोणत्याही अनुदानाची मागणी करता येत नाही. राज्याच्या आकास्मिक निधिवर त्याचेच नियंत्रण असते. विशिष्ट परिस्थितीत संचित निधीतून खर्च करण्याचा अधिकार राज्यपालांना असतो.

5) न्यायविषयक अधिकार :

जिल्हा न्यायालय व त्या खालील न्यायालयातील न्यायाधिकाऱ्यांच्या नेमणूका करणे, त्यांची बदली करणे, बढती करणे इत्यादी संबंधीचे अधिकार राज्यपालांना असतात. घटकराज्याच्या अधिकार क्षेत्रात येणाऱ्या कायदानुसार न्यायालयाने दिलेली शिक्षा कमी करण्याचा, शिक्षेचे स्वरूप बदलण्याचा किंवा माफी देण्याचा अधिकार राज्यपालांना आहे.

5) विशेषाधिकार :

सर्वसाधारण परिस्थितीत राज्यपाल नामधारी प्रमुख म्हणून कार्य पार पाडत असले तरी काही प्रसंगी मंत्रिमंडळाच्या सल्ल्यावर अवलंबून न राहता स्वतःच्या विवेकबुद्धीने निर्णय घ्यावे लागतात. घटक राज्यात अस्थिरता निर्माण झाल्यास विधानसभा बरखास्त करण्याचा व राष्ट्रपती राजवट लागू करण्यासंबंधीचा अहवाल राज्यपालांनी राष्ट्रपतीकडे पाठविल्यास त्या राज्यात राष्ट्रपती राजवट लागू केली जाऊ शकते. राष्ट्रपतींनी घटक राज्यात आणीबाणी घोषित केल्यास राज्यपाल राष्ट्रपतीचा प्रतिनिधी म्हणून घटक राज्याचा कारभार पाहत असतो. एखादे विधेयक विचारार्थ राखून ठेवण्याचा अधिकार राज्यपालांना असतो व पुन्हा दुरुस्त्यासाठी विधीमंडळात पाठविल्यावर पुन्हा तेच विधेयक राज्यपालांच्या स्वाक्षरीस आल्यास त्यास संमती द्यावीच लागते.

6) इतर अधिकार :

राज्यपाल हा केंद्राचा घटक राज्यातील प्रतिनिधी असतो. त्यामुळे त्याला राज्याचे इतिवृत्त वेळोवेळी राष्ट्रपतीला द्यावे लागते. तसेच सामाजिक व राजकीय कार्यक्रमांना उपस्थित राहावे लागते. पदव्या परितोषिकांचे वितरण त्यांच्या हस्ते केले जाते, विदेशी पाहुण्यांचे स्वागत करणे हे कार्य राज्यपाल करतात.

- घटनेच्या 371 (2) कलमान्वये महाराष्ट्राच्या विदर्भ, मराठवाडा व उर्वरित महाराष्ट्र या विभागासाठी प्रादेशिक विकासमंडळे स्थापन करून मागासलेल्या प्रादेशिक विभागांचा विकास करण्याची जबाबदारी राज्यपालांवर सोपविण्यात आली आहे. त्यामुळे महाराष्ट्राच्या राज्यापालांच्या अधिकारात वाढ झाली आहे.
- राज्य लोकसेवा आयोगाकडून आलेला वार्षिक अहवाल स्विकारून तो कायदेमंडळासमोर ठेवणे, राज्याच्या जमा खर्च संबंधीचा अहवाल स्विकारणे व तो कायदेमंडळासमोर ठेवणे हा अधिकार राज्यपालांना आहे.
- राज्यातील विद्यापीठांचे कुलपती या नात्याने कुलगुरुंच्या नेमणूका करणे व विद्यापीठांच्या कामकाजावर नियंत्रण ठेवणे हे अधिकार राज्यपालांना असतात.


सारांश :

थोडक्यात सारांश रुपाने असे म्हणता येईल की, राज्यपाल हे राज्याचे घटनात्मक प्रमुख असतात. त्यांच्याच नावाने राज्याचा संपूर्ण कारभार चालत असतो, हे जरी खरे असले तरी मुख्यमंत्री वास्तविक शासन प्रमुख असल्याने

त्यांचे मंत्रिमंडळ हेच संपूर्ण अधिकाराचा वापर करित असतात. राज्यपालांना मंत्रिमंडळाच्या सल्ल्याने आपल्या अधिकाराचा वापर करावा लागत असल्याने त्यांचे पद नाममात्र स्वरूपाचे बनले आहे. असे असले तरी राज्याचा कारभार हा घटनेप्रमाणे चालविला पाहिजे, राज्यात शांतता व सुव्यवस्था अस्तित्वात राहावी यासाठी राज्यपालाचे पद महत्त्वाचे मानली जाते. आघाडीच्या राजकारणातून निर्माण होणारी अस्थिरता या पार्श्वभूमीवर राज्यपाल पदास मोठे महत्त्व प्राप्त झालेले दिसून येते.

संदर्भ सूची :

- 1) डॉ. मोरे विठ्ठल, डॉ. पवार कुसुम, प्रा. सोलापूर राजशेखर, डॉ. मोरे संग्राम - महाराष्ट्र शासन आणि राजकारण, अरुणा प्रकाशन, लातूर.
- 2) प्रा. डॉ. नाईकवाडे अशोक, प्रा. डॉ. नलावडे पंडीत - महाराष्ट्राचे शासन आणि राजकारण, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद.
- 3) प्रा. कुलकर्णी सुधाकर - भारतीय संविधान शासन आणि राजकारण, अभिजित पब्लिकेशनन्स लातूर
- 4) डॉ. जोशी सुधाकर - भारतीय शासन आणि राजकारण, विद्या बुक्स पब्लिशर्स, औरंगाबाद.
- 5) डॉ. कुलकर्णी विजयकुमार गो. - भारतीय संविधान शासन आणि राजकारण, कैलाश पब्लिकेशन्स औरंगाबाद.
- 6) डॉ. चिबरोनकर के. एस. - महाराष्ट्र शासन आणि राजकारण, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद


PRINCIPAL

Vasundhara C. • • Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519



यशवंतराव चव्हाण यांचे राजकीय कार्य

प्रा.जोगदंड मकरंद बळीराम

(राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख), वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता. अंबाजोगाई, जि.बीड

प्रस्तावना

भारतीय स्वातंत्र्याच्या प्राप्ती करिता ज्या राजकीय नेत्यांनी आपले योगदान दिले आहे यामध्ये महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांच्या नावाचा विशेष उल्लेख केला जातो. यशवंतराव चव्हाण यांचा जन्म 12 मार्च 1913 रोजी सातारा जिल्ह्यातील देवराष्ट्र या गावी शेतकरी कुटुंबात झाला. त्यांनी बी.ए.एल.एल.बी. ची शैक्षणिक पदवी प्राप्त केली. पुढे ते गांधीजींच्या विचाराने प्रेरित होवून राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षात सहभागी झाले. त्यांनी 1930 च्या गांधीजींच्या सत्याग्रहामध्ये व 1942 च्या भारत छोडो अंदोलनामध्ये सहभाग घेतला. या सहभागाबद्दल त्यांना तुरुंगवासाची शिक्षा भोगावी लागली. स्वातंत्र्यप्राप्ती नंतर 1948 मध्ये त्यांची महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस पक्षाच्या चिटणीस पदावर नेमणूक झाली. तर 1 मे 1960 मध्ये ते महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री झाले.

यशवंतराव चव्हाण यांच्या राजकीय कार्याचा विकास अखंडपणे चालू राहिला. ते 1962 ते 1966 या कालावधीत भारताचे संरक्षण मंत्री राहिले. तर 1966 ते 1970 या काळात भारताचे गृहमंत्री होते. तसेच 1970 ते 1974 मध्ये भारताचे अर्थमंत्री आणि 1974 पासून परराष्ट्र मंत्री राहिले. यशवंतराव चव्हाण यांनी वेगवेगळ्या स्वरूपाची राजकीय पदे भूषविली. त्यांनी राजकीय पदावर काम करित असताना आपल्या पुरोगामी विचाराने व दुरदृष्टीतून सामाजिक व राष्ट्रीय विकासाला प्राधान्य दिले. यामध्ये ग्रामीण आर्थिक विकास, समतोल विकास, रोजगारभिमूख शिक्षण, तांत्रिक व्यवसाय, सत्तेचे विकेंद्रीकरण, तांत्रिक कृषी व्यवसाय इत्यादी घटकांना प्राधान्य दिले. त्यांच्या विकासात्मक योजनांमुळे राष्ट्रीय विकासाला गती मिळाली. अशा अतुलनीय राजकीय नेत्यांच्या राजकीय कार्याचा आढावा घेण्याकरिता पुढील प्रमाणे संशोधनाच्या उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे:

- 1) यशवंतराव चव्हाण यांच्या राजकीय जीवनाचे अध्ययन करणे.
 - 2) यशवंतराव चव्हाण यांनी भूषविलेला राजकीय पदाचा आढावा घेणे.
 - 3) यशवंतराव चव्हाण यांनी राजकीय पदावरून केलेल्या कार्याचे अध्ययन करणे.
- सदरील संशोधन विषयाच्या अध्ययनाकरिता मांडण्यात आलेल्या उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरिता खालील प्रमाणे संशोधनाची गृहितके मांडण्यात आली आहेत.

गृहितके:

- 1) यशवंतराव चव्हाण यांचे राजकारण समुद्रयाचे संघटन आणि विकासाचे माध्यम आहे
- 2) यशवंतराव चव्हाण यांची दुरदृष्टी आणि पुरोगामी विचारमरणी हे राजकीय विकासाचे फलीत आहे.
- 3) यशवंतराव चव्हाण यांनी राजकीय पदावरून केलेल्या विकासात्मक योजनांमुळे सामुदायिक आर्थिक विकासाला गती मिळाली.



प्रस्तुत गृहितकांच्या पडताळणी करिता पुढील प्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला.

संशोधन पध्दती:

सदील अध्ययन विषयाच्या तथ्य संकलनाकरिता प्रामुख्याने द्वितीयक स्रोताचा अवलंब करण्यात आला आहे. यामध्ये प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतांचा वापर केला. प्रकाशित स्रोतांमध्ये संदर्भ ग्रंथ, क्रमीक पुस्तके, मासिके, वर्तमानपत्रे, शासकीय व निम-शासकीय संस्थांचे अहवाल इत्यादीचा अवलंब करण्यात आला. तर अप्रकाशित स्रोतांमध्ये एम.फिल., पीएच.डी. चे प्रबंध इंटरनेट यांचा वापर करण्यात आला. सदरील संशोधनाच्या मांडणीकरिता वर्णनात्मक संशोधन आराखडयाचा अवलंब करण्यात आला.

विषय प्रतिपादन:

यशवंतराव चव्हाण हे महाराष्ट्र आणि भारतामधील अभ्यासू व कुशाग्र बुद्धीमत्तेचे राजकीय नेते होते. त्यांनी राजकीय पदावर कार्य करीत असताना तत्वांशी कधीच समझोता केला नाही. ते आपल्या निर्णयापासून अलीप्त झाले नाहीत. त्यांच्याकडे बालपणापासूनच राष्ट्रभक्ती आणि नेतृत्वाचा गुण होता. त्यांच्या राष्ट्रभक्ती आणि नेतृत्व गुणांची मांडणी पुढील प्रमाणे करता येते.

स्वातंत्र्यपूर्व चळवळीतील सहभाग:-

यशवंतराव चव्हाण विद्यार्थी अवस्थेपासूनच स्वातंत्र्यासंबंधी गांधीजींच्या विचाराने प्रभावित झाले होते. त्यांनी इ.स. 1930 मध्ये गांधीजींनी सुरु केलेल्या सविनय कायदेभंग सत्याग्रहामध्ये सहभाग घेतला. त्या बद्दल त्यांच्यावर खटला दाखल झाला. तसेच त्यांनी 1932 मध्ये सातत्यात भारतीय ध्वज फडकवल्यामुळे त्यांना 18 महिण्याचा तुरुंगवास भोगावा लागला. त्याचबरोबर त्यांनी 1942 च्या भारत छोडो आंदोलनात सक्रिय सहभाग घेतला.

1960 पूर्वी विविध पदावर कार्य:

यशवंतराव चव्हाण स्वातंत्र्याच्या चळवळीत सहभाग घेत असतानाच राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षात सहभागी झाले. ते राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षाच्या चळवळीमध्ये अग्रेसर होते. त्यामुळे 1942 नंतर त्यांची गणना बॉम्बे राज्याच्या आणि पुढे महाराष्ट्र राज्याच्या प्रमुख नेत्यांमध्ये होऊ लागली. त्यामुळेच ते 1946 साली मुंबई विधिमंडळासाठी झालेल्या निवडणुकीमध्ये काँग्रेस पक्षाचे उमेदवार म्हणून निवडून आले. त्यावेळेच्या मुंबई प्रांताचे मुख्यमंत्री बाळासाहेब खेर यांनी यशवंतराव चव्हाण यांची निवड पार्लमेंट सेक्रेटरी म्हणून केली.

स्वातंत्र्योत्तर काळातील राजकीय पदांचा कार्यभार:

यशवंतराव चव्हाण यांची 1948 साली महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस पदाच्या चिटणीस पदावर नियुक्ती झाली. त्यांनी महाराष्ट्रात काँग्रेस पक्षाचा विस्तार केला. 1952 च्या निवडणुकीत ते निवडून आले. त्यांची स्थानिक स्वराज्य आणि पुरवठा खात्याचे मंत्री म्हणून नेमणूक झाली. तर त्यांनी 1 मे 1956 साली द्वैभाषिक मुंबईचे मुख्यमंत्री म्हणून सुत्रे हाती घेतली. पुढे संयुक्त महाराष्ट्राची निर्मिती झाल्यानंतर ते 1 मे 1960 रोजी महाराष्ट्र राज्याचे पहिले मुख्यमंत्री झाले.

संयुक्त महाराष्ट्राच्या निर्मितीमधील कार्य:

यशवंतराव चव्हाण 1957 ते 1960 पर्यंत कराड मतदारसंघातून विधानसभेचे नेते होते. तसेच ते या कालावधित अखिल भारतीय काँग्रेस कार्यकारणीचे सदस्य होते. त्यांनी कराड मतदार संघाचे प्रतिनिधी आणि अखिल भारतीय काँग्रेस कार्यकारणीचे सदस्य या दोन्ही पदावर अतुलनीय कार्य केले. त्यांच्या या कार्यामुळे राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षाचे वरिष्ठ नेते त्यांना क्रियाशील कर्तृत्ववान नेता म्हणून ओळखू लागले.



यशवंतराव चव्हाण यांना द्वैभाषिक महाराष्ट्राची निर्मिती मान्य नव्हती. ते म्हणत असत की, महाराष्ट्रात अनेक भाषा बोलणाऱ्या व्यक्तींचे वास्तव्य आहे. मराठी व गुजराती भाषिकांच्या भाषांनाच महत्व देवून इतर भाषिकांवर अन्याय करणे योग्य नाही. तर सर्वच भाषिकांचा सन्मान करून त्यांना एकत्रित ठेवण्याकरिता संयुक्त महाराष्ट्राची निर्मिती होणे आवश्यक आहे. याकरिता त्यांनी केंद्रीय काँग्रेस पक्षाच्या नेत्याबरोबर वाद विवाद ही केला. त्यांनी संयुक्त महाराष्ट्राच्या लढ्याला उषड पाठिंबा ही दिला. त्यांच्या या कार्याचे फलित म्हणून 1 मे 1960 रोजी संयुक्त महाराष्ट्राची निर्मिती झाली.

मुख्यमंत्री पदावरील कार्य:

यशवंतराव चव्हाण 1 मे 1960 रोजी महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री झाले. त्यांनी मुख्यमंत्री पदावर काम करित असताना ग्रामीण आर्थिक विकासावर भर दिला. त्याकरिता तांत्रिक श्रेती, शती करिता बंदारे व तलावांची निर्मिती, ग्रामीण भागात औद्योगिक वसाहतीची स्थापना यावर भर दिला. त्याच बरोबर ग्रामीण समुदायात शैक्षणिक विकास घडून यावा या करिता शाळांची स्थापना केली. तांत्रिक पध्दतीने शेती व उद्योगधंदे करण्याकरिता कृषि विद्यालय आणि व्यवसायिक प्रशिक्षण केंद्राची स्थापना केली. ग्रामीण भागातील सर्व सामान्य नागरिक सत्तेत सहभागी झाला पाहिजे याकरिता त्यांनी सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाचा दृष्टीकोन पंचायतराज व्यवस्थेच्या माध्यमातून मांडला. त्यांची मुख्यमंत्री पदाची कारकिर्द महाराष्ट्राच्या आर्थिक विकासाच्या दृष्टीने महत्वपूर्ण ठरली.

केंद्रीय मंत्री पदावरील कार्य:

पंतप्रधान पंडित जवाहरलाल नेहरू यांच्या मंत्री मंडळातील संरक्षण मंत्री कृष्णा मेनन यानी भारत - चीन बॉर्डर वरून झालेल्या युद्धामुळे 1962 ला संरक्षणमंत्री पदाचा राजीनामा दिला. पंडित नेहरूंनी रिक्त झालेल्या संरक्षणमंत्री पदावर यशवंतराव चव्हाण यांची नेमणूक केली. यशवंतराव चव्हाण यांनी सैन्याचे मनोबल वाढवून चीन बरोबर सशक्त लढा दिला. तसेच त्यांनी युद्धानंतर नाजूक झालेल्या परिस्थितीवर संयम निर्माण करण्याकरिता अनेक कठोर निर्णय घेतले. त्यांनी संरक्षण मंत्री पदाची जबाबदारी उत्तमरितीने पार पाडल्यामुळे ते पंडित नेहरू यांचे आवडते नेते बनले.

1965 मध्ये भारत - पाकिस्तान मध्ये झालेल्या युद्धात लालबहादूर शास्त्री यांच्या मंत्रीमंडळात संरक्षण खात्याची जबाबदारी पार पाडली. त्यांनी कुशल पध्दतीने संरक्षण खात्याची जबाबदारी पार पाडल्यामुळे त्यांना राष्ट्रीय काँग्रेस पक्ष आणि इतर पक्षातील नेते क्रियाशील नेता म्हणून ओळखू लागले. त्यामुळेच ते 1967 मध्ये झालेल्या लोकसभेच्या निवडणुकीत नाशिक लोकसभा मतदार संघातून निवडून आले.

पंतप्रधान इंदिरा गांधी यानी 14 नोव्हेंबर 1966 रोजी यशवंतराव चव्हाण यांची गृहमंत्री म्हणून नेमणूक केली. त्यांनी गृहमंत्री पदाचा कारभार उत्तमरितीने पार पाडला. त्यांची कार्य करण्याची पध्दत आणि कार्याचे नियोजन पाहून इंदिरा गांधी यांनी 26 जून 1970 रोजी यशवंतराव चव्हाण यांची भारताचे अर्थमंत्री म्हणून नेमणूक केली. त्यांनी अर्थखात्याचे कार्य कुशाग्रबुद्धीने पार पाडले. त्यांच्या कार्याची कुशलता पाहून त्यांची 11 ऑक्टोबर 1974 रोजी परराष्ट्रमंत्री म्हणून नेमणूक केली.

इंदिरा गांधींनी 1975 मध्ये देशात आणीबाणी जाहिर केली. त्यामुळे इंदिरा गांधी. आणि त्यांच्या नेत्यावर जनता नाराज झाली. त्यामुळे अनेक नेते काँग्रेस पक्ष सोडून गेले. परंतु काँग्रेस पक्षाचे कार्यकर्ते म्हणून यशवंतराव चव्हाण ठाम राहिले. त्यांनी काँग्रेस पक्षावरील निष्ठा पाहून इंदिरा गांधी यांचे ते विश्वासू नेते बनले.

राष्ट्रीय आणीबाणी मुळे इंदिरा गांधींनी आपले पंतप्रधान पद आणि संसदेतील सदस्यता गमावल्यानंतर नवीन संसदेत यशवंतराव चव्हाण यांना काँग्रेस पक्षाचे संसदीय नेते म्हणून निवडण्यात आले. नवीन संसदेत काँग्रेस हा सर्वात मोठा विरोधी पक्ष व यशवंतराव हे विरोधी पक्षाचे नेते होते.




महत्त्व

यशवंतराव चव्हाण हे उच्च शिक्षित आणि कुशाग्र बुद्धीचे राजकीय नेते होते. त्यांच्या अंगी कार्यकुशलता, चिकाटी संघटन आणि नेतृत्व हे गुण होते. त्यांची दूरदृष्टी आणि नियोजित कार्य करण्याच्या पध्दतीमुळे अल्पावधीतच ते नामांकित राजकीय नेते बनले. त्यांनी वेगवेगळ्या राजकीय पदावर केलेल्या कार्याचे स्वरूप, कार्य करण्याची पध्दत आधुनिक काळातील नेत्यांना मार्गदर्शक ठरणारे आहे. तसेच सदरील संशोधनाच्या माध्यमातून त्यांनी समुदाय व राष्ट्रीय विकासाकरिता ज्या योजनांची आणि केंद्राची स्थापना केली आहे त्या योजना सदरील संशोधनाच्या माध्यमातून नागरीकांना परिचित होतील.

संदर्भ सूची

- 1) महाजन धर्मवीर आणि महाजन, 'कमलेश्वर सामाजिक अनुसंधान की पध्दतियों', त्रिवेक प्रकाशन, दिल्ली- 2004.
- 2) प्रा. गंदेवार एस.एन. - 'समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती,' त्रिद्याभारती प्रकाशन, लातूर- 2005.
- 3) कल्याणकार बा.ह. (संपा), 'युगंधर नेते यशवंतराव चव्हाण', आकाश प्रकाशन, नागपुर - 2003.
- 4) नाईकवाडे अशोक (संपा), 'महाराष्ट्राचे भाम्यविधाते यशवंतराव चव्हाण,' त्रिद्याभारती प्रकाशन, लातूर - 2006.
- 5) भोळे भास्कर लक्ष्मण, 'यशवंतराव चव्हाण राजकारण आणि साहित्य', सांकेत प्रकाशन औरंगाबाद - 2004.
- 6) w.w.w. Wikipedia.


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



SARASWATI

The Research Journal

Special Issue
Global and Internal Politics: Issues and Areas



**SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra**


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519

Special Issue (1) 2020-21, ISSN 2229 - 5224



Internal and Global Politics : Issues and Areas

Special Issue Editor

Dr. Navnath Aghav

Professor and Head
Department of Political Science

**SBES College of Arts and Commerce,
Aurangabad, Maharashtra**



25. भारतीय लोकशाहीच्या बळकटीकरणात निवडणुक आयोगाची भूमिका	डॉ.रामदास निहाळ	100
26. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय आणि आर्थिक संबंध	प्रा.जोगदंड बळीराम	105
27. भारतातील प्रादेशिक पक्ष व समकालीन राजकारण	डॉ.ए.पी.वनारसे	109
28. कलम ३५६ आणि राज्यपालाची वादग्रस्त भूमिका	डॉ.राजेंद्र शिंदे	118
29. Regional Political Parties and Contemporary Politics	डॉ.नितीन आहेर	124
30. नागरिकत्व सुधारणा कायदा 2019	डॉ.चौधरी के.पी. डॉ.तांदळे डी.आर.	132
31. भारतातील केंद्र - राज्य संबंधाचे स्वरूप व तरतुदी	डॉ.नामानंद साठे	139
32. भारतीय राजकारणातील केंद्र-राज्य संबंध एक अभ्यास	डॉ.महादेव मुंडे	144
33. कोरोना, सरकार आणि न्यायालयाची सक्रियता	डॉ.प्रभाकर जाधव	151
34. नागरिकत्व सुधारणा कायद्याचे राजकीयकरण	प्रा.एकनाथ खरात	156
35. Covid-19 चे सामाजिक,आर्थिक व राजकीय जीवनावरील परिणाम	डॉ.अंबादास बिराजदार	163
36. प्रमुख आणि प्रादेशिक शक्तींशी भारताचा संबंध	डॉ.महेश मोटे	167
37. केंद्र-राज्य संबंध	डॉ.व्यंकटेश खरात	173
38. भारतीय नागरीकत्व कायदा	छाया सवडतकर	176
39. नागरिकत्व दुरुस्ती कायदा	डॉ.जगदीश देशमुख	180
40. 1989 नंतर राज्यपालपद आणि कलम 356 च्या वापराचा केंद्र-राज्य संबंधावरील प्रभाव	डॉ.ढोबळे डी.बी.	185
41. घटकराज्य कारभारात राज्यपालांची भूमिका	डॉ.गालफाडे ए.बी.	194
42. न्यायालयीन सक्रियता	डॉ.शिवाजी दिवाण	199
43. भारतीय राजकारणाचे बदलते स्वरूप आणि निवडणूक आयोग	विलास टाले	205
44. कोरोना काळातील वाढती न्यायालयीन सक्रियता	डॉ.सुपेकर वैशाली	211
45. भारतीय मतदारांच्या वर्तनावरील प्रभाव	डॉ.निलेश शरे	214
46. राज्यपालाची भूमिका	संदीप चौधरी	219
47. न्यायालयीन सक्रियता	प्रा.साईचरण पेंडकर	226
48. न्यायालयीन सक्रियतेचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	डॉ.मलदोडे रामराव	229
49. Covid 19 and Global political Economy	R. V. Mhaske	234
50. निवडणुक आयोगाची भूमिका	उज्जमा ऐनोद्दीन सिद्दीकी	237
51. केंद्र आणि राज्य संबंध	ज्योती दराडे	241



केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय आणि आर्थिक संबंध

प्रा.जोगदंड मकरंद बळीराम

प्रस्तावना :

केंद्र व घटक राज्य यांच्या अंतर्गत सुरळीत प्रशासन प्रस्थापित होण्याकरिता त्यांच्यातील संबंध हे सहकार्याचे व समन्वयाचे असावे लागतात. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय संबंधाविषयी राज्यघटनेत तरतूद करण्यात आली आहे. या तरतुदीमध्ये देशांतर्गत विकास आणि सुव्यवस्था निर्माण करण्याकरिता केंद्राला घटक राज्यावर नियंत्रण ठेवण्याचे प्रशासकीय अधिकार दिलेले आहेत. तसेच केंद्राच्या प्रशासकीय अधिकाराचे पालन करणे घटक राज्यांना बंधनकारक केले आहे. त्यामुळे केंद्र सरकार देशात विकास आणि शांतता प्रस्थापित व्हावी या करिता घटक राज्यांना कायद्याची अंमलबजावणी कशी करावी या संबंधी मार्गदर्शन करते. केंद्राने तयार केलेल्या कायद्याच्या विरोधात घटक राज्यांनी कायदे करू नयेत. अशा स्वरूपाच्या प्रशासकीय तरतुदीमुळे केंद्र व घटक राज्यांचे संबंध स्थिर स्वरूपाचे प्रस्थापीत होतात.

केंद्र व घटक राज्य यांना विकास प्रक्रिया राबविण्याकरिता आणि वैज्ञानिक व प्रशासकीय कार्याला स्थिरता लाभारी यासाठी विपूल प्रमाणात आर्थिक घटकाची आवश्यकता असते. म्हणूनच केंद्र व घटक राज्य सरकार आर्थिक दृष्ट्या स्वतंत्र असावेत या उद्देशाने भारतीय संविधानात सरकारच्या उत्पन्न व खर्च या बाबी वेगवेगळ्या ठेवलेल्या आहेत. या मध्ये काही कर पूर्णपणे केंद्र सरकारच्या अधीन ठेवण्यात आले आहेत. तर काही कर घटक राज्यांच्या अधीन ठेवण्यात आले आहेत. परंतु केंद्र सरकारने घटक राज्यांना लष्करी संरक्षण, दळणवळणाच्या सुविधांची उभारणी, अपत्कालीन परिस्थिती इत्यादी प्रसंगी आर्थिक मदत देण्याची तरतूद करण्यात आली आहे. देशाच्या व नागरिकांच्या विकासात्मक दृष्टीकोनातून केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय व आर्थिक संबंध सलोख्याचे असणे महत्वाचे ठरतात. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंधाच्या स्वरूपाचा आढावा घेण्याकरिता पुढील प्रमाणे उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- 1) राज्य घटनेतील केंद्र व घटक राज्य यांच्या संबंधाच्या तरतुदी समजून घेणे.
- 2) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील अधिकारांचे स्वरूप अभ्यासणे.
- 3) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील सहकार्याच्या भूमिकांचा आढावा घेणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या पूर्ततेकरिता खालीलप्रमाणे गृहीतकृत्याची मांडणी करण्यात आली आहे.

गृहीतकृत्य :

- 1) केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंध घटनेत तरतूद केलेल्या नियमावलीवर आधारित आहेत.
- 2) केंद्राचे प्रशासकीय अधिकार घटक राज्यांना पालन करणे जनहिताचे आहे.
- 3) केंद्राच्या आर्थिक मदतीतून घटक राज्यांच्या विकासाची उभारणी होत आहे.

वरील गृहीतकृत्यांच्या अध्ययनाकरिता पुढीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पध्दती :

सदरील शोधनिबंधाच्या मोजणीकरिता प्रामुख्याने द्वितीयक स्रोतांचा अवलंब करण्यात आला आहे. यामध्ये प्रकाशित स्रोतामधील संदर्भ ग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, मासिके, साप्ताहिके, वर्तमानपत्रातील लेख, विविध



शासकीय व निमशासकीय संस्थांनी प्रकाशित केलेले अहवाल इत्यादीचा अवलंब करण्यात आला आहे. वर अप्रकाशित स्त्रोतामध्ये एम.फील., पी.एचडी प्रबंध, इंटरनेट यांचा वापर करण्यात आला आहे.

प्रस्तुत शोधनिबंधाच्या मांडणी करिता पुढीलप्रमाणे आराखड्याची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधन आराखडा :

सदरील शोधनिबंधाच्या मांडणी करिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला वर्णनात्मक आराखड्यातून संकलित करण्यात आलेल्या तथ्यांना शब्दांच्या माध्यमातून एका सुत्रबद्ध पध्दतीने मांडणी करण्यात आली.

अ) विषय प्रतिपादन :

केंद्र व घटक राज्य यांच्यामधील संबंध हे स्थिर स्वरूपाचे असावे लागतात. त्याचबरोबर त्यांच्या संबंधामध्ये सहकार्याची जवळीकता निर्माण झालेली असावी. या सहकार्याच्या माध्यमातून केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील प्रशासकीय व आर्थिक संबंध सुरळीत निर्माण होतात. या संबंधाची कारणे आणि कायदे पुढीलप्रमाणे दिसून येतात.

प्रशासकीय संबंधाचे स्वरूप व त्यासंबंधीची कायदे :

1) घटक राज्याच्या सरकारला मार्गदर्शन करणे :

केंद्र संसदेने निर्माण केलेल्या कायद्याच्या अमलबजावणीत अडचण येऊ नये म्हणून केंद्र घटक राज्यांनी आपली कार्यकारी शक्ती कशी वापरावी यासंबंधी मार्गदर्शन करू शकते. याकरिता संविधानातील 256 कलमानुसार केंद्रीय सत्तेच्या अनुकूल ठरावी अशी व्यवस्था आणि कार्यकारी सत्ता राज्याकडून राबविली जाईल अशी तरतूद करण्यात आली आहे.

2) घटकराज्याचे शासन केंद्रीय शासनाशी सहाय्यभूत असावे :

संविधानात कलम 257 मध्ये स्पष्ट केले आहे की, घटकराज्याने आपली कार्यकारी सत्ता केंद्रीय कार्यकारी सत्तेला पोषक व सुसंगत असेल अशी वापरली जावी म्हणजे केंद्र सरकारच्या कायद्याच्या विरोधात घटक राज्याने कायदे करू नयेत.

3) केंद्राद्वारे घटक राज्यांना आदेश देण्याचा अधिकार :

केंद्र घटक राज्याच्या शासनाला राष्ट्रीय आणि लष्करीदृष्ट्या आणि दळणवळणाची उभारणी व सुविधा करणे, तसेच केंद्रीय मालमत्तेचे संरक्षण करणे इत्यादी आदेशाचे पालन करणे घटक राज्यासाठी बंधनकारक आहेत.

4) घटकराज्यांच्या संघर्षासंबंधी निर्णय :

दोन किंवा अधिक राज्यांतून वाहणाऱ्या नदीच्या पाण्याचा वापर, वाटणी व नियंत्रण याबाबत राज्या-राज्यात वाद निर्माण झाल्यास त्याची सोडवणूक करण्यासंबंधीचा कायदा संसदेला करता येतो. संसदेचा निर्णय अंतिम स्वरूपाचा असतो. ही तरतूद घटनेच्या कलम 262 नुसार करण्यात आली आहे.

5) राज्या-राज्यात समन्वय व सहकार्य प्रस्थापित करणे :

केंद्र सरकार जनहित लक्षात घेऊन घटनेतील कलम 263 नुसार राज्या-राज्यातील संघर्ष लवदामार्फत मिटवून राज्यावर काही निर्बंध लादून राज्या-राज्यात समन्वय व सहकार्य प्रस्थापित करू शकते



6) केंद्राची कामे घटक राज्याकडे सोपवणे :

संविधान कलम 258 नुसार केंद्र सरकार आपले काही कार्य घटक राज्यांकडे सोपवू शकते. केंद्राने सोपवलेली कार्य घटक राज्यांना पार पाडणे बंधनकारक करण्यात आली आहेत.

7) अखिल भारतीय नोकर भरती :

केंद्र सरकार घटक राज्यांचा प्रशासकीय कारभार सुरळीत पार पाडण्याकरिता लोकसेवा आयोगा मार्फत नोकर भरती करून त्यांची घटक राज्यात प्रशासकीय अधिकारी म्हणून नियुक्ती करते. या कर्मचाऱ्यांना केंद्र सरकारचे अधिकार असतात. त्यांच्या विरुद्ध घटक राज्य कार्यवाही करू शकत नाही.

8) घटक राज्याकरिता प्रशासकीय प्रमुखांची नेमणूक :

केंद्र सरकार घटकराज्याचा प्रशासकीय प्रमुख म्हणून राष्ट्रपतीद्वारे राज्यपालाची नियुक्ती करते. राज्यपाल त्या घटकराज्यातील सर्व प्रशासनावर नियंत्रण ठेवीत असल्यामुळे घटक राज्यात शांतता प्रस्थापित होवून प्रशासकीय कार्यभार सुरळीत चालतो.

9) घटक राज्यातील आणीबाणीचे नियोजन :

घटक राज्य संविधानानुसार शासन चालवित नसेल तर राज्यपालाच्या अहवालानुसार राष्ट्रपती कलम 356 नुसार घटक राज्यात आणीबाणी लागू करू शकतात. घटक राज्यातील कायदेमंडळ बरखास्त करून सर्व कार्यकारी सत्ता राष्ट्रपतीचा प्रतिनिधी म्हणून राज्यपालाकडे येते.

ब) आर्थिक संबंध :

केंद्र व घटक राज्य यांच्यात आर्थिक संबंध हे परिस्थितीनुसार निश्चित करण्यात आले आहेत. यामध्ये केंद्र व घटक राज्य यांना आपापली आर्थिक उत्पादनाची साधने विभागून दिलेली आहेत. तसेच संविधानाने कांही कर पूर्णपणे केंद्राच्या स्वाधीन केले आहेत. तर काही पूर्णपणे घटक राज्याच्या स्वाधीन करण्यात आले आहेत. परंतु काही कर केंद्र सरकार लावते व त्याची वसूली मात्र राज्य शासनाला करावी लागते. काही कर केंद्र सरकार वसूल करते त्यातील काही हिस्सा घटक राज्याला दिला जातो. केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील आर्थिक संबंधांचे स्वरूप पुढील प्रमाणे मांडता येते.

1) केंद्राच्या आर्थिक उत्पन्नाचे घटक :

केंद्र सरकारला राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय आयात-निर्यात कंपनी कर, मादक द्रव्यावरील कर, अकवारी कर, रेल्वे भाडे, विमान वाहतूक, टपाल वाहतूक, दूरसंचार इत्यादी कर प्राप्त हातो.

2) घटक राज्याच्या आर्थिक उत्पन्नाचे घटक :

घटक राज्यांना स्थानिक पातळीवरील शेतसारा, घरभाडे, खरेदी विक्री कर, खाणीवरील कर, औषध विक्री व उत्पादनावरील कर, व्यापार व मनोरंजनावरील कर, सीमा शुल्क इत्यादी घटकातून आर्थिक उत्पादन प्राप्त होते.

3) केंद्र सरकारद्वारे कर निश्चिती, परंतु घटक राज्याकडून वसुली :

संविधानातील कलम 268 नुसार कांही कर केंद्र सरकारला लावता येतात. पण या कराची वसुली घटक राज्य करते उदा. औषधे व सौंदर्य प्रसाधने यावरील कर, मुद्रांक शुल्क या कराची वसुली करण्याचे काम घटक राज्याला करावे लागते व जमा झालेला कर केंद्र सरकारला पाठवावा लागतो.



4) केंद्राच्या उत्पादनावरील कांही भाग घटकराज्यांना देणे :

संविधानातील कलम 270, 271, 272 नुसार ज्या उत्पादनाच्या बाबी केंद्राकडे देण्यात आल्या आहेत त्यातून मिळणाऱ्या उत्पादनाचा कांही भाग घटकराज्यांना देता येतो. ही वाटणी वित्त आयोगाच्या शिफारशीनुसार संसद करते.

5) घटक राज्यांना आर्थिक अनुदान देणे :

राज्यघटनेतील कलम 275 नुसार घटक राज्यांना केंद्राच्या आर्थिक मदतीची आवश्यकता असल्यास संसद आर्थिक अनुदान घटक राज्याला देवू शकते. अनुसूचित जातीच्या विकासासाठी घटक राज्य केंद्राच्या पूर्वपरवानगीने कांही योजना राबवत असेल तर त्या योजनावर होणारा खर्च केंद्र सरकारच्या संचित निधीतून दिला जातो.

6) आर्थिक आणीबाणी :

राज्यघटनेच्या कलम 360 नुसार जर देशातील आर्थिक स्थिती धोक्यात आली असेल तर राष्ट्रपती आर्थिक आणीबाणी घोषित करतात. आणीबाणी घोषित झाल्यानंतर घटक राज्याच्या आर्थिक अधिकारावर केंद्राचे वर्चस्व निर्माण होते. केंद्रासह घटक राज्यात नोकरदारांचे वेतन कपात केले जावू शकते.

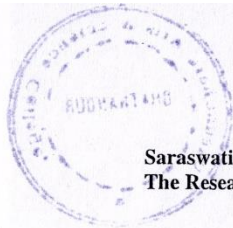
संशोधनाचे महत्त्व :

प्रस्तुत विषयाच्या संशोधनामुळे केंद्र आणि घटक राज्य यांच्यामधील प्रशासकीय आणि आर्थिक संबंध कोणत्या स्वरूपात आहेत. या संबंधामध्ये केंद्र घटक राज्यावर कोणत्या स्वरूपाचे बंधन घालू शकते याची जाणीव होऊन त्याचे महत्त्व स्पष्ट होते. त्याच बरोबर केंद्राचे आदेश घटक राज्यांना का पाळावे लागतात याची ही जागृती घडून येते. थोडक्यात केंद्र व घटक राज्य यांच्यात प्रशासकीय व आर्थिक संबंध कशाप्रकारचे संबंध प्रस्थापित झालेले आहेत हे सदरील अध्ययन विषयातून लक्षात येते.

सारांश : केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंध हे घटनेत नमुद केलेल्या कलमानुसार निश्चित करण्यात आले आहेत. त्याच्याच आधारे केंद्र व घटक राज्य यांच्यातील संबंधाची कार्यवाही सातत्याने चालू असलेली दिसून येते.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- 1) काचोळे दा.धो., समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, 2005.
- 2) घाटोळे रा.ना., संशोधन पध्दती आणि तत्वे, मंगेश पब्लिकेशन्स, नागपूर, 2003
- 3) गंदेवार एस.एन., सामाजिक संशोधन पध्दती, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2006.
- 4) जोशी सुधाकर, भारतीय शासन आणि राजकारण, विद्याबुक्स पब्लिशर्स, औरंगाबाद, 2003.
- 5) कुलकर्णी सुधाकर, शासन आणि राजकारण, अभिजित पब्लिकेशन, लातूर, 2003.
- 6) डॉ.कुलकर्णी विजयकुमार गो., भारतीय संविधान : शासन आणि राजकारण, कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद, 2004.
- 7) सोलापूरे राजशेखरे/म्हेत्रे डी.एच., भारतीय शासन आणि राजकारण, अरुणा प्रकाशन, लातूर, 2009.



**Saraswati
The Research Journal**

Special Issue
Internal and Global Politics : Issues and Areas

Editorial Board
Prof. M.A. Paithankar
In-charge Principal
Prof. M.M. Gaikwad
Vice-Principal
Dr. P.P. Deo
Vice-Principal

Executive Editor of this issue
Prof. N.B. Aghav
Head, Department of Political Science

Please Note

- The views expressed in this publication are purely personal judgments of the contributors and do not reflect the views of SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra or the editorial board of the research journal.
- No part of this publication may be reproduced or copied in any form by any means without prior written permission.
-

ISSN 2229 – 5224

© All rights reserved

Email feedback to sbescollegeac@yahoo.com

Published and Typesetting
SBES College of Arts and Commerce, Aurangabad, Maharashtra Printed

Principal
SBES College of Arts and Commerce
Aurangabad Dist. Beed 431 001



यशवंतराव चव्हाण यांचे ललित साहित्य

डॉ. खाडप संजय बाबुराव

(मराठी विभाग प्रमुख)

वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर
ता. अंबाजोगाई, जि.बीड.

प्रस्तावना

आधुनिक मराठी वाङ्मय साहित्यात ललित साहित्य हा प्रकार अतिशय प्रचलीत झाला आहे. ललित साहित्य लेखकांच्या प्रतिभेतून, कल्पना शक्तीतून निर्माण होते, ललित साहित्यात घडलेल्या घटनांचे व वास्तविक परिस्थितीचे वर्णन, व्यक्तीची कार्ये, प्रसंग, व्यक्तीने स्वतःच्या जीवन कार्याचे लिखित केलेले अनुभव इत्यादी, लिखित कृतीचा समावेश ललित साहित्यात होतो. या ललित साहित्यात विपुल भर घालण्याचे कार्य संयुक्त महाराष्ट्राच्या निर्मितीचे प्रणेते महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण यांचे मोलाचे योगदान लाभलेले दिसून येते.

यशवंतराव चव्हाण यांचा जन्म सातारा जिल्ह्यातील देवराष्ट्र या गावी झाला. त्यांना लहानपणापासूनच लिहिणे, वाचणे व नेतृत्व करण्याची आवड होती. त्यांनी बी.ए.एल.एल.बी. चे शिक्षण घेतले. त्यांची कुशाग्रबुद्धी, उदारमतवादी धोरण, पुरोगामी विचार सरणी आणि मनमिळावू स्वभाव यामुळे त्यांचा मीत्र परिवार विपुल प्रमाणात दिसून येतो. त्यांच्या अंगी असलेली देशभक्ती नेतृत्वगुण आणि गांधीजींच्या विचाराने प्रभावीत होवून ते राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षाचे सक्रिय कार्यकर्ते बनले. त्यांनी स्वातंत्र्याच्या अनेक चळवळीत व अंदोलनामध्ये सक्रिय सहभाग घेतलेला दिसून येतो. त्यांनी ब्रिटिश सत्तेच्या विरोधात भाषणे दिली त्याबद्दल त्यांना तुरुंगवासाची शिक्षाही भोगावी लागल्याची दिसून येते. यशवंतराव चव्हाण यांची कुशाग्र बुद्धी, जन संघटन पध्दत, देशाकरीता स्वार्थत्याग, राजकीय संघटन आणि नेतृत्व यामुळे ते राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षातील वरिष्ठ नेत्यांचे नेतृत्व यामुळे ते राष्ट्रीय काँग्रेस पक्षातील वरिष्ठ नेत्यांचे विश्र्वागू नेते बनले. त्यांच्या या कार्यांचे फलित म्हणून ते महाराष्ट्र राज्याचे पहिले मुख्यमंत्री झाले. तसेच ते पुढे केंद्रीय मंत्री मंडळात संरक्षणमंत्री, गृहमंत्री, वित्तमंत्री, परराष्ट्र मंत्री इत्यादी मंत्री पदावर विराजमान झाले.

यशवंतराव चव्हाण हे राजकीय क्षेत्राशी निगडित असले तरी त्यांनी लिहिणे, वाचणे, मराठी भाषा कार्यक्रम, साहित्य संमेलन यांना उपस्थित राहणे, हा छंद सोडला नाही. ते उत्कृष्ट साहित्यिक व रसिक होते. त्यांचे अनेक लेखक, कवी, साहित्यिक मित्र असलेले दिसून येतात. या सर्व लेखक मित्रांनी यशवंतराव चव्हाण यांचे राजकीय कार्य, गोर-गरीब जनते विषयची आत्मीयता, त्यांचा मराठी भाषा विषयचा स्वाभिमान, त्यांचे ग्रामीण जीवन व कृषि विषयाचे विचार यांचे वेगवेगळ्या पुस्तकात सखोल लिखान झालेले दिसून येते. तसेच यशवंतराव चव्हाण यांचे डॉंगर, दर्या, नदी पर्वत आणि निसर्ग सृष्टी विषयाचे असलेले आकर्षण, त्यांनी मराठी साहित्य संमेलनात घेतलेला सहभाग, संमेलनात मराठी भाषा संबंधी मांडलेले विचार इत्यादी विषयाला अनुसरून पुस्तकांची निर्मिती केलेली दिसून येते. या सर्व लिखित पुस्तकांनी व ग्रंथांनी मराठीच्या ललित साहित्यात भर घातलेली दिसून येते.

यशवंतराव चव्हाण यांनी लिहिलेल्या आत्मचरित्र, यूगंतर, 'यहयाद्रीचेवारे' कृष्णाकाठी, ऋणानुबंध ह्या सर्व साहित्यामध्ये त्यांनी आपल्या जीवनातील अनुभव, सामाजिक व राजकीय कार्यांचे स्वरूप कार्यकारी असताना स्याळ, काळ व परिस्थितीचे वर्णन, बालपण, मित्रपरिवार, नातेसंबंध, ग्रामीण जीवन इत्यादींच्या आठवणी व परिस्थितीचे वास्तविक स्वरूप यांची मांडणी केलेली दिसून येते. त्यांनी आपल्या राजकीय,



सामाजिक व आर्थिक विषयावरील निवडक भाषणांची मांडणी सहयाद्रीचेवारे या ग्रंथामध्ये केली आहे. त्यांनी या ग्रंथाची विभागणी तीन खंडात केली आहे. या ग्रंथात त्यांनी मानवाला जीवन जगत असताना येणाऱ्या समस्या त्यावर कराव्या लागणाऱ्या उपया योजना, त्यावरील शासनाचे कार्य इत्यादींच्या माध्यमातून ग्रामीण जीवन व समुद्रयाचे स्वरूप कलात्मक पध्दतीने मांडलेले जानवते. युगांतर या साहित्य कृतीच्या ललित साहित्यात समावेश झालेला दिसून येतो.

यशवंतराव चव्हाण यांनी सामाजिक, राजकीय व आर्थिक घटकांवर जी भाषणे केली आहेत. या भाषणात बहुतांशी भाषणे ही ग्रामीण जीवनाच्या प्रश्नांशी निवडीत आहेत, या भाषणांमध्ये त्यांनी ग्रामीण भागाची सामाजिक, आर्थिक व राजकीय परिस्थिती वस्तुनिष्ठ स्वरूपात मांडली आहे. त्यांच्या भाषणाचा आशय सदरील ग्रंथात मांडलेला आहे. लिखित भाषणाच्या आशय ललित साहित्याचा भाग जानवतो. यशवंतराव चव्हाण यांचा 'कृष्णाकाठ'.

हा कविता संग्रह ग्रामीण जीवनाच्या वास्तव परिस्थितीशी निगडीत आहे. त्यांनी या कविता संग्रहमध्ये देवराष्ट्र गावा जवळील कुंडल गावाचे वर्णन केलेले आहे. त्यांनी या काव्य संग्रहात कुंडल गावाचे स्वरूप तेथील लोकांमधील आत्मीयता, जीवन जगण्याची पध्दती नैसर्गिक पर्यावरण गावकऱ्यांवर कृष्णा नदीच्या व सहयाद्रीचा पडलेला प्रभाव इत्यादी घटकांचे वस्तुनिष्ठ व कल्पना शक्तीतून केलेले वर्णन दिसून येते. त्यांनी कृष्णाकाठ या काव्य संग्रहात केलेल्या काव्यात्मक लिखानाने ललित साहित्यात भर घातलेली दिसून येते.

यशवंतराव चव्हाण यांचे चारित्र, जीवन इतिहास यांचे अग्रलेख, ग्रामीण व सामाजिक जीवनावरील निबंध इत्यादी प्रकारच्या लिखित साहित्याचा समावेश ललित साहित्यात होतो. यशवंतरावांचे ग्रामीण जीवनाचे लेखन आणि राजकीय कार्यांच्या नियोजनाची मांडणी अशा दोन्ही प्रकारच्या लिखित साहित्याची काही वैशिष्ट्ये ललित साहित्यात आढळतात. त्यांनी लिखानाच्या माध्यमातून आपल्या व्यक्तीमत्वाचा ठसा ललित साहित्यात निर्माण केलेला दिसून येतो. यशवंतरावांची भाषण शैली, भाषणाचा आशय आणि विचार यांची मांडणी ललित साहित्यात होते.

यशवंतराव चव्हाण यांनी सहयाद्रीचे वारे या साहित्यानंतर 'युगांतर' ही दुसरी साहित्यकृती निर्माण केली. या साहित्य कृतीत चव्हाण यांच्या संकलीत करण्यात आलेल्या भाषणांची पार्श्वभूमी आणि विचारधारा यांचा समावेश आहे. या साहित्य कृतीचे प्रमुख वैशिष्ट्ये म्हणजे यात सामाजिक व राजकीय भाषणातील वैचारीक भाषणांचीच मांडणी आहे. त्यामुळे युगांतर ही वैचारिक भाषणांचीच साहित्य कृती आढळून येते.

'युगांतर' या भाषण संग्रहात महाराष्ट्र राज्याच्या स्थापनेनंतर महाराष्ट्राचे सामाजिक, आर्थिक आणि राजकीय घटकात भावनात्मकदृष्ट्या संवर्धन करणे आणि त्यासाठी कराव्या लागणाऱ्या प्रयत्नांची दिशा यांचे मार्गदर्शन करण्यात आले आहे. 'युगांतर' या साहित्याची पूर्णतः मांडणी आणि भाषा व विचार ललित साहित्यात आढळून येते. यशवंतरावांची भाषा शैली आणि विचाराचे स्वरूप ललित साहित्याचे आहे. याची जाणीव त्यांनी भाषणात मांडलेल्या नव्या हिंदूस्थानच्या ध्येय धोरणाचे स्वरूप, लोकांच्या आशा, आकांक्षा, राष्ट्रीय स्तरावर होणारा विकास त्याच बरोबर हिंदूस्थान पुढे आज उभ्या असलेल्या अनेक ज्वलंत समस्यांचे उत्कृष्ट चित्रण 'युगांतर' मध्ये करण्यात आलेले दिसते.

मराठी ललित साहित्यात यशवंतराव चव्हाण यांचे ग्रामीण स्तरापासून राष्ट्रीय स्तरापर्यंत सर्वच घटकाशी संबंधीत मुद्द्यांचा समावेश झालेला आढळून येतो. त्याचबरोबर त्यांनी मांडलेले वैचारीक लेख आणि भाषणांचा आशय हे ललित साहित्याच्या वैशिष्ट्यांमध्ये आढळून येतात. यशवंतरावांनी केलेल्या अनेक भाषणातून स्वातंत्र्यप्राप्ती नंतरच्या हिंदूस्थानाचे प्रश्न, त्यांचे विशिष्ट वातावरण हे सर्वच घटक स्वातंत्र्यपूर्वीच्या काळापेक्षा वेगळ्या आणि नविन स्वरूपात आहे. हिंदूस्थानात सुरु झालेल्या नव्या युगाचे प्रतिक म्हणजे युगांतर होय. युगांतराची संपूर्ण कलाकृती ललित साहित्यात आढळून येते. ललित साहित्याचे स्वरूप, रचना, आशय आणि वैशिष्ट्य ही सर्व मांडणी व लक्षणे युगांतर या ललित साहित्याचे स्वरूप आहेत.



ललित लेखन हा यशवंतराव चव्हाण यांचा आवडता वाङ्मय प्रकार आहे. हा वाङ्मय प्रकार आत्मनिष्ठ स्वरूपाचा असतो ललित लेखन या वाङ्मय प्रकारात त्यांनी आत्मलेखनात्मक प्रवासवर्णनपर व्यक्तिचित्रणात्मक आठवणी, चरित्रात्मक लेख, वैचारिक लेखन, पत्रात्मक वाङ्मय इत्यादी स्वरूपातील लेखन केले आहे. त्यांच्या कृष्णाकाठ, ऋणानुबंध, युगांतर, भूमिका, शिवनेरीचे नौवती, विचारधारा, विदेशदर्शन, यशवंतराव चव्हाण शब्दाचे मामर्थ्य, सह्याद्रीचे वारे इत्यादी ग्रंथातून त्यांच्या ललित साहित्याचा आपल्याला परिचय होतो. त्यांचे ललित लेखन हे वृत्तपत्रे, नियतकालिक, पुरवण्या, दिवाळी अंक, विशेषांक, स्मरणिका, अभिनंदनपर ग्रंथ इत्यादीतून प्रसिध्द झालेले दिसते.

यशवंतरावांच्या ललित लेखनात साचेबद्ध स्वरूप न ठेवता मुक्तपणे लेखन केले आहे. त्यांच्या लिखनात विविधता आहे. त्यांच्या मानिध्यात आलेल्या व्यक्तीवरील त्यांचे लेख महत्वपूर्ण आहेत. मानिध्यात आलेल्या व्यक्तीच्या निमित्ता एखादा विचार, एखादे तत्व ही ते लिखनात मांगताना आढळतात. यशवंतरावांच्या मानिध्यात आलेल्या व्यक्तीच्या निमित्ताने एखादा विचार एखादे तत्वही ते मांगतात यावरून त्यांचा जनसंपर्क मोठा होता हे दिसून येते. त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा मुक्त अविष्कार हे त्यांच्या ललित लेखनाचे वैशिष्ट्ये आहे. त्यांच्या ललित लेखनाला भावनेचे बूड असल्यामुळे ते लेखन काव्यात्मतेकडे झुकले दिसून येतात. त्यांच्या ललित लेखनात मानव व जीवन यावरील प्रेम, जीवनातील अनुभव स्वतः विषय प्रांजळपणे व मोकळ्या पणाने बोलण्याची वृत्ती इत्यादी वैशिष्ट्ये त्यांच्या ललित लेखनात आहेत.

यशवंतराव चव्हाण यांच्या व्यक्तीमत्वावर चिंतनशिलता, काव्यात्मकता, निखळ मौंदर्यदृष्टी, अंतर्मुखता, इत्यादी गुण ललित लेखनात उतरले आहेत. मात्र सागरतट व यमुनाकाठ या कथांनी त्यांच्या जीवनातील बालपण ते प्रौढ जीवनापर्यंतचा प्रवास साकारला आहे. त्यांनी आत्मचरित्र निर्मितीसाठी प्रतिभाशक्ती, स्मरणशक्ती, कल्पकता व संवेदनशील आणि मार्मिक शब्दात मांडलेले दिसून येतात.

सारांश

यशवंतराव चव्हाण यांच्या ललित साहित्याच्या माध्यमातून त्यांचा जीवन परिचय, त्यांचे सामाजिक व आर्थिक विकामासंबंधीचे कार्य, त्यांचा राजकीय जीवनपट, इत्यादीचा परिचय होत आहे. त्यांनी लिखित केलेल्या साहित्याला उजाळा मिळत आहे. त्यांची लिखन करण्याची पध्दत लिखनातील मांडणी, विचाराची प्रगल्भता याची जाणिव होत आहे. यशवंतराव चव्हाण यांनी बालपण ते प्रौढ जीवनापर्यंत केलेल्या कार्यांचे स्वरूप, कार्यांचे नियोजन, कार्यकारी असताना आलेले अनुभव इत्यादीची मांडणी ललित साहित्याच्या माध्यमातून केलेले दिसून येते.

संदर्भग्रंथ सूची

- 1) पाटील रा.तु. 'यशवंतराव चव्हाण एक कर्तव्यगार पण वादग्रस्त मुत्सद्दी' प्रतिमसिंग प्रकाशन, पुणे.
- 2) चंपानकर प्रदिप - 'यशवंतराव चव्हाण आत्मचरित्र' रोहन प्रकाशन पुणे.
- 3) उल्हास उठाण - 'यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्राचा आशय' प्रतिमा पब्लिकेशन्स, पुणे.
- 4) <https://www.bookganga.com>.
- 5) <https://www.yeis.ac.in>.
- 6) www.wikipedia <<http://www.wikipedia>>
- 7) भोळे भास्कर लक्ष्मण - यशवंतराव चव्हाण राजकारण आणि साहित्य, संकेत प्रकाशन, औरंगाबाद.
- 8) देशमुख शिवाजीराव - शैलीदार यशवंतराव कौशल्य पब्लिकेशन्स, सोलापूर.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
A. Ambajogai Dist. Beed 431519

Peer reviewed Journal

Impact Factor:7.265

ISSN-2230-9573



Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

December-2021 | Volume-12 | Issue-23

Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar – Thoughts and works

Chief Editor

Dr. B. R. Ambedkar
'Ravichandram' Survey No-101/1,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)

Editor

Mr. Shashikant
Chhatrapati Shivaji Maharaj
Kalamb, Dist. Orosandi, Maharashtra

Executive Editor

Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap



PRINCIPAL

Vaṣundhara College, Amratnand
a. Ambajogai Dist. Beed 43151

Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102



Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

December-2021 Volume-12 Issue-23

On

***Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and
Dr. B. R. Ambedkar – Thoughts and works***

Chief Editor Dr. R. V. Bhole 'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102	Editor Mr. Shashikant Jadhwar I/C, Principal, Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya, Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India
--	--

Executive Editor
Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap

EDITORIAL BOARD

Prof. R. J. Varma ,Bhavnagar [Guj] Dr. D. D. Sharma, Shimla [H.P.] Dr. Abhinandan Nagraj, Benglore[K] Dr. Venu Trivedi ,Indore[M.P.] Dr. Chitra Ramanan Navi ,Mumbai[MS]	guyen Kim Anh, [Hanoi] Vietnam Prof. Andrew Cherepanow, Detroit, Michigan [USA] Prof. S. N. Bharambe, Jalgaon[M.S] Dr. C. V. Rajeshwari, Pottikona [AP] Dr. S. T. Bhukan, Khiroda[M.S]	Dr. R. K. Narkhede, Nanded [M.S] Prof. B. P. Mishra, Aizawal [Mizoram] Prin. L. N. Varma ,Raipur [C. G.] Prin. A. S. Kolhe Ehalod[M.S] Prof.Kaveri Dabholkar Bilaspur [C.G]
---	--	--

Published by- Mr. Shashikant Jadhwar, I/C, Principal, Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya, Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

**The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall
be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.**

© All rights reserved with the Editors



17	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचा दलित कवितेवरील प्रभाव प्रा.दुर्गा शरद भिसे.	66-70
18	सशक्त समाज निर्मितीसाठी राजर्षी शाहू महाराजांचे कार्य प्रा.डॉ.पडवळ व्ही.के.	71-73
19	महिला सक्षमीकरण या विषयावर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार व कार्य : १४ एप्रिल १८९१ - १९५६ प्रा.गुट्टे शिवकांता वैजनाथ	74-76
20	राजर्षी शाहू महाराजांचे शिक्षण विषयक विचार व कार्य प्रा. डॉ. विलास भगवानराव भिल्लारे	77-78
21	महात्मा फुले,छत्रपती शाहू महाराज यांचे शिक्षणविषयक विचार: प्रा.कविता किसनराव काटे	79-84
22	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा स्त्री सवलीकरण विषयक दृष्टिकोन - एक नवा दृष्टिक्षेप डॉ. संतोष बाबरे	85-88
23	महात्मा ज्योतिबा फुले : स्त्रियांचे उद्धारक डॉ. वर्षा तात्यासाहेब सरवदे	89-91
24	महात्मा ज्योतिबा फुले समाज क्रांतीचे जनक डॉ. नामानंद गौतम साठे	92-94
25	डॉ.बाबासाहेब दलित आंबेडकरांचे साहित्याला योगदान दर्शना आर .चावडा	95-97
26	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि लोकशाही . एक चिंतन प्रा. बैनवाड स्वाती प्रकाशराव	98-99
27	महात्मा ज्योतिबा फुले - सत्यशोधक चळवळ एक सामाजिक क्रांती डॉ सुभाष लक्ष्मण म्हात्रे	100-102
28	महात्मा फुलेचे शेतीविषयक विचार डॉ. आढाव अनिता सदाशिव	103-107
29	समाजक्रांतीचे जनक : महात्मा ज्योतिराव फुले डॉ के एस खैरनार	108-110
30	भारतीय संविधाना समोरील आव्हाने व उपाय डॉ कुंदा बाळासाहेब कवडे	111-116
31	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार डॉ.भागवत पांडुरंग ठाकूर	117-119
32	महार वतन आणि अस्पृश्यांची गुलामगिरी डॉ .जनार्दन श्रीकांत जाधव	120-124
33	विचारवंत आणि सुधारक छत्रपती शाहू महाराज डॉ खाडप संजय बाबुराव	125-127
34	महात्मा फुले : वाङ्मय आणि कार्य प्रा डॉ देशमुख बिभीषण	128-131



विचारवंत आणि सुधारक छत्रपती शाहू महाराज

डॉ. खाडप संजय बाबुराव

मराठी विभाग प्रमुख वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर ता. अंबाजोगाई, जि. बीड

प्रस्तावना :

लोकहितवादी, जाणता राजा छत्रपती शाहू महाराज यांचा जन्म कोल्हापूर संस्थानातील कागलगाव येथे घाडगे कुटुंबात झाला. त्यांचे वडील आबासाहेब व आई राधाबाई घाडगे होय. त्यांना कोल्हापूर संस्थानिकाचे राजे छत्रपती शिवाजी महाराज व महाराणी आनंदीबाई यांनी दत्तक घेतले. त्यांचा राज्यरोहण 17 मार्च 1894 रोजी झाला त्यांनी 2 एप्रिल 1894 पासून राज्याच्या कारभाराची सर्वे सुत्रे आपल्या हाती घेतली.

छत्रपती शाहू महाराजांची विचार सरणी आणि कार्ये प्रखंड होते. त्यांनी तत्कालीन समाजातील अनिष्ट प्रथा, परंपरा आणि सामाजिक भेदभाव संपुष्टात आणण्याकरिता कठोर कायदे केले. त्याच बरोबर त्यांनी संस्थानातील कारभार पारदर्शक आणि सामान्य नागरीकांना त्याय मिळवून देण्याकरिता सर्वच जाती धर्मातील स्त्री-पुरुषांना सत्तेत सहभागी होता यावे, याकरिता आरक्षणाची सुविधा केली. शाहू महाराजांनी सर्वच जनतेच्या विकासा करिता शैक्षणिक सुविधा, शैक्षणिक कायदे, अस्पृश्यता निर्मुलन कायदे, अस्पृश्यांना राजकीय व शासकीय कार्यात सहभाग, स्त्रीयांना, पुरुषासमान अधिकार, जातीभेद निर्मुलनाचे धोरण इत्यादीचे विचार प्रखंड मांडून त्या धोरणाची अंमलबजावणी चोख व्हावी, या करिता कायदे केले. कायद्याचे पालन व्हावे, या करिता स्वतः त्यावर नियंत्रण ठेवले. अशा जनहितवादी शाहू महाराजांच्या विचारांचा आणि कार्यांचा आढावा घेण्याच्या हेतूने सदरील शोध निबंधाच्या मांडणी करिता पुढील प्रमाणे संशोधनाच्या उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली आहे.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- 1) छत्रपती शाहू महाराजांच्या जीवन कार्याचा अभ्यास करणे.
- 2) छत्रपती शाहू महाराजांचा वैचारीक दृष्टीकोन समजून घेणे.
- 3) छत्रपती शाहू महाराजांच्या सुधारणा विषयक कार्याचा अभ्यास करणे.
- 4) छत्रपती शाहू महाराजांच्या विचार आणि सुधारणांचा परिणाम अभ्यासणे.

प्रस्तुत संशोधनाच्या उद्दिष्टांच्या अध्ययनाकरिता पुढीलप्रमाणे गृहितकृत्यांची मांडणी करण्यात आली आहे.

गृहीतके :

- 1) छत्रपती शाहू महाराजांच्या विचारांचा आणि कार्यांचा प्रभाव महाराष्ट्रातील विचारवंतांवर दिसून येतो.
- 2) देशाच्या विकास प्रक्रियांवर छत्रपती शाहू महाराजांच्या विचार आणि कार्यांचा प्रभाव आहे.
- 3) पुरोगामी महाराष्ट्राच्या निर्मितीत छत्रपती शाहू महाराजांच्या विचार आणि कार्यांचे योगदान आहे.
- 4) सदरील गृहितकृत्यांच्या पडताळणीकरिता खालीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधन विषयाच्या अध्ययनाकरिता प्रामुख्याने दुय्यम स्त्रोतांचा अवलंब करण्यात आला आहे. या मध्ये प्रामुख्याने संशोधन विषयाला अनुसरून विविध संदर्भग्रंथ, मासिके, वृत्तपत्रातील लेख, अप्रकाशित झालेले एम.फिल., पीएच.डी. चे प्रबंध. इत्यादींचा अवलंब करण्यात आला. त्याचबरोबर इंटरनेटचाही वापर करण्यात आला आहे. सदरील संशोधन विषयाच्या मांडणी करिता पुढील प्रमाणे संशोधन आराखडयाचा अवलंब करण्यात आला.



संशोधन आराखडा :

सदरील संशोधन विषयाच्या मांडणीकरिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला. यामध्ये दुय्यम स्त्रोतातील तथ्यांचे वर्णन शाब्दिक स्वरूपात करण्यात आले.

विषय प्रतिपादन :

राजर्षी शाहू महाराजांनी समाजातील अंधश्रद्धा दूर करण्याच्या दृष्टीने शिक्षणासंबंधी विचार मांडले. त्यांनी शिक्षणाचा विचार मांडीत असताना स्त्री-पुरुष यांना सामान अधिकार दिला. त्याचबरोबर त्यांनी सर्व जाती धर्माच्या व्यक्तींना शिक्षण घेता यावे 28 मार्च 1884 रोजी डेक्कन एज्युकेशन सोसायटीची स्थापना केली. तर 18 एप्रिल 1901 रोजी व्हिक्टोरिया मराठा बोर्डिंगची स्थापना केली. त्याचबरोबर त्यांनी अस्पृश्यांच्या मुला-मुलींकरिता बोर्डिंग वीरशैव लिंगायत वसतीगृह, मुस्लीम बोर्डिंग, मिस क्लार्क हॉस्टेल, पांचाळ, ब्राम्हण वसतीगृह, इंडियन व्निथ्रन हॉस्टेल, इत्यादीची स्थापना केली. त्यांनी गरीबांच्या मुलांना महज व सुखकर शिक्षण मिळावे या करिता 19 सप्टेंबर 1917 रोजी मोफत व सक्तीच्या शिक्षणाची सुविधा निर्माण केली. त्यांच्या शैक्षणिक कायामुळे आज सर्वत्र त्यांच्या शैक्षणिक विचार आणि कार्याचा प्रभाव दिसून येत आहे. समाजात परंपरेने चालत आलेल्या धार्मिक रूढी, परंपरा मोडण्याकरिता शाहू महाराज यांनी अस्पृश्यता निर्मुलनावर अधिक भर दिला. त्यांनी या करिता अस्पृश्यांना शासकीय नोकरीमध्ये आरक्षण दिले. त्यामुळे ब्राम्हण, अस्पृश्य, मवर्ण इत्यादी समाजामध्ये असलेला भेदभाव संपुष्टात आणण्याकरिता प्रखंड दिशा मिळाली. या त्यांच्या कृतीमुळे वर्तमान काळात अस्पृश्यता निर्मुलन कायदे अस्तीत्वात आलेले दिसून येत आहेत. संस्थानातील गरीब जनतेचा आर्थिक विकास घडून यावा, या करिता शाहू महाराजांनी अस्पृश्यांना लघू उद्योगाची सुविधा निर्माण करून दिली. यामध्ये चहाचे हॉटेल, पान सेंटर, किराणा दुकान, दुग्ध व्यवसाय, इत्यादी करिता आर्थिक मदत ही केली. शाहू महाराजांचे विचार हे सर्वत्र क्षेत्रात प्रखंडपणे दिसून येतात. त्यांनी राजकीय घटकांचा विचार करून सर्वत्र स्त्री-पुरुष, जाती-धर्माच्या व्यक्तींना वेगवेगळ्या संघटना व मंडळावर नियुक्त करण्यात आले. त्यामुळे राजकीय क्षेत्रात सर्वांचाच सहभाग वाढला. प्रत्येकांच्या विचाराला महत्व प्राप्त झाले. त्यामुळे स्त्रीया व अस्पृश्यावर होणाऱ्या अन्यायाला पायबंद बसला. त्यांना राजकीय घटकातून राजकीय, सामाजिक, कौटुंबिक, आर्थिक, स्वातंत्र्य मिळाले. शाहू महाराजांच्या राजकीय घटकांच्या विचाराचा आणि कार्याचा परिणाम स्वातंत्र्योत्तर काळात राजकीय घटकावर मोठ्या प्रमाणात दिसून येत आहे.

शाहू महाराजांनी समाजाच्या उपजिवीकेचे साधन शेती हे ओळखून शेती उद्योगाचा विकास करण्याकरिता सुक्ष्म स्वरूपाचे विचार मांडले. त्यांनी आपले विचार शेती करिता, पाणी व्यवस्थापन करण्याकरिता, कोल्हापूर बंधारे, शेत विहिर, बारव, शेततळे, शेत बंधारे इत्यादीची निर्मिती करून स्पष्ट केले. त्यांनी शेती विषय केलेले कार्य आणि शेती उत्पादना संबंधीचे विचार वर्तमान काळातील राजकीय पुढारी वापरीत असलेले दिसून येत आहेत. शाहू महाराज हे कर्ते सुधार होते. त्यांचे विचार सामान्य जनतेवर पडलेले होते. शाहू महाराजांच्या विचाराचे अनुकरण जनता मोठ्या प्रमाणात करीत होती. त्यांनी केलेल्या कायद्यांचे पालन जनता स्वइच्छेने करीत असे. यामध्ये सुलीच्या शिक्षणाला प्राधान्य, स्त्रीयांना पुरुषा समान अधिकार, बालविवाह बंदी, कुमारी जरठ विवाहाला विरोध, संमती विवाहाचा पुरस्कार, विधवा पुनर्विवाहाला मान्यता, बहुपत्नी विवाहाला विरोध, मुलगा-मुलगी समानता, इत्यादी विचारांचे अनुकरण जनतेने केले आहे. म्हणूनच शाहू महाराज हे एक कर्ते सुधारक मानले जात आहेत.

शाहू महाराज कष्टकरी समाजाला दैवत मानीत होते. कारण त्यांनी श्रमाला संपत्ती मानले होते. त्यांच्या मते शेतीवरील अतिरिक्त मजुरांचे स्थलांतर होणे गरजेचे होते. त्यामुळे त्यांनी इ.स. 1918 मध्ये मजूर संघटना निर्माण करून त्यांना श्रम विक्रीचे अधिकार दिले. त्यांच्या संघटनेची स्थापना करून, मजुरांना योग्य रोजगार व सुविधा निर्माण करून दिल्या आहेत.



निष्कर्ष :

छत्रपती शाहू महाराज यांनी मांडलेल्या विचाराचा प्रभाव आजही भारतीय व्यक्तींच्या मनावर विचरत आहे. त्यांचे विचाराचे अनुकरण समाज सुधारक, राजकीय नेते, शैक्षणिक संस्था आणि शासन करीत आहे. सामाजिक सुधारणा, राजकीय व्यवस्था, शैक्षणिक सुविधा, सामाजिक एकात्मता, दुर्बल घटकांचा विकास करण्यावर भर देत आहे. शाहू महाराजांच्या कार्याचे मूल्यमापन करीत असताना स्पष्ट होते की, शाहू महाराजांचे विचार व कार्य हे वर्तमान व भविष्यातील पिढ्यांना मार्गदर्शक आणि प्रेरणादायी ठरणारे आहेत.

सारांश :

शाहू महाराज हे प्रगल्भ विचारांची शिदोरी आहे. त्यांच्या विचारात मानव आणि मानवी जीवनाचा विकास याची दिशा आहे. त्यांच्या कार्याच्या अनुकरणातून मनाला कोणत्या पध्दतीने सुखी जीवन जगता येईल, याची प्रेरणा व दिशा प्राप्त होत आहे. म्हणूनच संशोधकांनी छत्रपती शाहू महाराजांचे विचार आणि कार्य हा उदांत विषय संशोधना करिता घेतलेला दिसून येतो.

संदर्भ सूची :

- 1) डॉ. रा. ना. घाटोळे सामाजिक संशोधन पध्दती व तत्वे, मंगेश प्रकाशन नागपूर.
- 2) डॉ. काचोळे दा. धो. सामाजिक संशोधन पध्दती, कैलाश पब्लिकेशन्स औरंगाबाद.
- 3) प्राचार्य रा. तु. भगत राजर्षी शाहू छत्रपती, रिया पब्लिकेशन्स, कोल्हापूर.
- 4) डॉ. करपे आर. एन. राजर्षी शाहू महाराज आणि वर्तमानातील संदर्भ, चिन्मय प्रकाशन औरंगाबाद.
- 5) डॉ. रामभाऊ मुटकुळे महाराष्ट्राचे शिल्पकार चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद.
- 6) डॉ. आर. एस. कोडेकर रयतेचा राजा राजर्षी शाहू महाराज अरुणा प्रकाशन, लातूर.

PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519

ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor 2022: 7 . 479

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering,
Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE - XLVIII Year – 7 Feb. 2022

Editor in Chief

Mrs. Pallavi Laxman Shete

Principal, Sanskriti Public School, Nanded.(MH. India)

Email: Shrishprakashan2009@gmil.com

Director

Mr. Tejas Rampurkar

(For International contact only +91-8857894082)


Address for Correspondence

Website: www.wiidrj.com

House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple,
Taroda (KH), Nanded – 431605
(India -Maharashtra)

Email: Shrishprakashan2009@gmil.com
umbarkar.rajesh@yahoo.com

Mob. No: +91-9623979067


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Po. Ambajogai Dist. Beed 431519

Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred)

Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred) is quarterly published journal for Research scholars, teachers, businessman and scientists to integrate disciplines in an attempt to understand the complexities in the current affairs.

We also believe that both researchers and practitioners can contribute their knowledge by translating understanding into action and by linking theory and practice. This would enhance the relevance and thought in various related fields.

This Journal expected to bring together specialists in the field of commerce, economics, management and industry from different part of the world to address important issues regarding commerce, management and economics. One of the objectives of the journal is to create dialogue between scholars of various disciplines.

The editor, editorial team and the publisher do not hold any responsibility for the views expressed in **Worldwide International Inter Disciplinary Research (A Peer Reviewed Referred)** or for any error or omission arising from it.

The journal will cover the following Faculties for All Subject:

• Arts/ Humanities / Soc. Sci. / Sports	• Engineering
• Commerce	• Medical /Ayurveda
• Science	• Law
• Education	• Journalism
• Agriculture	• Mass Communication- Library sci.
• Pharmaceutical	• Social Work
• Management	• Any Other

Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International contact only +91-8857894082)

Printed by

Anupam Printers, (Subbranch: Nanded) Men Branch : Hyderabad (AP)

Cost: Rs. 400/-

Editors of Worldwide International Peer Reviewed Journal are not responsible for opinions expressed in literature published by journal.

The views expressed in the journal are those of author(s) and not the publisher or the Editorial Board. The readers are informed, authors, editor or the publisher do not owe any responsibility for any damage or loss to any person for the result of any action taken on the basis of the work (c) The articles/papers published in the journal are subject to copyright of the publisher. No part of the publication can be copied or reproduced without the permission of the publisher.

Peer-Review Committee

Dr. U. D. Joshi Principal Y. College, Ambajogai. (MH., India.)	Dr. Vasant Biradar Principal Mahatma Phule College, Ahmedpur. (MH., India.)
Dr. Joshi Prashantkumar Panditdev Department of Zoology (Fishery Science) Adarsh College, Hingoli-431513 (MH., India.)	Prof. Dr. Mahendrakumar Y. Kulkarni Head, Dept. of zoology N.S.B. Colloege, Nanded. (MH., India.)
Dr. Bibhishan Kare Rrsearch Guide, Professor and HOD Dept. of Sociology, NSB College, Nanded.	Prof. Dr. Durgadas D. Choudhari Head Dept. of Economics Mahatma Phule College, Ahmedpur. (MH., India.)
Dr. Prashant Andage Dept. of Envi. Sci Ratnagiri sub Center, Mumbai University(MH., India.)	Dr. Sanjay S. Pekamwar School of Pharmacy, SRTM University, Nanded (MH., India.)
Dr. Shivraj G. Vannale School of Chemical Sciences S.R.T.M.U. Nanded(MH., India.)	Dr. Shashikant B. Dargu Dept. Of Sanskrit N. S. B. College, Nanded(MH., India.)
Dr. Sadavarte Rajesh K. Dept. of Computer, N.S.B. College, Nanded. (MH., India.)	Dr. Subhash T. Pandit Department of Economics, S. V. Night College, Dombivli (E) (MH., India.)
Dr. Kalpana Kadam (Bedre) Dept.of Political Sci., N.S.B. College, Nanded.(MH., India.)	Dr. Vinay D. Bhogle Dept. of English Degloor College, Deglor(MH., India.)
Dr. Deshpande R. P. Dept. Zoology Sharda Mahavidyalaya, Parbhani. (MH., India.)	Dr. Sharada Bande Head, Dept. of History, S. S. Suryabhanji Pawar College, Purna (Jn.) (MH., India.)
Dr. Kamble Ratnakar Ramrao Associate Professor, Dept. of Economics, Sharda Mahavidyalaya, Parbhani(MH., India.)	Dr. Gananjay Y. Kahalekar Mahatma Jyotiba Phule Mahavidyalay, Mukhed Dist. Nanded. (MH., India.)
Dr. Prashant G. Gawali Associate Professor, Dept. of Physics Bahirji Smarak Mahavidyalaya, Basmathnagar, Dist. Hingoli (MH., India.)	Dr. Vikas Kundu Geeta College of Education Butana(kundu), Sonepat - Haryana
Prof. K. Varalaxmi Deputy Director Sanskrit Academy, Osmania University, Hyderabad.	

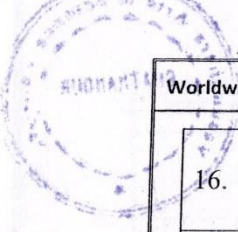
Advisor Committee

Dr. Milind V. Rampurkar Govt. Ayurved College, Mumbai. (MH., India.)	Dr. Sudhir Kokare Nanded. (MH., India.)
Dr. Sanjay G. Shirodkar Principal Swa. Sawarkar College, Beed. (MH., India.)	Prof. Dr. Chitanand M. P. Dept. Of Microbiology N. S. B. College, Nanded. (MH., India.)
Dr. Darmapurikar Bhalchandra V. Dept. of Political sci., NSB college, Nanded. (MH., India.)	Dr. Ashish Divde Head Dept. of Envi. Sci., H.J.P. Mahavidyalaya, H. Nagar. (MH., India.)
Shri. Bidrkar Shivaji College, Parbhani (MH., India.)	Dr. Anand R. Ashturkar Dept. of Envi. Sci. N.S.B. College, Nanded (MH., India.)
Adv. Yadupat Ardhapurkar Law., Nanded. (MH., India.)	Dr. Karale Nagesh Baburao Saraswati Mahavidyalaya, Kaij Dist. Beed. (MH., India.)
Dr. Nagesh R. Khadkekar SRTMU, Nanded. (MH., India.)	Dr. Jeevan Pimpalwadkar (Marathi) Research Guide, SRTMU Nanded. (MH., India.)
Dr. A.I. Shaikh Associate Professor & Head, School of Social Sciences, SRTMU, Nanded. (MH., India.)	Dr. Rajendr Jadhav Nanded. (MH., India.)
Shri Bharat Jangam Director Jangam Academy, Nepal..	Dr. Jayanth Chapla Dept of Zoology Osmania University, Hyderabad. (India)
Shri. Santkumar Mahajan Nanded. (MH., India.)	



INDEX

Sr. No.	Title of the Paper	Name of Author	Page No.
01.	APPROACH OF HOMEOPATHY IN MANAGEMENT OF NEPHROLITHIASIS	Dr. Ratnaparkhi P. M. Dr. Padmashri Nilesh Samel	01
02.	HOMOEOPATHIC MANAGMENT OF IRON DEFICIENCY ANEMIA IN CHILDREN: A REVIEW	Dr. Anagha Beedkar Dr. Mahesh Kumar Samrite	06
03.	EFFECTIVENESS OF HOMOEOPATHIC REMEDIES IN TREATING RENAL CALCULI – A CASE DISCUSSION	Dr. Suresh V. Tathe Dr. Satwick Sistu	09
04.	STUDY OF MARKETING FUNCTIONS IN PERISHABLE & NON-PERISHABLE COMMODITIES: CASE OF NANDED & PARBHANI DISTRICT	Abhishek O. Gill Dr. G.P. Mudholkar	14
05.	REVIEW ON SICKLE CELL ANEMIA: A CURRENT SCENARIO FROM DHULIA DISTRICT (M.S.), INDIA	S. S. PATOLE	32
06.	“THE GENERAL ASPECTS OF HISTOMORPHOLOGY OF VIRUSES WITH THEIR HARMFUL AND HARMLESS EFFECTS”	Namrata Rajesh Dhanajkar	38
07.	A COMPARATIVE STUDY OF PERSONALITY AMONG SECONDARY SCHOOL STUDENTS OF PRIVATE AND GOVERNMENT SECTOR	Dr. Manoj Kumar maurya Gayatri Soni	43
08.	REGIONAL PARTIES IN INDIA- ISSUES AND CHALLENGES	Hamsa Ramakrishna	53
09.	CONTRIBUTION OF BUDDHIST THINKERS FOR THE WORLDSOCIETY: AN INTRODUCTION	Dr. SONAM ZANGPO	60
10.	MULTICULTURALISM IN HARI KUNZRU'S <i>TRANSMISSION</i>	Mr. Mangesh Digambar Panchal	66
11.	ROLE OF WOMEN IN FREEDOM MOVEMENT IN INDIA: STRUGGLE & OPPORTUNITY	Gurpinder Kumar	70
12.	READING THE CHANNEL OF SKILLS	Dr. Chanchal Sharma	76
13.	'EFFECTS AND CHALLENGES OF ONLINE ADVERTISING'	Dharmendra Shakya	79
14.	IMPORTANCE OF PHYSICAL EDUCATION & YOGA IN DAILY HUMAN LIFE	Dr. Ganesh S. Solunke	81
15.	THE PORTRYAL OF INDIA AS NATION IN CRISIS IN ANANDMATH	Jadhav Jaishree Shivajirao	83



16.	STUDY OF EFFICTIVE BIOINOCULANTS ON ROOT-SHOOT BIOMASS OF SOYBEAN	Dr. Shital P. Gaikwad	87
16.	महिला सशक्तिकरण अवधारणा एवं चुनौतियाँ	डॉ. अनामिका प्रजापति	90
17.	दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लियत	रामलखन पाल	94
18.	मराठवाडा मुक्ती संग्रामातील राणीसावरंगाव परिसराचे योगदान	प्रा. डॉ. गणेश गोविंदराव माने	102
19.	नॅक मुल्यांकित महाविद्यालयीन ग्रंथालयाच्या वित्तीय व्यवस्थापनाचा अभ्यास	डॉ. घोरे गोविंद सूर्यभान प्रा. किर्दत विलास गोपीनाथराव	105
20.	राजर्षी शाहू महाराजांचे आर्थिक विचार आणि कार्य	वाघ जालिंदर पांडुरंग	109
21.	भारतातील गरीबी व दूष्काळ एक चिंतन संशोधक	अमोल अशोक हिवराळे	114
22.	शाश्वत विकासाच्या संदर्भात महात्मा गांधीच्या विचारांची प्रासंगिकता	अमोल भा. सातपुते	117
23.	भारतीय कीर्तन परंपरेचा विचार	श्री ह.भ.प.वसुदेव पाटलोबा मुंडे	123
24.	भारतात करण्यात आलेले खाजगीकरणाचे प्रयत्न व त्याच्या अडचणी	श्री पंकज पुरुषोत्तम मानकर	128
25.	माणगाव परिषद 20 मार्च 1920 ते 20 मार्च 2020 शताब्दी वर्ष	डॉ. विलास भारतराव बनसोडे	132
26.	स्वामी दयानंद सरस्वती यांच्या प्रेरणादायी विचारांचा विश्लेषणात्मक अभ्यास	डॉ. संभाजी संतोष पाटील	135
26.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक विचारांची उपयुक्तता	प्रा. डॉ. ज्ञानेश्वर नामदेव सोनवणे	140
27.	ग्रामीण भागातील अंगणवाडी सेविकांच्या समस्यांचा अभ्यास.... संदर्भ - ता. शिरूर (का).	प्रा. सय्यद अफरोज अहेमद	146
28.	रशिया युकेन युद्ध जागतिक अर्थव्यवस्थे वर परिणाम	डॉ. राजेश गंगाधरराव उंबरकर	151
29.	कौटिल्याचे राजकीय विचार	डॉ. बी. व्ही. डॉंगरे (पाटील)	156
30.	थोर समाज प्रबोधनकार राजा राममोहन रॉय यांच्या सामाजिक नेतृत्वाचा अभ्यास	डॉ. संभाजी संतोष पाटील	160



Editorial Board

<p>Dr. S.V. Shivanikar Principal N.S.B.College, Nanded. (MH., India.)</p>	<p>Dr. Deepak Dwarkadasrao Bachewar Associate Professor Vasantnaik College, Vasarni, Nanded- (MH., India.)</p>
<p>Dr. P. Neelkantrao Dept. of Economics, Pratibha Niketan Mahavidyalaya, Nanded. (MH., India.)</p>	<p>Dr. Suhas Pathak Dept. of School of Media studies S.R.T.M.U. Nanded. (MH., India.)</p>
<p>Dr.Pramod Ravindra Deshpande Wake Forest School of Medicine, Dept. of Cancer Biology, Winston Salem, NC, USA.</p>	<p>Dr. Sachin G. Khedikar Principal & Professor, Dept. of Rachana-Sharir, Shri. O. H. Nazar Ayurved College, SURAT (India.)</p>
<p>Dr Ashutosh Gupta Dept. of Sanskrit, HNB Garhwal University, Srinagar Garhwal Uttrakhand 246174 (India.)</p>	<p>Dr. Mayuresh M. Rampurkar Sardar Vallabhbbhai Patel Hospital,(Neurosurgery),Ahmedabad. (G.India.)</p>
<p>Dr. Manish Deshpande N.S.B.College, Nanded. (MH., India.)</p>	<p>Dr. Kulkarni J. N. Library sci. S.R.T.M.U.Nanded. (MH., India.)</p>

Co-Editorial Board

<p>Dr. N. N. Bandela Dept. of Envi. Science Dr.B.A.M.U. Aurangabad. (MH., India.)</p>	<p>Dr. Suman K. S. Dept. of Oriental languages, Loyola College,(Autonomous) Affiliated to University of Madras,Nungambakkam, Chennai-600034 (India.)</p>
<p>Dr. S. P. Hangirgekar Dept. of Chemistry Shivaji University, Kolhapur. (MH., India.)</p>	<p>Dr. Baswaprabhu Jirli Dept. of Extension Education, Institute of Agricultural Sci. BHU, Varanasi. (India.)</p>
<p>Smt. Martha B. Department of English, Dr. B.R. Ambedkar F.G. College, Ladgeri, Bidar, Karnataka (India.)</p>	<p>Dr. Chandan Bora Dept. Of Commerce (MH., India.)</p>
<p>Dr. Mahesh Joshi Dept. Of Education S.R.T.M.U. Nanded.(MH., India.)</p>	<p>Dr. Mangesh W. Nalkande Dept. of Kayachikitsa Govt. Ayurved College, Nanded. (MH., India.)</p>
<p>Dr. Viraj Vilas Jadhav Professor and HOD, Dept. of Rachanasharir, Shri dhanwantry ayurvedic College and hospital sector 46 B CHANDIGARH. (India.)</p>	<p>Dr. M.B. Kulkarni Govt. Medical College, Nanded. (MH., India)</p>

तंक मुल्यांकित महाविद्यालयीन ग्रंथालयाच्या वित्तीय व्यवस्थापनाचा अभ्यास

डॉ. घोगरे गोविंद सूर्यभान
ग्रंथपाल

लोकमान्य महाविद्यालय, सोनखेड, ता.लोहा, जि. नांदेड
प्रा. किर्दत विलास गोपीनाथराव
ग्रंथपाल

वसुंधरा महाविद्यालय घाटनांदुर, ता.अंबाजोगाई, जि.बीड

प्रस्तावना :

विकास प्रक्रियेत संस्था, महाविद्यालय, ग्रंथालय या प्रत्येक घटकाला आपला विकास घडवून आणण्याकरिता आर्थिक उत्पादन आणि त्याचे व्यवस्थापन घेणे महत्त्वाची प्रक्रिया आहे. विकासाच्या दृष्टिकोनातून आर्थिक घटक महत्त्वाचा आहे. त्याकरिता ग्रंथालयाला वार्षिक आर्थिक अंदाजपत्रक तयार करावे लागते. अंदाज पत्रक म्हणजे त्या वर्षातील एकूण जमा रक्कम व खर्चाची अंदाजे रक्कम याचा तयार केलेला आराखडा होय. आर्थिक उत्पादनाकरिता वेगवेगळे स्रोत निर्माण करावे लागतात. म्हणजेच ज्या ज्या मार्गाने ग्रंथालयाला आर्थिक रक्कम जमा होते त्या मार्गाना ग्रंथालयाचे आर्थिक स्रोत असे म्हणतात. तर जमा झालेली रक्कम कोणत्या घटकावर किती खर्च करावयाची याचा आराखडा म्हणजे आर्थिक व्यवस्थापन होय. तसेच आर्थिक आराखड्याप्रमाणे ज्या घटकावर रक्कम खर्च केली जाते त्यास आर्थिक विनियोग असे म्हणतात. आर्थिक उत्पादन आणि त्याचे योग्य पद्धतीने व्यवस्थापन केले की, त्या घटकाचा सर्वांगीण विकास गतीने घडून येतो. अशा विकासाच्या दृष्टिकोनातून महाविद्यालयीन ग्रंथालयाचे वित्तीय स्रोत कोण कोणते आहेत, वित्तीय स्रोताद्वारे जी रक्कम प्राप्त होते. त्या रकमेचे व्यवस्थापन कशा पद्धतीने केले जाते. या प्रश्नांची उकल करण्याकरिता महाविद्यालयीन ग्रंथालयाचे वित्तीय व्यवस्थापन या विषयाची मांडणी करण्यात आली. सदरील विषयाच्या अध्यापना करिता पुढील प्रमाणे उद्दिष्टांची मांडणी करण्यात आली.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- १) ग्रंथालयाचे वार्षिक आर्थिक अंदाजपत्रक समजून घेणे.
- २) ग्रंथालयाच्या वित्तीय स्रोतांचा अभ्यास करणे.
- ३) ग्रंथालयाच्या वित्तीय व्यवस्थापनाचा अभ्यास करणे.
- ४) ग्रंथालयाचा वित्तीय विनियोग समजून घेणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या अध्यापनाकरिता पुढील प्रमाणे संशोधनाच्या गृहीत कृत्यांची मांडणी करण्यात आली.

गृहीतकृत्य :

- १) ग्रंथालयाला विविध वित्तीय स्रोत आहेत.
- २) ग्रंथालय वार्षिक आर्थिक अंदाजपत्रक संक्षिप्त स्वरूपात तयार करते.
- ३) ग्रंथालयाचा विकास वित्तीय व्यवस्थापनाच्या नियोजनातून होतो.
- ४) ग्रंथालय पारदर्शक स्वरूपात वित्तीय विनियोग करीत आहे.

सदरील गृहीतकांच्या पडताळणी करिता पुढील प्रमाणे संशोधन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत शोध निबंधाच्या तथ्य संकलना करिता प्रामुख्याने दुय्यम स्रोताचा अवलंब करण्यात आला आहे. यामध्ये विविध संदर्भ ग्रंथ, मासिके, वृत्तपत्रे, साप्ताहिके, वार्षिक अंक, विविध संस्थांचे अहवाल, त्याच बरोबर अप्रकाशित झालेले एम.फिल., पीएच.डी चे प्रबंध, इंटरनेट इत्यादीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन आराखडा :

सदरील शोधनिबंधाच्या अध्यायना करिता संकलित तथ्याची सूत्रबद्ध पद्धतीने मांडणी करण्याकरिता शाब्दिक वर्णनात्मक संशोधन आराखडायाचा अवलंब करण्यात आला आहे.

विषय प्रतिपादन :

महाविद्यालय आपली शैक्षणिक गुणवत्ता सिद्ध करण्याकरिता नॅक मूल्यांकन करून घेते. या नॅक मूल्यांकनात ग्रंथालयाची भूमिका महत्वपूर्ण ठरते. कारण महाविद्यालयाला नॅकमध्ये जास्तीत जास्त गुण मिळवून देण्याचे कार्य ग्रंथालय करते.त्याकरिता ग्रंथालयाला स्वतंत्र इमारत, आवश्यक त्या प्रमाणात खुर्च्या, टेबल, फर्निचर, कपाटे, स्टॅन्ड इत्यादीची सुविधा असावी लागते. त्याचबरोबर ग्रंथालयात तांत्रिक सुविधा असाव्या लागतात. यामध्ये पंखे, कुलर, प्रतिलिपी मशीन, संगणक, प्रिंटर मशीन, इंटरनेट, ग्रंथालयाचे संगणकीकरण या हि सुविधा आवश्यक असतात. ग्रंथालयाला सूचना फलक, स्वतंत्र कक्ष, बैठक व्यवस्था, स्टेशनरी या ही सुविधा महत्त्वपूर्ण आहेत. तसेच आवश्यक त्या स्वरूपात ग्रंथ खरेदी, वाचन साहित्य, नियतकालिके, यांचीही उपलब्धता ग्रंथालयाला करावी लागते.या सर्व सुविधा करिता ग्रंथालयाला आर्थिक घटकाची मोठ्या प्रमाणात आवश्यकता असते. ही आर्थिक उत्पादनाची सुविधा पुढील प्रमाणे दिसून येते.

अ) ग्रंथालयाचे अंतर्गत वित्तीय स्रोत :**१) संस्था :**

ग्रंथालयाची इमारत बांधकाम, फर्निचर खरेदी, ग्रंथखरेदी इत्यादी खर्चाकरिता संस्था मोठ्या प्रमाणावर आर्थिक सहाय्य करते. संस्थेच्या आर्थिक सहाय्यतेतून ग्रंथालयाचा विकास घडून येतो.

२) बहिस्थ विद्यार्थी प्रवेश फीस :

ग्रंथालय बहिस्थ विद्यार्थ्यांना विशिष्ट प्रकारची प्रवेश फीस आकारते. या प्रवेश फीस मधून ग्रंथालयाला आर्थिक उत्पादन घडून येते. त्याच बरोबर बहिस्त विद्यार्थ्यांकडून निश्चित स्वरूपाची अनामत रक्कम घेतली जाते.

३) दंड :

ग्रंथालयाने ग्रंथ वापरण्याचा निश्चित कालावधी दिलेला असतो त्या कालावधीत विद्यार्थ्यांनी ग्रंथ परत करावी लागतात. परंतु काही विद्यार्थी कालावधीचा विचार करीत नाहीत तेव्हा ग्रंथालय विशिष्ट दैनिक पद्धतीने दंड आकारून तो विद्यार्थ्यांकडून घेतला जातो. यातूनही ग्रंथालयाला रक्कम मिळते.

४) गहाळ ग्रंथाची रक्कम :

विद्यार्थ्यांकडून अथवा वाचकाकडून जर ग्रंथ गहाळ झाला असेल तर त्याची ग्रंथालयाने निश्चित ग्रंथाच्या मुळ किंमतीच्या सव्वापट, दीडपट, दुप्पट अशी रक्कम घेतली जाते. गहाळ ग्रंथाच्या अतिरिक्त दंडातून ही ग्रंथालयाला आर्थिक उत्पादन मिळते.

५) रद्दी विक्री :

ग्रंथालयामध्ये वर्तमानपत्रे, कालबाह्य नियतकालिके यांची मोठ्या प्रमाणावर रद्दी निर्माण होते. ही रद्दी ग्रंथालय विक्री करून ती रक्कम विकासाकरिता वापरू शकते. त्याच बरोबर कालबाह्य झालेले क्रमिक पुस्तके, ग्रंथ यांच्या विक्रीतूनही रक्कम उपलब्ध करता येते.

६) प्रतिलिपी व इंटरनेट सेवा :

ग्रंथालयात वाचकांना महत्त्वाच्या झेरॉक्स काढून देण्यातून आर्थिक उत्पादन निर्माण होते. तसेच इंटरनेटची ही रक्कम घेतली जाते. अशा पद्धतीने प्रतिलिपी व इंटरनेट यांच्या माध्यमातून आर्थिक उत्पादन निर्माण होते.

ब) ग्रंथालयाच्या आर्थिक उत्पादनाचे बाह्य स्रोत :**१) माझी विद्यार्थ्यांकडून आर्थिक देणगी :**

महाविद्यालयातून शिक्षण पूर्ण करून बाहेर पडलेले अनेक विद्यार्थी नोकरी, व्यापार, लघुउद्योग इत्यादीमध्ये कार्य करीत असतात. असे विद्यार्थी ग्रंथालयाच्या विकासाकरिता स्वइच्छा नुसार आर्थिक देणगी देतात. यामुळे ग्रंथालयाचा आर्थिक स्रोत निर्माण झालेला आहे.

२) स्वयंसेवी संस्था कडून अनुदान :

बहुतांशी स्वयंसेवी संस्था या शैक्षणिक कार्याला अनुदान देतात. यामध्ये ग्रंथखरेदी, फर्निचर, इमारत बांधकाम, संगणकीकरण या घटकासाठी लागणारी रक्कम देत आहेत. हाही ग्रंथालयाचा आर्थिक स्रोत आहे.

३) खासदार/आमदार फंड :

शैक्षणिक विकासाकरिता खासदार-आमदार यांना आपला आर्थिक फंड देता येतो. त्यामुळे बहुतांशी महाविद्यालयाने ग्रंथालयाची इमारत, भौतिक व तांत्रिक सुविधा, संगणकीकरण इत्यादी साठी खासदार आमदार यांच्या कडून फंड घेतलेला आहे. हा फंड देखील ग्रंथालयाचा आर्थिक स्रोत आहे.

४) महाराष्ट्र शासनाचे विशेष अनुदान :

महाराष्ट्र शासन एखाद्या संस्थेच्या विकासाकरिता आर्थिक रकमेचे अनुदान देते. यामध्ये आरोग्य विभाग, ग्रंथालय विकास होय. ग्रंथालय विकासाकरिता महाराष्ट्र शासनाकडून अनुदान हाही ग्रंथालयाचा आर्थिक स्रोत आहे.

५) विद्यापीठ अनुदान आयोग :

विद्यापीठ अनुदान आयोग महाविद्यालयातील क्रीडा विकास, ग्रंथालय सुविधा, वैज्ञानिक प्रयोग, सामाजिक व शैक्षणिक उपक्रम इत्यादी करिता मोठ्या प्रमाणात अनुदान देणे. त्यामुळे अनेक ग्रंथालयाची इमारत, फर्निचर, संगणकीकरण इत्यादीसाठी यु. जी.सी.कडून अनुदान घेतले आहे. हाही ग्रंथालयाचा वित्तीय स्रोत आहे.

ग्रंथालयाचे वित्तीय व्यवस्थापन :

ग्रंथालय विविध स्रोतांच्या माध्यमातून जी रक्कम जमा होते त्या रकमेचे खर्चाच्या स्वरूपात वितरण करते. यालाच वित्तीय व्यवस्थापन असे म्हणतात. वित्तीय व्यवस्थापनात ग्रंथालय इमारत खर्च, फर्निचर खर्च, ग्रंथ खरेदी खर्च, संगणक खर्च, स्टेशनरी खर्च, नियतकालिकांची वर्गणी रक्कम, रोजंदारी कर्मचाऱ्यांचा रोजगार, विद्युत उपकरणे इत्यादी घटकावरील खर्चाचे अंदाजपत्रक तयार करून त्या अंदाजपत्रकानुसार खर्च केला जातो. अंदाजपत्रक जर व्यवस्थित पणे तयार केलेले असेल तर आर्थिक उत्पादन आणि खर्च यांचा समतोल घडून येतो. त्याच बरोबर महत्त्वपूर्ण घटकावर किती खर्च करावयाचा यासंबंधी नियोजन झालेले असल्यामुळे खर्चात गोंधळ निर्माण होत

नाही. तसेच आवश्यक वस्तूंची खरेदी करता येते. त्यामुळे ग्रंथालयाचा आणि वाचकांचा वेळ वाचतो. म्हणून ग्रंथालयाच्या वार्षिक वित्तीय अंदाजपत्रकाला अतिशय महत्त्व आहे.

अध्ययनाचे महत्त्व :

नॅक मूल्यांकित महाविद्यालयीन ग्रंथालयाच्या वित्तीय व्यवस्थापनाचा अभ्यास या शोधनिबंधाच्या मांडणीमुळे ग्रंथालयाचे वित्तीय स्रोत कोणकोणते आहेत हे स्पष्ट झाले. त्याचबरोबर ग्रंथालय आर्थिक उत्पादनाचे स्रोत कसे निर्माण करू शकते याची जाणीव व इतर महाविद्यालयांना होण्यास सहाय्यभूत ठरेल. त्याचबरोबर ग्रंथालयांनी नॅक मूल्यांकना करिता कोणत्या घटकाच्या खरेदीवर अधिक भर द्यावा याचेही स्पष्टीकरण करण्यात आले. ग्रंथालय वार्षिक आर्थिक नियोजन कसे तयार करते याचाही संक्षिप्त आढावा इतर महाविद्यालयाला घेता येईल.

सारांश :

वरिष्ठ महाविद्यालयीन शिक्षणात ग्रंथालयाचे भूमिका महत्त्वाची आहे. ग्रंथालयाच्या विकासावरून महाविद्यालयाची शैक्षणिक प्रगती स्पष्ट होते. ग्रंथालयाच्या विकासाकरिता वेगवेगळ्या स्रोतांचा वापर करावा लागतो. आर्थिक उत्पादनाचे नियोजन महत्त्वाचे ठरत आहे. या योजना करिता वित्तीय व्यवस्थापन संक्षिप्त स्वरूपात असणे आवश्यक आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- १) कराडे वी.एम., 'शास्त्रीय संशोधन पद्धती' नागपूर, पिंपळपुरे अँड कंपनी पब्लिशर्स, २००७
- २) काचोळे दा.घो., 'सामाजिक संशोधन पद्धती' कैलास पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद. २००५
- ३) डोके के.बी., 'वित्तीय व्यवस्थापन' चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद. २००१
- ४) दायमा ब्रिजमोहन, 'नॅकला सामोरे जाताना' विद्याभारती प्रकाशन, लातूर-२००४
- ५) निकोसे सत्यप्रकाश, 'ग्रंथालयाचे वित्तीय व्यवस्थापन' प्रज्ञा प्रकाशन, नागपूर. २०१०
- ६) भांडारकर पू.ल., 'सामाजिक संशोधन पद्धती' कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद. १९९७
- ७) सातारकर सु.प., 'ग्रंथालय व्यवस्थापन' अभय प्रकाशन, नांदेड.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
7a, Ambajogai Dist. Beed 431519



महाराष्ट्राची सामाजिक जडणघडण आणि यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान

डॉ.देशमुख एम.बी.

समाजशास्त्र विभाग, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता.अंबाजोगाई, जि.बीड.

यशवंतराव चव्हाण यांनी प्रशासकीय, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, क्रीडा अशा सर्वेक्षेत्रात राज्याचा विकास घडविण्यासाठी प्रयत्न केले. त्यांनी यासाठी उचललेली पावले आजच्या काळात राज्याला यशोशिखरावर नेणारी ठरली आहेत. जात, धर्म, पंथ या भिंती न ठेवता केवळ विकासाची दृष्टी बाळगून कायम समाजहिताचा विचार करणाऱ्या या महान नेत्याचा आदर्श आजच्या काळात प्रत्येकाने घ्यायला हवा हा आदर्श निश्चितपणे महाराष्ट्रातील सामाजिक शांतीचा मंत्र ठरू शकेल असे त्यांचे योगदान आहे. त्यांनी आखून दिलेल्या मार्गावरून महाराष्ट्राची बहुतांश कालक्रमणा सुरु आहे. तसेच गेल्या ५० वर्षांत महाराष्ट्राने वेगवेगळ्या क्षेत्रांत जी प्रगती केली. राष्ट्राच्या पटावर आपले स्वतःचे जे स्थान निर्माण केले त्याचे श्रेय निःसंशयपणे यशवंतरावांच्या दूरदृष्टीला द्यावे लागेल, यात तीळमात्र शंका नाही. महाराष्ट्राचा कृषीविकास, ग्रामीण सामाजिक विकास, ग्रामीण औद्योगिक विकास, सांस्कृतिक विकास या दृष्टीने त्यांनी केलेले कार्य मोलाचे ठरले आहे. याबरोबरच त्यांनी शेतीला कायमस्वरूपी पाणी पुरवठ्याची व्यवस्था करण्याच्या दृष्टीने पाटबंधारे, वीज अशा विविध हेतूंनी त्यांनी कामाची आखणी केली. यासाठी मुंबई राज्य इरिगेशन बोर्डाची स्थापना केली. सत्तेच्या विकेंद्रीकरणाचा कायदा यशवंतरावांच्या मुख्यमंत्रीपदाच्या काळातच झाला. पंचायतराजची योजना १ मे १९६२ रोजी अंमलात आणली गेली. त्याचेही उद्घाटन यशवंतरावांनी केले. सहकारी क्षेत्र विस्तृत करण्यासाठी व त्याचा ग्रामीण जीवनाच्या आर्थिक घडविण्यासाठी सहकाराला त्यांनी चालना दिली. अशाप्रकारे ग्रामीण भागातील समाजजीवन सुधारण्यासाठी त्यांनी अनेक कार्ये केली त्याचा आढावा घेण्याच्या उद्देशाने हा शोधनिबंध प्रस्तुत करण्यात आला आहे.

शोधनिबंधाचे उद्देश

- १) यशवंतराव चव्हाण यांच्या कार्याचा आढावा घेणे.
- २) यशवंतराव चव्हाण यांच्या सामाजिक कार्याचे विश्लेषण करणे.
- ३) महाराष्ट्राची सामाजिक जडणघडण आणि यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान स्पष्ट करणे.

संशोधन पध्दती:-

कोणत्याही विषयाचे किंवा घटनेचे अध्ययन करित असताना ते वैज्ञानिक पध्दतीने होणे आवश्यक असते. या दृष्टीने प्रस्तुत संशोधन करण्यात आले आहे. प्रस्तुत संशोधनासाठी वर्णनात्मक आराखडा निवडण्यात आला आहे. सामाजिक संशोधन पध्दतीत सर्वात महत्त्वाचे कार्य म्हणजे तथ्य संकलन होय. प्रस्तुत संशोधनात तथ्य संकलनासाठी द्वितीयक स्त्रोताचा वापर करण्यात आला आहे. संशोधनातील द्वितीयक स्त्रोत ही इतर व्यक्तीने पूर्वीच गोळा केलेली असून ती लिखित स्वरूपाची असतात अशा तथ्याचा उपयोग संशोधनात होत असतो. प्रस्तुत संशोधनात संदर्भ ग्रंथ, शासकीय मासिके, अहवाल, प्रकाशित


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed. 431519



ग्रंथ,अप्रकाशित साहित्य इत्यादींचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच अभिलेखे ,वर्तमानपत्र, साप्ताहिके ई.दोविकीयक
स्रोतांचाही उपयोग संशोधनात करण्यात आला आहे.

महाराष्ट्राचा कृषीविकास आणि यशवंतराव चव्हाणांचे योगदान

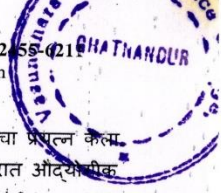
भारतातील ७० टक्के समाज कृषीवर आधारीत जीवन जगत आहे हीच परिस्थिती महाराष्ट्रातही आहे. महाराष्ट्रातील बहुतांश जनता ग्रामीण असून ती कृषीवर आपला उदरनिर्वाह करीत असते. तसेच ग्रामीण भागात औद्योगीकरणाचा अभाव असल्यामुळे ग्रामीण जनता बेकारीने जस्त असते. या दृष्टिकोणातून यशवंतरावांनी कृषी विकासाची योजना आखली. महाराष्ट्रात कृषी औद्योगीक समाजरचना त्यांनी उभारली. या बरोबरच कृषी औद्योगीक धोरणाचा पाया त्यांनी १९६० च्या दशकात घेतला. कृषी व औद्योगीक वाढ परस्परांना पुरक व पोषक ठरेल अशा स्वरूपात कृषी विषयक धोरण निर्माण केले. कृषी शिक्षणाचा विस्तार करून सर्व सामान्य शेतकऱ्या पर्यंत पोहचविले ग्रामीण भागात शेती मालावर आधारीत उद्योग निर्मितीवर त्यांनी भर दिला. कृषी महाविद्यालय तसेच कृषी विद्यापीठांची त्यांनी स्थापना केली. कापूस पिकविणाऱ्या शेतकऱ्यासाठी सुत गिरणी, तेलबियांच्या उत्पादकासाठी तेल गिरण्या, उस उत्पादकासाठी सांखर कारखाने स्थापन करण्यास त्यांनी प्रोत्साहन दिले. या बरोबरच कापूस खरेदीसाठी कापूस एकादीकार योजनेचा अत्यंत क्रांतीकारक निर्णय त्यांनी घेतला. तसेच कृषी विकासाच्या दृष्टीने त्यांनी बाजारपेठ उपलब्धी, शेतमालावर प्रक्रिया करणारी साधने उपलब्ध व्हा संहकारी क्षेत्रात कृषि उत्पन्न बाजार समित्या, मार्केट कमिट्या, स्थापण्यास उत्तेजन दिले. ऑईल मिल्स, जिनिंग प्रेसिंग फॅक्टरीज उभारण्यासाठी सहाय्य दिले. अशा प्रकारचे योगदान त्यांनी महाराष्ट्राच्या कृषी विकासास दिले.

ग्रामीण सामाजिक विकास आणि यशवंतराव चव्हाणांचे योगदान

माहात्मा गांधीजी यांनी ग्राम स्वराज्याची जी संकल्पना मांडली ती प्रत्यक्षात उतरवण्याचे काम यशवंतराव चव्हाणांनी केले. मुख्यमंत्री असताना यशवंतराव चव्हाण यांनी यासाठी २१ जुलै १९६० ला पंचायतराज समिती स्थापन करण्याचे जाहिर केले.या पंचायतराज समितीने आपला अहवाल सहा सात महिन्यात सरकारला सादर केला.७एप्रिल १९६१ रोजी हा अहवाल त्यांनी विधानसभेत चर्चेला ठेवला.या निर्णयासंदर्भात त्यांचा असा उद्देश होता को.जनतेने सत्ता व निर्णय घेण्याची प्रक्रिया ग्रामपातळीपर्यंत पोहचली पाहिजे.त्यांनी त्यांचेच प्रश्न सोडवले पाहिजेत.मंत्रीमंडळ व विधानसभेचे काही अधिकार कमी झाले तरी चालतील पण ग्रामीण भागातील कार्यकर्ता हा राज्यकर्ता झाला पाहिजे. त्यातूनच पुढे मे १९६२ ला जिल्हापरिषद पंचायत समिती राज्याची योजना प्रत्यक्ष आमलात आली. भारतातील महाराष्ट्र हे एकमेव राज्य असे ठरले की ज्याने ग्रामीण जनतेला सत्तेत सहभागी करून घेतलेल्या विधायक कार्याच्या माध्यमातून ग्रामीण जनतेच्या विकासास मोठ्या प्रमाणात वाव मिळाला. १ मे १९६२ रोजी महाराष्ट्र राज्य वर्धापन दिनाच्या शुभ मुहूर्तावर पंचायत राज स्थापन केले. त्यासमयी दिलेल्या संदेशात यशवंतराव म्हणतात की, ग्रामीण लोकांची विलक्षण विचारशक्ती, ऐक्यभाव व कष्ट करण्याची कुवत लक्षात घेता पंचायत राज्याचा आपला प्रयोग पूर्ण यशस्वी होईल व संबंध भारतभर लोकशाहीचा रंग दिमाखाने झळकेल अशी खात्री वाटते. महाराष्ट्राने जिल्हा परिषदेद्वारा अंमलात आणलेले लोकशाही विकेंद्रीकरण हे खरे पंचायत राज होय.

ग्रामीण औद्योगिक विकास आणि यशवंतराव चव्हाणांचे योगदान

यशवंतरावांच्या मते, ग्रामीण भागात शेतीपूरक उद्योग सुरू करून शेती व उद्योगांची सांगड घातली पाहिजे. त्यासाठी ग्रामीण भागात वीज,पाणी, रस्ते यांसारख्या पायाभूत सुविधा ग्रामीण भागात उपलब्ध करून द्याव्यात त्यासाठी सरकारने प्रयत्न केलेही परंतु त्यामध्ये आपल्याला तिकेसें यश आले नाही त्याचाच परिणाम म्हणून महाराष्ट्रामध्ये शहरीकरणाचा वेग झपाटयाने वाढत आहे. यावर उपाय म्हणून यशवंतरावांच्या विचारांप्रमाणे उद्योगांचे विकेंद्रीकरण करणे गरजेचे आहे.असे मत



मांडले होते. या दृष्टीने पुढे त्यांनी महाराष्ट्रात औद्योगिक धोरण निर्माण करून औद्योगिक विकास साधण्याचा प्रयत्न केला. उद्योग धंद्यांचा विकेंद्री करणाचा विचार करून मुंबई, पुणे, रायगड, ठाणे, औरंगाबाद, नाशिक परिसरात औद्योगिक विकासास चालना दिली. महाराष्ट्र कोणत्या उद्योग धंद्याची स्थापना करावी या संबंधी यशवंतराव चव्हाण यांनी नियोजनपूर्वक निर्णय घेतले. हे राज्य कृषी क्षेत्रात अग्रेसर होते त्यानुसार कृषी आधारित उद्योगधंद्यांना येथे वाव आहे. याचा विचार करून साखर उद्योग, कापड उद्योग, स्पिनिंग व जिनिंग तेलबिया प्रक्रिया उद्योग अशा प्रकारच्या उद्योगांची स्थापना करण्यावर भर दिला कृषी आधारित उद्योगांचा अर्थव्यवस्थेवर दुहेरी लाभ होईल. शेतमालावर प्रक्रिया केल्यामुळे महाराष्ट्रातील कृषी क्षेत्राचे उत्पन्न वाढेल. या क्षेत्रात खरेदीशक्ती वाढल्यामुळे बिगर कृषीक्षेत्रातील म्हणजेच औद्योगिक क्षेत्रातील वस्तूंना मागणी वाढून त्यांना बाजारपेठ मिळेल. अशाप्रकारचे औद्योगिक विकासाचे नियोजन त्यांनी केले असल्याचे दिसून येते.

शैक्षणिक विकास आणि यशवंतराव चव्हाणांचे योगदान

शैक्षणिक कार्याला गती देण्यासाठी आर्थिकदृष्ट्या मागासलेल्या समाजासाठी ईबीसीची सवलत, शिष्यवृत्ती व विविध योजना सुरु केल्या. याबरोबरच मुलौद्योग शिक्षणाला असणारी मर्यादा त्यांनी वाढविली. मोफत शिक्षणाची योजना राज्यात प्रथमच त्यांनी राबविली. आर्थिकदृष्ट्या मागासवर्गीय असलेल्या मुलांना शासनाकडून मोफत शिक्षण देण्यात यावे असा प्रस्ताव समाजकल्याण मंत्री मंडळाच्या बैठकीत मांडण्यात आला होता. कल्याणकारी राज्याने टाकलेले पुरोगामी पाऊल म्हणून यशवंतराव चव्हाणांनी या प्रस्तावाचे आगदी मनापासून स्वागत केले, शिक्षणाद्वारे केवळ ज्ञान आणि बुद्धीचाच विकास व्हावा एवढेच शिक्षणाचे मर्यादित उद्दिष्ट त्यांना अभिप्रेत नव्हते. तर एकसंघ समाजाच्या उभारणीसाठी तसेच मानसाचा आंतरिक विकास महत्वाचा असल्याने त्या दृष्टीने प्रयत्न करण्याची गरज त्यांनी दर्शवून दिली. तसेच मागास वर्गासाठी मोफत शिक्षण योजना राबवून त्यांनी शैक्षणिक चालना दिली. प्रौढ शिक्षणाची व्यवस्था केली. त्यामुळे शिक्षणाची दारे सर्वांसाठी खुली झाली. शिक्षणाचा प्रसार होण्यासाठी त्यांनी शैक्षणिक संस्थांना सढळ हस्ते अनुदाने दिली व नव्या संस्था उभारण्याचा प्रयत्न केला. यामध्ये मराठवाडा विद्यापीठाची स्थापना, कोल्हापूरचे, सातारा सैनिक स्कूल, आदिवासीच्या मुलांसाठी आश्रमशाळा अशा निरनिराळ्या मार्गाने त्यांनी शैक्षणिक विकास साधण्याचा प्रयत्न केला.

सांस्कृतिक विकास आणि यशवंतराव चव्हाणांचे योगदान

साहित्य, संस्कृती, कला, क्रिडा तसेच लोकनाट्या सारख्या कलागुणांना वाव देणारे मुख्यमंत्री म्हणून यशवंतराव चव्हाणांची ख्याती राहिलेली आहे. यशवंतराव केवळ राजकारणी नव्हते, त्यांना साहित्य क्षेत्रातही रस होता. साहित्यिकांचा त्यांनी कायम आदर केला म्हणूनच तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशीपासून ना.धो.महानोर यांच्यापर्यंत प्रत्येकांशी त्यांचे जिव्हाळयाचे संबंध होते. मराठी साहित्य संस्कृती महामंडळ आणि विश्वकोष मंडळाच्या स्थापनेचे श्रेय यशवंतरावांनाच जाते. साहित्य व कलेच्या माध्यमातून अनेक कलाकारांचे, कविचे तसेच लेखकांचे मित्र बनले यशवंतराव चव्हाण. यशवंतराव चव्हाण स्वतः पुण्याच्या दैनिक ज्ञानप्रकाश चे वार्ताहर होते. सर्व क्षेत्रातील ज्ञान मराठीत उपलब्ध व्हावे म्हणून त्यांनी तर्कतीर्थ लक्ष्मणशाजी जोशी यांच्या अध्यक्षतेखाली मराठी विश्वकोष निर्मितीचे काम सुरु केले. महाराष्ट्र राज्य निर्मिती नंतर मराठीला राज्यभाषेचा दर्जातर दिलाच पण ती जास्त समृद्ध व्हावी म्हणून भाषा संचलनालयाची स्थापना केली. साहित्या बरोबरच नाट्य क्षेत्र हा मराठी मनाचा आणि भाषेचा मानविंदू आहे हे ओळखून नाट्यकलेस प्रोत्साहन देण्यासाठी नाट्य महोत्सव आणि नाट्य शिबीरेही त्यांनी सुरु केली. कलावंताना शासनातर्फे आर्थिक मदत देण्याची प्रथाही त्यांनी सुरु केली. राजकवी यशवंत यांना 'महाराष्ट्र कवी' हा किताब देवून त्यांचा गौरव करण्यात आला.



समारोप

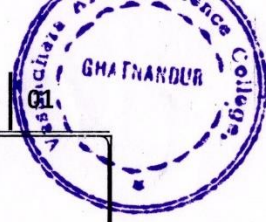
कायम समाजहिताचाच विचार यशवंतराव चव्हाण मांडत असत. राजकारण म्हणजे केवळ सत्तेच्या क्षेत्रात कारभार करणे किंवा निवडणूका लढविणे नसून समाज परिवर्तनाचे साधन आहे. सामाजिक क्रांती हेच आता आपल्या सर्व सार्वजनिक एकमेव उद्दिष्ट बनले पाहिजे. देशाचा विकास व समृद्धी घडवून आणण्याचे हे एक साधन आहे. सरकारे हे हंगामी आहे तर योजनाबद्ध विकासाचा कार्यक्रम ही सातत्याने चालणारी कायम स्वरूपाची प्रक्रिया आहे. असे त्यांचे ठाम मत होते. यशवंतराव चव्हाण यांचे विचार आणि कार्य आजच्या पिढीला निश्चितच मार्गदर्शक ठरणारे आहेत. प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून समाजहित साधण्याचे यशवंतरावांचे कसब महाराष्ट्राच्या विकासाला निश्चितच पुरक ठरेल. एक कार्यकर्ता ते मुख्यमंत्री आणि नंतर केंद्र सरकारमध्ये संरक्षणमंत्री, उपपंतप्रधान अशी उच्च पदे भूषवल्यानंतरही यशवंतरावांना कधी गर्व नव्हता. ते केवळ समाजहिताचाच विचार करत आले. आधुनिक महाराष्ट्र अनेक महनीय-आदरणीय व्यक्तींनी घडविला. आपापल्या व्यक्तिमत्त्वाची मुद्रा अनेकांनी महाराष्ट्रावर आखली; पण स्वातंत्र्यानंतरच्या पहिल्या दोन-तीन दशकांत ज्यांनी राजकीय, सामाजिक, शैक्षणिक, कृषी, सहकार, औद्योगिकीकरण आणि याचबरोबर साहित्य, संस्कृती, कला, क्रीडा आणि संगीत अशा मानवी जीवनाच्या सर्व अंगांच्या विकासाला स्पर्श करून, त्याचा कायापालट करण्याचे कार्य दूरदृष्टी ठेवून केले. तसेच समाजातील सर्वाधिक मागासलेल्या घटकाला विकास प्रवाहात आणण्याच्या कार्याचा प्रारंभ यशवंतराव चव्हाण यांनीच केला. महाराष्ट्र राज्याला 'पुरोगामी-प्रगतिशील महाराष्ट्र राज्य' अशी उपाधी मिळवून दिली आणि सर्व क्षेत्रातील विकासाचा पाया रचला.

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1) वावर सरोजिनी - मी पाहिलेले यशवंतराव, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई. १९८८.
- 2) तुंगारे राज, - सुप्रशासनाचे आद्य शिल्पकार, लेख लोकराज्य मासिक, अंक-१२, मार्च २०१२.
- 3) बा.ह. कल्याणकर (संपादक)- युगंधर नेते -यशवंतराव चव्हाण.
- 4) कृष्णाकाठ : एक आस्वाद, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद.
- 5) यशवंतराव चव्हाण - ऋणानुबंध.
- 6) यशवंतराव चव्हाण, युगांतर, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, मुंबई.
- 7) एरंडे व्ही.एल. - यशवंतराव चव्हाण : एक चिंतन.
- 8) लोकराज्य : मार्च २०१२.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue

Sarvoday Shikshan Sanstha's

Arts, Commerce and Science College, Kowad.

Tal. Chandgad, Dist. Kolhapur (Maharashtra) – 416508

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur)

Re-accredited by NAAC 'B+'

Email : kowad2.cl@unishivaji.ac.in

Web : www.acscollegekowad.com

One day National Online Webinar on

**Dr. Babasaheb Ambedkar's Human Rights,
Socio-Economic and Political Thoughts**

Date : 10/04/2022, Day : Sunday

Organized by NSS and Sociology Department under the aegis of IQAC.

Dr. Khanderavaji S. Kale
Cordinator

Dr. V. K. Dalvi
Co-coordinator

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Rane
PRINCIPAL,

Vesundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Kolhapur



13) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना यांचे परस्पर संबंध — एक ... गोविंद यशवंतराव पाटोळे, पुणे	66
14) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राजकीय आणि सामाजिक विचार डॉ. बेलखेडे महादेव बी., जि.नांदेड	70
15) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार प्रा.शिवानंद सुरेश शिंदगौड, कोवाड	75
16) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि भारतीय राज्यघटना प्राध्यापिका ज्योती लक्ष्मण सोनवणे, इगतपुरी	78
17) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे दलित स्त्रीयाविषय सामाजिक विचार सिमा मुकूंदराव कांबळे, औरंगाबाद	85
18) आर्थिक आणि सामाजिक विचार श्री. आकाश संजय ब्राम्हणे, श्री. अभिजीत आबासो पाटील, कोल्हापूर	88
19) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार डॉ. संतोष तात्यासो बिरनाळे, जि. कोल्हापूर	93
20) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे आर्थिक विचार आणि स्त्रीमुक्ती दिपिका दशरथराव बनसोडे, औरंगाबाद	97
21) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे सामाजिक विचार अभिनिता लक्ष्मण बनकर, औरंगाबाद	99
22) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे समाजशास्त्रीय विचार: एक संक्षिप्त अभ्यास डॉ. राज चव्हाण, प्रा. सोनिया चव्हाण, सातारा(स्वायत्त)	103
23) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे स्त्री सशक्तीकरण विषयक विचार आणि कार्य श्री. किरण गणपत कुंभार, सातारा	110
24) Educational Philosophy of Dr. Babasaheb Ambedkar Prof. Ambadas Ashok Mane, Dist. Pune	113
25) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिक्षण विषयक विचार डॉ. गंगासागर तुळसीदास चोले, जि. कोल्हापूर	117
26) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार व कार्य : एक समाजशास्त्रीय ... डॉ.मनिषा बालासाहेब देशमुख, जि.बीड	119



मग त्या पूर्ण करण्यासाठी स्वतः प्रयत्न करावे लागतात आणि हेच निसर्ग वादातील सत्य आहे. शिक्षणाचे मानवी जीवनातील स्थान, महत्त्व, ध्येय आणि उपयोगिता सिद्धांताच्या माध्यमातून मांडण्यात आले. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांपूर्वी काही पाश्चात्य व भारतीय अभ्यासकांनी ते विशद केले आहे. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी प्रचलित शिक्षण विषयक सिद्धांताचा प्रत्यक्ष जीवनाशी सहसंबंध जोडला, प्रचलित सिद्धांतात काही बदल सुचविले नवा शैक्षणिक सिद्धांत मांडला. संपूर्ण मानव जातीला शिक्षणाची गरज, महत्त्व व उपयुक्तता पटवून दिली. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा शिक्षण विषयक दृष्टीकोण सत्याशी भिडणारा शाश्वत स्वरूपाचा आहे.

निष्कर्ष :

- १) शिक्षणामुळे दलित समाजामध्ये सुधारणा घडून आली, त्यांचे विचार सुधारले.
- २) शिक्षणामुळे समाजात परिवर्तन घडून आले.
- ३) मानव जातीला शिक्षणाची किती गरज आहे हे समजले.
- ४) देशातील विषमतेला नष्ट करणारा एकमेव उपाय म्हणजे शिक्षण.

संदर्भग्रंथसूची :

- १) डॉ. फाडके भालचंद्र, फुले-आंबेडकर शोध आणि बोध, आनंद प्रकाशन, औरंगाबाद.
- २) शंकरराव खरात, दलितांचे शिक्षण, इंद्रायणी साहित्य प्रकाशन पुणे.
- ३) शेषराव मोरे डॉ. आंबेडकरांचे सामाजिक धोरण एक अभ्यास, राजहंस प्रकाशन, पुणे.
- ४) धनंजय कीर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई.
- ५) इंटरनेट

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे सामाजिक विचार व कार्य : एक समाजशास्त्रीय अभ्यास

डॉ.मनिषा बालासाहेब देशमुख
समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, जि.बीड

भारतीय संविधानाचे शिल्पकार डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी भारताच्या उभारणीमध्ये अतुलनीय योगदान दिले आहे. लेखक, पत्रकार, समाजसुधारक व अष्टपैलू व्यक्तिमत्त्वाच्या डॉ. बाबासाहेबांनी हजारो वर्षापासून चालत आलेल्या हिंदू समाजव्यवस्थेविरुद्ध रणसिंग फुंकले. अस्पृश्य समाजाचा स्वाभिमान जागृत करून त्यास अन्यायाविरुद्ध लढण्यास सज्ज केले. डॉ. आंबेडकर हे आधुनिक भारताच्या इतिहासातील एक युगपुरुष नेते म्हणून ओळखले जातात.

अस्पृश्य उधाराच्या कार्यास स्वतःला त्यांनी वाहून घेतले. कोणत्याही फळाची अपेक्षा न करता अहोरात्र उपेक्षित समाजाला जागृत करण्याचे महान कार्य केले. अस्पृश्य समजल्या जाणाऱ्या समाजाला माणूस म्हणून त्यांचे मुलभूत अधिकार मिळावे, त्यांच्या जीवनाचा दर्जा उंचावण्यासाठी त्यांच्यात शिक्षणाचा प्रसार केला. आत्मसन्मान गमावून बसलेल्या लोकांना स्वाभिमानी बनवून स्वाभिमानाने जगण्यास सिध्द केले. अर्थात हा लढा लोकशाही मार्गाचाच होता. अतिशय मागसलेल्या या बहिष्कृत समाजास ताट मानेने जगता यावे, यासाठी परकीयासोबत उच्चवर्गीय स्वकीयांशी लढा दिला. तसेच बाबासाहेबांनी पिडीत, उपेक्षित समाजाला सोबत घेवून अस्पृश्यतेविरुद्ध लढा दिला.

आपला उधर आपणच केला पाहिजे म्हणून २० जुलै १९२४ रोजी त्यांनी बहिष्कृत, हितकारणी सभा या संस्थेची स्थापना केली. संपूर्ण जाती धर्माच्या



मलिन स्वरूपाची सानसिकता रुजलेली दिसते. स्त्रियांना अत्यंत वाईट प्रकारची वागणूक देण्यात येत म्हणून डॉ. आंबेडकरांनी स्त्रियांच्या संदर्भात अत्यंत महत्त्वपूर्ण विचार मांडले आहेत. स्त्री विषयक त्यांचे विचार उदात्त आहेत. दलित स्त्री ही भारतीय कारण्याची व मुकशोषितांची कमाल मर्यादा आहे. असे ते म्हणत. आपल्या पतीला श्रम करण्यासाठी प्रवृत्त करा, त्यांच्या व्यवस्थापनावर अंकुश ठेवा. आपल्या संततीच्या शिक्षणावर लक्ष केंद्रित करा, असा संदेश त्यांनी स्त्रियांना दिला. या वरून असे लक्षात येते की, स्त्रियांच्या संदर्भात डॉ. आंबेडकरांनी अत्यंत प्रगल्भ विचार मांडले आहेत. आंबेडकरांचे सामाजिक विचार अतिशय समाजोपयोगी आहेत. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांना मुल्यानिष्ठीत परंतु मुलुगामी बदलाची अपेक्षा होती.

भारतीय जातीसंस्था, तिची उत्पत्ती आणि वाढ हा डॉ. आंबेडकर यांचा प्रबंध अत्यंत गाजला होता. त्यांच्या इतके मौलिक चिंतन दुसरे कोणीही केले नाही.

डॉ. बाबासाहेबांचे सामाजिक विचार मांडत असताना त्यांनी धर्म हा शास्त्रीय ज्ञानाशी कधीही विसंगत असता कामा नये असे म्हटले. धर्म आणि शास्त्र यामध्ये विसंगती झाली की धर्माचा नाश केव्हाही होणारच धर्म आणि नैतिक आचरण यांची संमती ही अखेर अशीच असली पाहिजे. धर्मांमध्ये स्वातंत्र्य, समता, बंधुता यांचाही समावेश करणे आवश्यक आहे. डॉ. बाबासाहेबांनी १४ ऑक्टोबर १९५६ रोजी नागपूर येथे हिंदू धर्माचा त्याग करून बौद्ध धर्माचा स्विकार आपल्या हजारे अनुयायांसह केला. त्यावेळी त्यांनी आपल्या अनुयायांना सांगितले होते की, माझे धर्मांतर कोणत्याही प्रकारच्या ऐच्छिक लाभाकरीता नाही. माझ्या धर्मांतराच्या मुळाशी अध्यात्मिक भावनेशिवाय दुसरी कुठलीही भावना नाही. धर्मांतराच्या घोषणाची सार्थकता पटल्याशिवाय कोणीही धर्मांतर करू नये. तुम्होच आपले आधार व्हा. स्वतःच्या बुद्धीला शरण जा, दुसऱ्या कोणाचाही उपदेश ऐकू नका, सत्याचा आधार घ्या सत्यास शरण जा, धर्म सुधारला पाहिजे यासाठी बाबासाहेबांनी आहोरात्र पयलांची पारकाष्टा केली.

निष्कर्ष :

विद्यार्ता : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 8.14 (IJIJF)

- १) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी सामाजिक विचारातून भारतीय समाजाला नवी दृष्टी दिली.
- २) जातीयतेचे समुळ उच्चाटन करण्यासाठी प्रत्येक मानवाने पुढे येऊन जनजागृती करावी.
- ३) शिक्षणाचा प्रसार परिपूर्ण पध्दतीने करण्यात यश आल्यास व शैक्षणिक गळतीचे प्रमाण कमी झाल्यास सामाजातील एकतेचे दर्शन होईल, शिक्षणातूनच प्रगती शक्य आहे.
- ४) भारतीय समाजातील अस्पृश्यता, जातीभेद, धर्मभेद ही समाजाव्यवस्थेला लागलेली किड आहे ती वेळीच नष्ट झाली पाहिजे तरच सर्वांगीण प्रगती होईल.
- ५) सर्वांनाच राष्ट्रीय प्रवाहात सहभागी करून घ्यावे लागेल तर भारतीय समाजात राष्ट्रवाद वृद्धीगत होईल.
- ६) शिक्षणातून समाज परिवर्तनास विधायक दिशा मिळते हे डॉ. आंबेडकरांचे विधान प्रेरणादायी आहे.
- ७) भारतीय संविधान सामाजिक समतेचा आरसा आहे, तो जाणला पाहिजे.

संदर्भ :

- १) डॉ. पाटील लिला, यांनी घडविला समाज, कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद.
- २) डॉ. राठी शुभांगी, भारतीय राजकिय विचारवंत, कैलास पब्लिकेशन, औरंगाबाद.
- ३) डॉ. कस्तूरे वाडकर, प्रभा, पाश्चिमात्य आणि भारतीय राजकिय विचारवंत, अरुणा प्रकाशन लातूर.
- ४) दैनिक सम्राट, १४ एप्रिल २०१२, पान नं. ४.


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



(SJIF) Impact Factor-7.675 ISSN-2278-9308

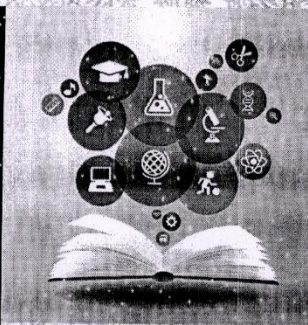
B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-2021

SPECIAL ISSUE No-CCLXXXI (281)



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm.Sci Collage,
Walgaon,Dist. Amravati.

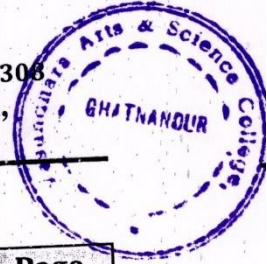
Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head,Deptt.of Economics,
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur



INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	Impact of covid 19 on the environment: A Social study	Dr. Deshmukh M.B.	1
2	Analysis of Taxonomic Diversity of Millipede Species of Amravati, Dist. (M.S.) India, Using RAPD-PCR	Anil J. Gour, K. E. Chaudhary	5
3	Literature of Ecocriticism – Need of Age	Dr. M.V. Kohale	9
4	Human Rights as an Effective Way to Produce Social Reforms In respect of Prison Reforms in India– An Overview	Dr. Mahendra L. Pachadkar	12
5	A Study of Usage of Transportation and Logistics services of Pharmacological Industries in Nagpur Region	Dr. Mahendra L. Vanjari	14
6	Implication of new NREGA policies for the future in India: Scenario of NREGA Structure for rural area in Nagpur Division during Lockdown	Dr. Milind Gulhane	19
7	Increase in stress level of employees of educational institutions during the pandemic of COVID-19	Dr. Moin Deshmukh /Trusha Chopade/Dr. Akanksha Dubey	22
8	The Contribution Of Women Policies In Women's Empowerment	Dr. P. J. Katole	25
9	Exploration of Feminine Psyche in Anita Desai's Cry, the Peacock and Where Shall We Go This Summer?	Dr. Raheel K. Quraishi	28
10	Recent Development Of Human Resource Management Practices In Higher Education In India	Dr. Rekha Gulhane	32
11	Yoga and its Relevance in Modern Life	Dr. Sanjay Khalatkar	36
12	Thematic simplicity in the poetry of Nissim Ezekiel	Dr. Satish G. Joshi	40
13	Impact Of Covid-19 On Indian Economy	Dr. Shreekrishna P. Raut	44
14	Role of Self-Help Group in Enhancing Women Empowerment and in turn Developing The Rural Economy	Dr. Shubhangi Morey	54
15	Social Entrepreneurship in India- Opportunities and Challenges in the Current Scenario.	Dr.D.B.Borade	61
16	Relationship Of Selected Motor Fitness Components With Performance Of Basket Ball Player	Dr.Madhuri S. Chendke	65
17	Role of a Balance Diet for Athletes	Dr.Subhash M. Shekokar	68
18	Portrayal of Exploitation of Tribal Women in The Adivasi Will Not Dance	Dr.Umesh P. Patil	72
19	Dynamics of Panchayati Raj Institutions – Problems and Prospects.	Prof. Rahul G. Mahure.	76



Impact of covid 19 on the environment: A Social study

Dr. Deshmukh M.B.

Sociology Department

Vasundhara College, Ghatnandur,dist Beed.

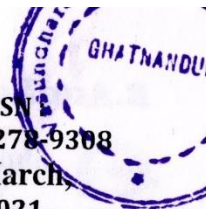
Abstract:

Covid 19 affected whole world. So many peoples have been affected and also died in this year by coronavirus. India is also a strong patient of this disease. It is also affecting all the elements and parts of world. In this situation all peoples maintain social distancing. And also all of countries of world were lock downed by there government cause of these all peoples stayed at home. The popular notion that the COVID-19 pandemic has been "good for the environment"- that nature is recovering while humanity stays at home-appeals to many people grasping for some upside to the global tragedy. Reality, though, may not cooperate with such hopes. There are various types of impact made by this disease on every part of human life. Environment also affected by it. The disease as well as the entire socio-economic, environmental and political atmosphere in a country, whilst particularly giving more weight to South Asia. The proposed actions are analysed in short-term, mid-term and long-term basis, and any expert and social worker who is involved in the pandemic control process can gain an insight into what to do and how to perform their tasks. A sociological analysis on COVID-19 is very important because there is a wing comprising dominant medical experts in the control and management of the disease. The importance of a sociological analysis in a pandemic situation. Naturally, anyone would think of a pandemic situation in very negative terms due to its emotional, socio-economic, environmental, political and cultural factors. However, it is also positive due to certain factors that help to reintegrate and reorganise the social system as a whole

Key words: Impact of covid 19, covid 19 and the environment.

Introduction:

Covid 19 affected whole world. So many peoples have been affected and also died in this year by coronavirus. India is also a strong patient of this disease. It is also affecting all the elements and parts of world. In this situation all peoples maintain social distancing. And also all of countries of world were lock downed by there government cause of these all peoples stayed at home. The popular notion that the COVID-19 pandemic has been "good for the environment"- that nature is recovering while humanity stays at home-appeals to many people grasping for some upside to the global tragedy. Reality, though, may not cooperate with such hopes. There are various types of impact made by this disease on every part of human life. Environment also affected by it. The disease as well as the entire socio-economic, environmental and political atmosphere in a country, whilst particularly giving more weight to South Asia. The proposed actions are analysed in short-term, mid-term and long-term basis, and any expert and social worker who is involved in the pandemic control process can gain an insight into what to do and how to perform their tasks. A sociological analysis on COVID-19 is very important because there is a wing comprising dominant medical experts in the control and management of the disease. The importance of a sociological analysis in a



pandemic. Among many other moves, the administration has effectively suspended enforcement of air and water pollution regulations, curtailed states' ability to block energy projects, and suspended a requirement for environmental review and public input on new mines, pipelines, highways, and other projects.

4)Traffic pollution affected by coronavirus

Another worry is traffic. With social distancing hard to maintain on public transportation, and many travelers likely to avoid it out of fear of contracting the virus, cities could be headed for a post-shutdown "carpocalypse," as one transportation news site warns. In many countries traffic is back to pre-pandemic levels, even though many people have yet to resume commuting and traveling, Myllyvirta says. And while cities around the world are rushing to expand bike lanes to manage the shift away from subways, trains, and buses, "whether those are going to be anywhere near enough is a big question mark," he says.

5)Positive impact of Clean beaches

Beaches are one of the most important natural capital assets found in coastal areas. They provide services (land, sand, recreation, and tourism) that are critical to the survival of coastal communities and possess intrinsic values that must be protected from overexploitation. However, non-responsible use by people has caused many beaches in the world to present pollution problems. The lack of tourists, as a result of the social distancing measures due to the new corona virus pandemic, has caused a notable change in the appearance of many beaches in the world. For example, beaches like those of Acapulco, Barcelona or Salinas now look cleaner and with crystal clear waters.

6)Reduction of environmental noise level:

Environmental noise is defined as an unwanted sound that could be generated by anthropogenic activities, the transit of engine vehicles, and melodies at high volume. Environmental noise is one of the main sources of discomfort for the population and the environment, causing health problems and altering the natural conditions of the ecosystems. The imposition of quarantine measures by most governments has caused people to stay at home. With this, the use of private and public transportation has decreased significantly. Also, commercial activities have stopped almost entirely. All these changes have caused the noise level to drop considerably in most cities in the world.

7) coronavirus Increased waste

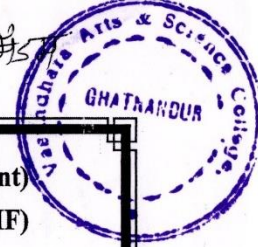
The generation of organic and inorganic waste is indirectly accompanied by a wide range of environmental issues, such as soil erosion, deforestation, air, and water pollution. The quarantine policies, established in most countries, have led consumers to increase their demand for online shopping for home delivery. Consequently, organic waste generated by households has increased. Also, food purchased online is shipped packed, so inorganic waste has also increased.

8) Reduction in waste recycling

Waste recycling has always been a major environmental problem of interest to all countries. Recycling is a common and effective way to prevent pollution, save energy, and conserve natural resources. As a result of the pandemic, countries such as the USA have stopped recycling programs in some of their cities, as authorities have been concerned about the risk of COVID-19 spreading in recycling centers. In particularly affected European



ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)



Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

June - 2021
Vol. I No. 18

Editor

Dr. Nandkumar N. Kumbharikar

Dept. of Public Administration
SPP College, Sirsala, Dist. Beed.
Email - dr.kumbharikarnn@gmail.com

Co-Editor

Dr. Laxman K. Ulgade

Head. Dept. of Public Administration
Havagiswami College, Udgir, Dist. Latur

Dr. Balaji A. Sable

Head. Dept. of Economics
SPP College, Sirsala, Dist. Beed.



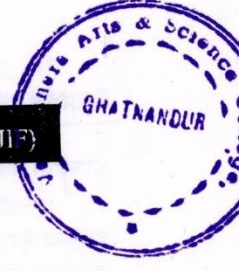
Excel Publication House
Aurangabad


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



22	Dr.Thorwe.R.H.	A study of leadership vision and qualities for librarians	78
23	Dr. Ardale S. D.	Human rights and reality of women's status in india	80
24	Dr.Banjara Dillip Lalu	United nation and human rights: an overview of universal declaration of human rights	83
25	Dr. Rajeshri Apparao Jadhav	Challenges of virtual teaching for students from tribal areas of india	89
26	प्रा. परळकर एस.डी.	ब्रिटीशकालीन सामाजिक सुधारणा— एक अभ्यास	92
27	प्रा.डॉ.सोनवणे जी.एन.	जागतिक तापमान वाढ नियंत्रणाबाबत भारताची भूमिका	95
28	डॉ.मस्के डी.बी.	ग्रंथालय आधुनिकीकरण आणि माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानाचे महत्त्व	98
29	डॉ.देशमुख एम.बी.	ग्रामसभा: ग्रामीण विकासातील योगदानाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास	101
30	डॉ. कानडे अशोक	अधुनिक महाराष्ट्राच्या जडणघडणीत यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान	105
31	डॉ.नंदकुमार कुंभारीकर	आरोग्य प्रशासनासमोरील आव्हाने—एक प्रशासकीय अध्ययन	108
32	डॉ.गोंदकर तुकाराम दत्तात्रय	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे महिला विकास विषयक विचार व योगदान	111
33	डॉ.अशोक लक्ष्मण गोरे	आपत्ती व्यवस्थापन: प्रशासकीय आव्हानाचा अभ्यास	114
34	इंगळे शिवानी मच्छिंद्र	अहमदनगर जिल्ह्यातील पर्यटन क्षेत्रावर covid-19 चा झालेला परिणाम	117
35	प्रा. डॉ. के.एम.नागरगोजे	फिल्डमार्शल सॅम माणेकशा आणि भारत- पाकिस्तान-1971 चे युद्ध	120
36	डॉ.पाटील चारुशीला विजयराव	महाराष्ट्रातील कृषी आधारित लघुउद्योगाचा अभ्यास	123
37	डॉ. बा. आ. साबळे हनुमान अ. रासवे	बदलत्या शैक्षणिक धोरणाचा परिणाम	125
38	अ रिझावन अ हन्नान डॉ.मो अताकल्ला एम.के.	महाराष्ट्रातील खेळाडूंच्या प्रमुख समस्या व खेळ सुधारण्यासाठीचे उपाय	128
39	प्रा.डॉ.सवाई एम.के.	महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांच्या सामाजिक सुधारणा व स्त्री-शिक्षण विषयक कार्य - एक अभ्यास	131
40	डॉ.प्रा.लोखंडे बी.बी	केंद्र-राज्य संबंध आणि पक्षीय राजकारण	134
41	डॉ. बिडवे मारुती शिवाजीराव	ग्रंथालयाच्या उत्पन्न साधनाची निर्मिती	137
42	किरणकुमार मोहन भिमधिमे	हुंडा-प्रथा,समाज आणि स्त्रिया	140
43	डॉ.शिवाजी गो. दिवाण	केंद्र-राज्य संबंध	143
44	सोनाजी गवई डॉ. बालाजी साबळे	लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील आर्थिक विचार:एक अभ्यास	148
45	डॉ.सांगळे भगवान श्रीपती	महाराष्ट्राचे महसूल प्रशासन —एक दृष्टिकोप	151
46	डॉ.कैलास ज्ञानोबा सावंत	हैद्राबाद मुक्तीलढ्यात खळेगावातील स्वातंत्र्य सैनिकांचे योगदान	156
47	डॉ.बालाजी आ साबळे	छत्रपती शिवाजी महाराजांचे कृषी क्षेत्रासाठी आर्थिक योगदान	159
48	डॉ. उलगडे लक्ष्मण काशिनाथ	प्रमुख प्रशासकांची कार्य आणि गुण एक सखोल संशोधनात्मक अभ्यास	162
49	डॉ. रमेश वाघमारे	खोती पध्दत आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर	164
50	प्रा.शिवकुमार उस्तुर्गे	राजर्षी शाहू महाराजांचे सामाजिक कार्य : एक अभ्यास	167



ग्रामसभा: ग्रामीण विकासातील योगदानाचा समाजशास्त्रीय अभ्यास

डॉ.देशमुख एम.बी.

समाजशास्त्र विभाग,

वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता.अंबाजोगाई, जि.बीड.

प्रस्तावना

आधुनिक काळात लोकशाही ही अधिक लोकाभिमुख शासनव्यवस्था असल्याचे मानले जात असले तरी वर्तमान संसदीय लोकशाहीत वरिष्ठ स्तरावरूनच अंमलबजावणी केली जाते. लोकांनी निवडून दिलेल्या प्रतिनिधींकडून जे प्रचलित शासन चालविले जाते त्या शासनाकडून लोकशाहीला अपेक्षित असलेल्या लोकांच्या अपेक्षा पूर्ण होत नाहीत. या कारणास्तव नागरिकांचा शासन व्यवस्थेतील प्रत्यक्ष सहभाग आवश्यक झाला असून तो सहभाग नोंदविण्याची संधी ग्रामसभेच्या माध्यमातून नागरिकांना मिळते. वर्तमान लोकशाही व्यवस्था नागरिकांच्या सहभागातून अधिक बळकट करण्यासाठी ग्रामसभेला अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. भारतीय राज्यघटनेतील ७३ व्या घटना दुरुस्तीनंतर ग्रामसभा या संस्थेला घटनात्मक स्थान प्राप्त झाले आहे. त्यानुसार 'ग्रामसभा' याचा अर्थ पंचायतीच्या क्षेत्रामध्ये अंतर्भूत असलेल्या गावाशी संबंधित मतदार यादीमध्ये नोंदलेल्या व्यक्तींचा समावेश असलेली संस्था होय.

शोधनिबंधाचे उद्देश

- १) लोकशाही शासन व्यवस्थेत ग्रामसभेचे महत्त्व समजून घेणे.
- २) ग्रामसभेचे अधिकार व कर्तव्य याचे विश्लेषण करणे.
- ३) ग्रामीण विकासातील ग्रामसभेचे योगदान स्पष्ट करणे.

संशोधन पध्दती :-

कोणत्याही विषयाचे किंवा घटनेचे अध्ययन करित असताना ते वैज्ञानिक पध्दतीने होणे आवश्यक असते. या दृष्टीने प्रस्तुत संशोधन करण्यात आले आहे. प्रस्तुत संशोधनासाठी वर्णनात्मक आराखडा निवडण्यात आला आहे. सामाजिक संशोधन पध्दतीत सर्वात महत्त्वाचे कार्य म्हणजे तथ्य संकलन होय. प्रस्तुत संशोधनात तथ्य संकलनासाठी द्वितीयक स्रोतांचा वापर करण्यात आला आहे. संशोधनातील द्वितीयक स्रोत ही इतर व्यक्तीने पूर्वीच गोळा केलेली असून ती लिखित स्वरूपाची असतात अशा तथ्यांचा उपयोग संशोधनात होत असतो. प्रस्तुत संशोधनात संदर्भ ग्रंथ, शासकीय मासिके, अहवाल, प्रकाशित ग्रंथ, अप्रकाशित साहित्य इत्यादींचा उपयोग करण्यात आला आहे. तसेच अभिलेख, वर्तमानपत्र, साप्ताहिके ई. द्वितीयक स्रोतांचाही उपयोग संशोधनात करण्यात आला आहे.

ग्रामसभा: महत्त्व

लोकशाही शासन व्यवस्थेत निवडणुकांमधून निवडून आलेल्या सभासदांची प्रतिनिधी मंडळे अस्तित्वात येतात. ही मंडळे व त्यांचे सभासद अधिवेशने यांच्या माध्यमातून शासनव्यवस्थेच्या कार्यात सक्रीय होतात. ग्रामसभासुद्धा गावाच्या क्षेत्रात काम करणारी नागरिकांची चिरंतन सभा आहे. बैठकीच्या रूपाने आपल्या क्षेत्रातील महत्त्वपूर्ण विषयांवर चर्चा व ठराव करून ती आपल्या नागरिकांच्या जीवनाला विशिष्ट दिशा देण्याचे कार्य करते. बैठकीच्या रूपाने ही सभा या कामी सक्रीय होते. नागरिकांची ही ग्रामसभा गावाच्या क्षेत्रात येणा-या घटकांसंबंधी काम करणा-या सर्व संस्था, संघटना यांच्याबाबत तसेच नागरिकांची कामे आणि अधिकार यांच्यासंबंधित चर्चा करून योग्य तो निर्णय घेऊ शकते. त्या घटकांबाबत नागरिकांच्या हितासाठी भारतीय राज्यघटना व केंद्रीय शासनाने केलेल्या नियमांना अधीन राहून योग्य तो नियम करू शकते, वा केंद्रीय अथवा घटक राज्याला तसा नियम करण्याची विनंती करू शकते. त्याशिवाय ग्रामपंचायतीसह वरिष्ठ शासन प्रशासन व्यवस्थेकडे आपल्या दैनंदिन जीवनातील प्रश्न मांडणे, त्या प्रश्नांकडे लक्ष वेधणे, विकासाचा प्राधान्यक्रम ठरविणे, विविध प्रश्न आणि समस्यांवर खुलेपणाने चर्चा करणे, विकास योजनांच्या लाभार्थी निवडीच्या प्रक्रियेत सहभागी होणे, ग्रामपंचायतीने आवाहन केल्याप्रमाणे गावाच्या विकासासाठी श्रम आणि पैशाच्या रूपाने विकास कामांत मदत करणे इत्यादी बाबत ग्रामसभा सदस्यांना भूमिका बजावता येते.



महिला व बाल विकास समिती

या समितीतील सदस्यांपैकी किमान ७५% सदस्य महिला असतात. ग्रामसभेकडून या सदस्यांची निवड होत असली तरी महिला ग्रामसभेने निवडलेल्या महिलांचीच प्राधान्याने निवड केली जाते. एकात्मिक बाल विकास प्रकल्प कार्यालयाकडून महिला व बालकांच्या विकासासाठी राबविण्यात येणारे आहार, आरोग्य व स्वच्छतेसंबंधी कार्यक्रम व योजना यांच्यावर संनियंत्रण करणे, त्यांच्या यशस्वीतेसाठी प्रयत्न करण्याचे काम या समितीचे आहे. महिलांचे सक्षमीकरण व्हावे. त्यांचा आर्थिक विकास व्हावा, ग्राम पाणीपुरवठा व स्वच्छता क्षेत्रात त्यांचा सक्रिय सहभाग असावा, तसेच ग्रामशासन आणि निर्णय प्रक्रियेतील सहभागात वाढ व्हावी यासाठी ही समिती कार्य करते. खेड्यातील महिला मोकळेपणाने बोलू शकत नाहीत. समस्या मांडू शकत नाहीत. अशी परिस्थिती बदलण्यासाठी त्यांच्याच सहभागातून स्थानिक समस्यांवर उपाय योजना यावेत यासाठी समिती कार्य समिती करित असते.

ग्रामशिक्षण समिती

ग्रामशिक्षण समितीच्या कार्याचा प्रमुख उद्देश प्रत्येक मूल अथवा व्यक्तीला सुशिक्षित बनवून शिक्षणाचे सार्वत्रिकीकरण करणे हा आहे. सरपंच हा ग्रामशिक्षण समितीचा अध्यक्ष असून ग्रामपंचायत क्षेत्रातील जिल्हा परिषद शाळेचा मुख्याध्यापक हा समितीचा सचिव असतो. तसेच महिला, सामाजिक कार्यकर्ते, निवृत्त शिक्षक, ग्रामसेवक, तलाठी, निवडक ग्रामपंचायत सदस्य इत्यादी ग्रामशिक्षण समितीचे सदस्य असतात. शिक्षणाचा विस्तार आणि विकास यासाठी सरकारकडून राबविण्यात येणारे कार्यक्रम, योजना, पायाभूत सुविधांची निर्मिती उदा. क्रीडांगण, शाळागृह, इतर शालेय इमारती, बांधकाम, इत्यादींचे पर्यवेक्षण करणे व त्यावर नियंत्रण ठेवणे, ग्रामीण भागातील शिक्षकांची दैनंदिन उपस्थिती व कामकाज यावर नियंत्रण ठेवणे, गावातील शिक्षणाचे नियोजन करून सर्व प्रकारच्या शिक्षणाच्या प्रशासनावर नियंत्रण ठेवणे, प्राथमिक शाळा, अनौपचारिक शिक्षण केंद्र, प्रौढ शिक्षण केंद्र, इत्यादी शैक्षणिक उपक्रमांचे नियोजन करणे, शैक्षणिक व भौतिक सुविधांच्या याबाबत असणा-या त्रुटी व उणिवा वरिष्ठांच्या निदर्शनास आणून देणे, पालकांचे शैक्षणिक प्रबोधन करणे इत्यादी कामे शिक्षण समिती करित असते.

ग्राम पाणीपुरवठा व स्वच्छता समिती

शुद्ध नियमित पिण्याच्या पाण्याचा पुरवठा ही ग्रामीण जनतेची मूलभूत गरज आहे. पिण्याच्या पाण्याचे उपलब्ध स्रोत व यंत्रणा यावर थेट जनतेचे नियंत्रण प्रस्थापित व्हावे म्हणून प्रत्येक ग्रामपंचायतीच्या अंतर्गत ग्रामसभा महिला ग्रामसभेचे मत विचारात घेऊन ही समिती स्थापन करते. पाणीपुरवठा यंत्रणांची देखभाल, दुरुस्ती करणे ही ग्रामीण पाणीपुरवठा व स्वच्छता समितीची मुख्य जबाबदारी आहे. पाणी कर्मचारी व इतर कर्मचारी यांची नेमणूक करून त्यांचे प्रशिक्षण व कार्याचे संनियंत्रण करणे, खाजगी नळ कनेक्शन देणे, गावातील सांडपाण्याचे व्यवस्थापन करणे, पावसाळ्यापूर्वी पाणी पुरवठा योजनेची पाहणी करून त्रुटींचा अहवाल ग्रामपंचायतीला कळविणे, जलजन्य आजार आढळून आल्यास नजीकच्या आरोग्य केंद्रास माहिती देणे, पाणी नमुने तपासणीसाठी जिल्हा प्रयोगशाळेत पाठवणे, टँकरने पाणी पुरवठा होत असल्यास पाणी शुद्ध असल्याची खात्री करून घेणे, गावात आरोग्यविषयक मेळावे आयोजित करणे, इत्यादी कार्ये समितीने करणे अपेक्षित आहे.

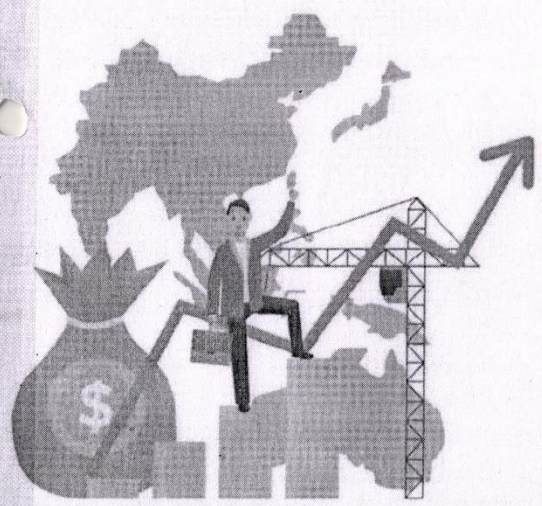
सामाजिक लेखापरीक्षण समिती

ग्रामसभेने ग्राम पाणी पुरवठा व स्वच्छता समितीला दिलेल्या आर्थिक अधिकारांची वेळोवेळी तपासणी करण्यासाठी सामाजिक लेखापरीक्षण समिती स्थापन करण्यात येते. ग्रामपातळीवर सुरू असलेल्या ग्राम पाणीपुरवठा विकास कामांचे व्यवहार तपासणे आणि हिशोबांचा अंतर्गत आढावा घेणे यासाठी ही समिती कार्य करते. समिती सामाजिक, आर्थिक, तांत्रिक, इत्यादी प्रकारच्या सर्व व्यवहारांचे तसेच त्यांच्या नियोजन व अंमलबजावणीचे योग्य प्रकारे लेखा परीक्षण करून अहवाल ग्रामसभेस सादर करते.

निर्मल ग्राम समिती

ग्रामसभेची ही महत्वाची समिती आहे. सरपंच हा या समितीचा अध्यक्ष असून ग्रामसेवक हा सचिव असतो. ग्रामपंचायत क्षेत्रातील ग्रामसभेने निवडलेले सदस्य आणि ग्रामपंचायत क्षेत्रात काम करणारे सर्व शासकीय कर्मचारी या समितीचे सदस्य असतात. संपूर्ण स्वच्छता अभियानांतर्गत घर तेथे शौचालय बांधणे, शौचालयाच्या नियमित वापरासाठी लोकांचे प्रबोधन करणे. शाळा, आंगणवाडीच्या ठिकाणी शौचालय बांधणे, धन कचरा व सांडपाणी व्यवस्थापन, १००% शौचालयाचा वापर करण्याची सवय गावक-यांमध्ये रुजविणे याला अनुसरून ही समिती गाव पातळीवर काम करते.

more sin
Ecomi



Pay PhonePe BHIM 9623979067



Worldwide International Inter
Disciplinary Research Journal
Website: www.wiidrj.com
Mahatma Phule Mahavidyalaya, Tardona Rd, Nandgaon, Beed, Maharashtra (India)
Email: siddhi@sidhi.ac.in
Web: +91-9623979067



MAH/NAN/10936/2015
ISSN: 2454-7905
SJIF 2022 - Impact Factor: 7.479

**Worldwide International
Inter Disciplinary Research Journal**
(A Peer Reviewed)

Year - 7, Vol.1, Issue-LIV, 9 May 2022

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Udgir's
Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur

NAAC Accredited with 'B' Grade
Dist. Latur State : Maharashtra (431515)

One Day Inter Disciplinary International Conference (Online)
Organized By Department of Economics

On
The Global Relevance of Indian Economic Thoughts
भारतीय आर्थिक विचारांची वैश्विक प्रसंगिकता



Chief Editor : Principal Dr. Vasant Biradar
Editor : Dr. D. D. Choudhri

Quarterly Research Journal
[Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture,
Management, Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism,
Mass Communication, Library Science Faculty's]

Vasundhara
PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnampur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519

ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor: 7.479

Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

A Peer Reviewed Referred Journal

Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering,
Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci, Faculty's)

www.wiidrj.com

Vol. I ISSUE - LIV Year – 7 09 May 2022

भारतीय आर्थिक विचारांची वैश्विक प्रासंगिकता The Global Relevance of Indian Economic Thoughts

:: Editor in Chief ::

Principal Dr. Vasant Biradar

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur.

:: Editor ::

Dr. D. D. Choudhri

Professor, Department of Economics,
Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur.

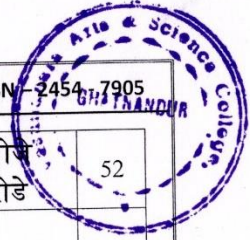


Editor in Chief : Mrs. Pallavi Laxman Shete
Principal, Sanskriti Public School, Nanded.(MH. India)

Director: Mr. Tejas Rampurkar
(For International contact only +91-8857894082)

::Address for Correspondence::

House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India -
Maharashtra) Website: www.wiidrj.com Email: Shrishprakashan2009@gmail.com
umbarkar.rajesh@yahoo.com Mob. No: +91-9623979067



15.	महात्मा गांधीजींचे आर्थिक विचार व प्रासंगिकता	डॉ. भरत बाबुराव नागरगोरे डॉ. दिगंबर भगवानराव रोडे	52
16.	दीन दयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता	डॉ. राजेश गं. उंबरकर	57
17.	महात्मा गांधी, यांचे आर्थिक विचार	डॉ. होनश्री यशवंत पाटील	63
18.	महात्मा गांधीजींच्या आर्थिक विचारांची वर्तमानकालीन प्रासंगिकता	डॉ. प्रा. बंडे मोहन व्यंकटराव	68
19.	महात्मा गांधींच्या आर्थिक तत्त्वज्ञानाची वैश्विक प्रासंगिकता	डॉ. टेंकाळे सुवर्णा उमाकांत	72
20.	महात्मा फुले यांचे आर्थिक विचार	डॉ. सुनिता लिंबराज गुजर	76
21.	महात्मा फुले यांचे आर्थिक विचार संशोधक	दीपक सोपान जाधव डॉ. विश्वनाथ कोट्टर सर	80
22.	महात्मा फुले यांच्या आर्थिक विचारांची वर्तमानकालीन उपयुक्तता	डॉ. वसंत नानाराव पतंगे	86
23.	महात्मा फुले यांच्या आर्थिक विचारांची प्रासंगिकता	प्रा. डॉ. डी. पी. कांबळे	91
24.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार आणि आजची आर्थिक परिस्थिति	डॉ. मिना गीताराम मेहत्रे	94
25.	भारतातील समाजसुधारकांचे आर्थिक विचार आणि त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता	डॉ. सुनिता लिंबराज गुजर	98
26.	21 व्या शतकात संत रविदासांच्या विचारांची प्रासंगिकता	प्रा. डॉ. रत्नाकर रामराव कांबळे	101
27.	महात्मा जोतिबा फुले यांचे आर्थिक विचार	प्रा. डॉ. परशुराम पाटील	105
28.	भारतातील समाजसुधारकांचे आर्थिक विचार आणि त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता	डॉ. मोरे अर्जून मोहनराव	108
29.	भारतातील समाजसुधारकांचे आर्थिक विचार आणि त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता	शुभम नामदेव आंबेकर	113
30.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार व त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता	प्रा. डॉ. प्रिया भा. बोचे	121
31.	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार आणि त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता :	प्रा. श्रीमंत तुकाराम कावळे	125

भारतातील समाजसुधारकांचे आर्थिक विचार आणि त्यांची वैश्विक प्रासंगिकता

डॉ. मोरे अर्जून मोहनराव

(अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख) वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर ता.अंबाजोगाई जि.बीड

प्रस्तावना :

भारतीय समाज सुधारकांचे कार्य हे नेतृदिप स्वरूपाचे दिसून येते. या समाज सुधारका मध्ये सर्वत्र जाती,धर्माच्या स्त्री-पुरुषांचा समावेश झालेला आहे. या समाज सुधारकांनी समाजातील अनिष्ट प्रथा परंपरा यांना विरोध करून त्या बंद केल्या. त्यांच्या सामाजिक कार्यामुळे समाजात सर्वधर्म समभाव, स्त्री-पुरुष समानता, सर्वांना समान विकासाची संधी इत्यादी स्वरूपात समाज विकास घडून आला आहे. या समाज सुधारकांनी समाजातील अनिष्ट प्रथा परंपरांनाच विरोध केला नाही तर समाजात आर्थिक विकास घडवून आणण्याचे कार्य केले.

आर्थिक विकासाचे स्वरूप हे उद्योग, व्यवसाय, औद्योगिकरण इत्यादीची निर्मिती अशाप्रकारे दिसून येते. आर्थिक विकास घडवून आणण्या करिता स्थळ, काळ आणि परिस्थितीनुसार विचार करावा लागतो. ज्या काळामध्ये जशी परिस्थिती असेल त्या परिस्थितीला अनुसरून आर्थिक विकासाचे नियोजन करावे लागते. त्यामुळे राजाराम मोहन राय, महात्मा फुले, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड, महात्मा गांधी यांच्या काळात ज्याप्रकारे आर्थिक विकासाची परिस्थिती होती. त्या परिस्थितीला अनुसरून या समाज सुधारकांनी आर्थिक विकासा संबंधी विचार मांडून कार्य केले आहेत. या समाज सुधारकांनी आर्थिक विकासात समतोल विकासाला महत्व दिले. त्यामध्ये ग्रामीण विकासावर अधिक भर दिला. त्यामध्ये शेतीकरिता पाणी, नवनवीन वि-बियाणे, नगदी पिके, शेतीचे विभाजन, कुटीर उद्योग शेतीला जोड उद्योग, लघुउद्योग, व्यापार, बाजारपेठ, औद्योगिकरण, दळण-वळणाच्या सुविधा इत्यादीला महत्व दिले आहे. या समाज सुधारकांच्या आर्थिक विचाराचे स्वरूप मांडण्याकरिता पुढील प्रमाणे संशोधनाची उद्दिष्टे मांडण्यात आली आहेत.

संशोधनाची उद्दिष्टे :

- 1) समाज सुधारकांच्या कार्याचा आढावा घेणे. =
- 2) समाज सुधारकांच्या आर्थिक विचारांची पार्श्वभूमी जाणून घेणे.
- 3) समान सुधारकांनी आर्थिक विकासाकरिता केलेल्या कार्याचा आढावा घेणे.

सदरील उद्दिष्टांना अनुसरून पुढीलप्रमाणे संशोधनाच्या गृहितकांची मांडणी करण्यात आली आहे.

गृहितके :

- 1) भारतीय आर्थिक विकासाला समाज सुधारकांचे योगदान लाभले आहे.
- 2) भारताच्या समतोल विकासाला समाज सुधारकांनी दिशा दिली.

3) समाज सुधारकांनी आर्थिक विकासाची पायाभरणी केली.

सदरील गृहितकांच्या पडताळणी करिता पुढीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा आवलंब करण्यात आला.

संशोधना पध्दती :

सदरील संशोधन विषयाच्या तथ्य संकलना करिता द्वितीयक स्रोताचा आवलंब करण्यात आला. यामध्ये संदर्भग्रंथ, मासिके, नियतकालिके, वर्तमान पत्रातील लेख इत्यादींचा वापर केला आहे. तसेच अप्रकाशित एम.फिल., पीएच.डी.चे प्रबंध, इंटरनेट यांचा ही वापर करण्यात आला आहे.

विषय प्रतिपादन :

1) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर :

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर हे अर्थशास्त्रज्ञ म्हणून ओळखले जातात. त्यांचा मुख्य विषय अर्थशास्त्र होता. बाबासाहेबांनी अर्थशास्त्रात विपुल लिखाण केले, असून या विषयावर त्यांची तीन प्रमुख पुस्तके आहेत. त्यामध्ये 1) ऍडमिनिस्ट्रेशन ऍन्ड फायनान्स ऑफ दि ईस्ट इंडिया कंपनी 2) दि इन्व्होल्यूशन ऑफ प्रोव्हिन्शियल फायनान्स इन ब्रिटिश इंडिया 3) दि. प्रॉब्लेम ऑफ द रुपी : इट्स ओरिजिन ऍन्ड इट्स सोल्यूशन या तीन पुस्तकांमध्ये त्यांनी आर्थिक विचार नमुद केले आहेत. आंबेडकरांची पहिली दोन पुस्तके सार्वजनिक वित्तव्यवस्थेवरील असून त्यातील पहिल्या पुस्तकात ईस्ट इंडिया कंपनीचा आर्थिक व्यवहारात भाष्य केले आहे तर दुसऱ्या पुस्तकात ब्रिटिशांच्या राजवटीतील भारतात वित्तीय व्यवहारामधील केंद्र आणि राज्य संबंधावर भाष्य केले आहे. त्यांनी तिसऱ्या पुस्तकात चलन विषयक अर्थशास्त्रावरील विचार मांडले आहेत.

जाती व्यवस्था आणि अस्पृश्यतेसारख्या सामाजिक आजारांचे आर्थिक पैलु उलगडून दाखविणे हे डॉ.आंबेडकरांचे आणखी एक विद्वतापूर्ण कार्य होय. श्रमविभागणीच्या तत्वानुसार महात्मा गांधींनी जाती व्यवस्थेचे अस्तित्व स्विकारले होते. मात्र आंबेडकरांनी जातीचे विध्वंसनाच्या आपल्या ग्रंथात त्यावर कडाडून टीका केली होती जाती व्यवस्थेमुळे केवळ श्रमाची विभागणी केली गेली नसून श्रमिकांचीच विभागणी केली गेली आहे हे त्यांनी निदर्शनास आणून दिले. डॉ.आंबेडकरांच जाती व्यवस्थेवरील हल्ला हे केवळ उच्चवर्णीयांच्या वर्चस्वाला दिलेले आव्हान नव्हते तर आर्थिक विकासाशी त्यांच्या मांडणीचा जवळचा संबंध होता. जाती व्यवस्थेमुळे श्रमाची आणि भांडवलाची गतीशिलता कमी झाली असून त्याचा देशाच्या अर्थव्यवस्थेवर आणि विकासावर प्रतिकूल परिणाम झाला आहे. असे त्यांनी स्पष्ट केले. आंबेडकर आर्थिक लोकशाहीचे पुरस्कर्ते होते. त्यांच्या मते सामाजिक व आर्थिक लोकशाहीकडे दुर्लक्ष करून राजकीय लोकशाही टिकू शकणार नाही. त्यांनी डायरेक्टव्ह प्रिन्सिपल्स ऑफ दि स्टेट पॉलिसी हा अनुच्छेद घटनेत समाविष्ट करून आर्थिक लोकशाहीचा हेतू विशद केला.

2. छत्रपती राजर्षी शाहू महाराज :

शाहू महाराजांनी आर्थिक विकास करण्याकरिता शेती विकासाला प्राधान्य दिले. शेतीकरिता कोल्हापूर संस्थानात बंधारे बांधले त्यामुळे हरीत क्रांती घडून आली पडणाऱ्या दुष्काळावर उपाय म्हणून शेतकऱ्यांना शेत

साऱ्यामध्ये सुट दिली. त्यांच्या मते शेतकऱ्यांचा आर्थिक विकास घडून येण्याकरिता शेती व्यवसायाला नगदी पिकाची जोड देवून दुष्काळावर मात केली पाहिजे. त्याच बरोबर त्यांच्या मते कोणत्याही देशाने उद्योग क्षेत्रात विकास केला तर तो देश आर्थिक दृष्टीने सक्षम होतो. या विचारातून त्यांनी कोल्हापूर संस्थानात औद्योगिक क्षेत्राचा विकास करण्यावर भर दिला. त्यांनी उद्योगधंद्याच्या माध्यमातून तेल, कापड, सुत यामध्ये प्रगती केली पाहिजे. तसेच साखर, रबर, चहाकॉपी, इत्यादीची निर्मिती केली. या उद्योगाकरिता त्यांनी भांडवलाची तरतूद केली.

शाहू महाराजांनी आर्थिक विचारा करिता व्यापार वाढीवर लक्ष केंद्रीत केले. त्यांनी शेतकऱ्यांच्या माला करिता बाजार पेठेची स्थापना केली. उद्योगधंद्याचा विकास घडून यावा या करिता बँकेची व्यवस्था केली. व्यापारी वर्गाला संरक्षण दिले. यातून त्यांनी कोल्हापूर संस्थानिकाचा विकास घडून आणला थोडक्यात शाहू महाराजांनी आर्थिक विकासाकरिता शेतीविकास, उद्योगविकास, व्यापार, लघुउद्योग कुटीर उद्योग यांच्या विकासाला चालना दिली. शाहू महाराजांच्या मते आर्थिक विकास घडवून आणण्याकरिता मुळ उत्पादन क्षेत्राचा विकास करणे आवश्यक आहे. या करिता कृषी, व्यापार औद्योगिकरण, कुटीर उद्योग यांचा विकास घडवून आणला पाहिजे.

3. महात्मा फुले :

महात्मा फुले अर्थशास्त्रा नव्हते. परंतु ते कृतीशील समाजचिंतक होते. तेंव्हा त्यांचे विचार हे त्यांच्या अनुभवातून समोर आले. त्यांनी आर्थिक विचार मांडीत असताना शेतकऱ्यांची दारिद्र्यातील स्थिती, कष्टकरी समाजाची स्थिती यांच्या जीवनावर त्यांनी आर्थिक विचार मांडले आहेत. महात्मा फुले यांनी आर्थिक विचार मांडताना स्पष्ट केले की, प्रथमतः शेतकऱ्यांना शेती उद्योगाचे पूर्ण स्वातंत्र्य असावे. कष्ट करणाऱ्याची शेती हा विचार स्विकारला पाहिजे. शेतकऱ्यांना त्यांच्या मालाची किंमत ठरविताना आली पाहिजे. सरकारने शेतकऱ्यांना पाणी, शेती अवजारे, शेतीसाठी लागणारे बि-बियाणे आणि दुष्काळावर आर्थिक मदत केली पाहिजे. तेव्हांच शेतकऱ्यांची आर्थिक स्थिती सुधारेल थोडक्यात महात्मा फुले यांनी शेतकरी व शेतीव्यवसाय यांच्या विकासावर आर्थिक विकास आवलंबून आहे यावर भर दिला.

4. महात्मा गांधीजीचे आर्थिक विचार :

गांधींच्या मते देशाची अर्थव्यवस्था मोठ्या प्रमाणात पाणी सुविधा, उद्योगधंदे, कुटीर उद्योग यांच्या सुविधावर आवलंबून आहे. गांधीजी आर्थिक विचारासंबंधी म्हणतात की आर्थिक विकासाकरिता सर्वच घटकांचा समतोल विकास केला पाहिजे. तसेच सर्वच जाती धर्म स्त्री-पुरुष यांचा ही समतोल विकास घडून आला पाहिजे. आर्थिक विकासाकरिता समानवादी समाजाची स्थापना करणे आवश्यक आहे. आर्थिक विकासाकरिता बेरोजगारी शोषण आणि मागासलेले घटक यांचा विकास घडून आला की आर्थिक प्रगती होते. तसेच समाजातील हिंसेचे निर्मुलन करणे आवश्यक आहे. आर्थिक विकासाकरिता संशोधन आणि योग्य पध्दतीने वितरण घडून आले पाहिजे. गांधीजीने राजकीय दृष्टीकोनातून आर्थिक विकासावर लक्ष केंद्रित केले. त्यांच्या मते आर्थिक विकासाकरिता व्यापार स्वरूपात योजना आखल्या पाहिजेत. योजना आखीत असताना ग्रामीण भागातील लोकांना उद्योगाची निर्मिती केली

पाहिजे. या योजनांचा लाभ मागसलेल्या वर्गाला झाला पाहिजे. आर्थिक विकासातून असमानतेचे निर्मुलन कुपोषण, आर्थिक शोषण, बेरोजगारी, दारिद्र्य यांचे निर्मुलन झाले पाहिजे. त्यांनी आर्थिक विकासात औद्योगिककरणाला विरोध केला त्यांच्या मते औद्योगिकरणामुळे कुटीर उद्योग संपूष्ठात येतील ग्रामीण व्यावसायिकांची बेरोजगारी निर्माण होईल. असे होवू नये या करिता कुटीर उद्योगाच्या विकासातून आर्थिक विकास घडवून आणला पाहिजे.

5. राजाराम मोहन रॉय :

राजाराम मोहन रॉय यांनी आर्थिक विकासा संबंधी कोणताही सिध्दांत अथवा पुस्तक लिहिलेले नाही. त्यांनी आर्थिक विकासाचे स्वरूप आणि आर्थिक विकासाचे घटक यांच्या माध्यमातून महिलांचे सबलीकरण या विषय आले विचार मांडलेले आहेत. त्यांच्या मते जमीनदार, जागीरदार यांच्या विरोधात आवाज उठवून शेतकरी, मजूर, कष्टकरी यांच्या आर्थिक विकासाकडे लक्ष केंद्रीत केले. त्यांना जमीनीचे स्वामीत्व मान्य नव्हते. जे कसीन त्याची जमीन कुळदाराची जमीन असली पाहिजे या विचारातून त्यांनी आर्थिक विकासाची मांडणी केली. जमीनीचे विभाजन झाले तर उत्पादनात वाढ होईल. त्यातून आर्थिक विकासाला गती मिळेल असे त्यांचे मत होते. तसेच लघुउद्योग कुटीर उद्योगांना गती द्यावी या उद्योगामध्ये महिलांना स्थान द्यावे. त्यामुळे त्यांचे सबलीकरण घडून येईल. राजाराम मोहन रॉय यांनी स्वतंत्र व्यापार आणि बाजारपेठांच्या निर्मितीला महत्व दिले. त्यांनी समतोल आर्थिक विकासाचा पुरस्कार केला.

6. सयाजीराव गायकवाड :

सयाजीराव गायकवाड हे बडोदा संस्थानाचे राजे होते. त्यांनी आपल्या संस्थानामध्ये आर्थिक विकास घडवून आणण्यासाठी शेतती व्यवसाय सुधारण्यावर भर दिला. शेतती करिता पाणी, नवनवीन पीकाची लागवड, शेतती मालाला बाजारपेठ याला महत्व दिले. त्याच बरोबर त्यांनी समतोल आर्थिक विकास घडवून आणण्याकरिता लघु उद्योग, कुटीर उद्योग, शेतीला जोड उद्योग यावर भर दिला. त्याचबरोबर आर्थिक विकास घडवून आणण्याकरिता सुशिक्षित पीढी निर्माण झाली पाहिजे या करिता त्यांनी शिक्षणावर भर दिला. त्यांनी आपल्या राज्यातील व्यापकांना संरक्षण दिले. बाजार पेठाच्या निर्मिती बरोबरच व्यापारी वर्गाला आर्थिक मदत ही दिली. त्यांच्या मते शेतती उद्योग सुधारले, कुटीर उद्योगाला गती मिळाली आणि बाजारपेठाची स्थापना झाली की आर्थिक विकास घडून येतो.

अध्ययनाचे महत्व :

प्रस्तुत अध्ययनाच्या माध्यमातून भारतीय समाज सुधारकांनी समाजातील समस्यांचे निर्मुलन करून समाज एकसंघ बांधण्याचा प्रयत्न केला. त्याचप्रमाणे समाजाच्या विकासाकरिता आर्थिक घटकाचे महत्व कसे मांडले. याचे अध्ययन घडून आले. त्याचबरोबर समाज सुधारकांना आर्थिक विकासातून काय साध्य करावयाचे होते याची जाणीव झाली. सदरील अध्ययनाच्या माध्यमातून विद्यार्थी संशोधक राजकीय नेते यांना आर्थिक विकासाचे घटक कसे साधवेत आर्थिक विकासातून सामाजिक विकास कसा घडून आणता याची दिशा मिळेल. तसेच सद्याच्या

राजकीय नेत्यांना आर्थिक विकासाच्या माध्यमातून समाजाचा समतोल कसा ठेवावा. सर्वच घटकांना विकास प्रक्रियेत कसे सहभागी करून घ्यावे याची दिशा मिळेल.

सारांश :

भारतीय समाज सुधारक हे फक्त समाजातील असमतोल संपूष्टात आणून नव्हते. तर ते समाजाचा, राष्ट्राचा आर्थिक विकास कसा करता येईल याचा विचार करून त्या पध्दतीने आर्थिक विकासाची योजना निर्माण करित होते. योजनेप्रमाणे आर्थिक विकासाच्या प्रक्रिया रूबवित होते. याची जाणीव प्रस्तुत अध्ययनाच्या माध्यमातून स्पष्ट होत आहे.

संदर्भ ग्रंथसूची :

- 1) रा.ना.घाटुळे "सामाजिक संशोधन पध्दती व तत्वे" श्रीमंगेश प्रकाशन, नागपूर.
- 2) दा.धो काचोळे "समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती" कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद.
- 3) Wikipedia.
- 4) मोरे दिनेश : "आधुनिक महाराष्ट्रातील" परिवर्तनाचा इतिहास (1818-1960) के.एस. पब्लिकेशन, पुणे.
- 5) भिडे जी.एल. "महाराष्ट्रातील समाज सुधारकांचा इतिहास" फडके प्रकाशन, कोल्हापूर.
- 6) पाटील व्ही.बी. "19 व्या शतकातील महाराष्ट्रा मधील समाज सुधारकांचा इतिहास" डायमंड पब्लिकेशन्स, पुणे.
- 7) डोळस मिलिंद "भारतातील थोर समाजसुधारक" दामिनी प्रकाशन पुणे.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519



Peer reviewed Journal

Impact Factor:7.265

ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

December-2021 Volume-12 Issue-24

Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar – Thoughts and works

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Editor

Mr. Shashikant Jadhwar

I/C, Principal,
Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya,
Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

Executive Editor

Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap



Narwade
PRINCIPAL

Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431515



18	राजर्षी शाहू महाराजांचे आर्थिक व शैक्षणिक विचार	डॉ. एस. एस. देवनाळकर	54-55
19	महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे शैक्षणिक योगदान	प्रा. पांडरे विलास देवराव	56-62
20	थोर समाज सुधारक राजर्षी छत्रपती शाहू महाराज	डॉ. सुधीर व. गायकवाड	63-66
21	राजर्षी शाहू महाराज : शैक्षणिक व आर्थिक कार्य	प्रा. अमोल देविदास दिवटे	67-72
22	डॉ. आंबेडकरांची पत्रकारीता आणि राजकीय चिंतन	प्रा. डॉ. अरूण विठ्ठल सोनकांबळे	73-77
23	महात्मा फुले यांचे मराठी साहित्याला योगदान	प्रा. अरविंद बन्सी इंगळे	78-80
24	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का आर्थिक विचार और योगदान	डॉ. अर्जुन मोहनराव मोरे	81-83
25	स्त्री मुक्ती आंदोलनातील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे योगदान	प्रा. डॉ. अंकुश मारूती सोहनी	84-87
26	राजर्षी शाहू महाराजांचे समाजपरिवर्तनातील शैक्षणिक कार्य	प्रा. डॉ. खलील न. सय्यद	88-90
27	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि महिला सबलीकरण	Suman Kendre	91-93
28	महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे शेती व शेतकरी विषयक विचार	डॉ. गव्हाणे रमाकांत बबनराव	94-95
29	राजर्षी शाहू महाराज यांचे स्त्री-उद्धारविषयक विचार व कार्य	श्री योगेश ज्ञानदेव पाटील	96-98
30	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषिविषयक विचार	डॉ. सुरेश त्रिंबकराव सामाले	99-102
31	छत्रपती शाहू महाराज आणि महिला सक्षमीकरण	डॉ. निलेश गोकुळ शेरे	103-106
32	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शेतीविषयक आर्थिक विचारांचे अध्ययन	श्री. एच. व्ही. केळे, डॉ. डी. सी. रयाळ	107-110
33	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार व कार्य	प्रा. तुळशीदास मोकल	111-113
34	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे कृषिविषयक विचार	प्रा. देवशेट्टे सुरेश मनोहरराव	114-116
35	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक विचार	रेवडकर गणेश सुभाष	117-118
36	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे शिक्षणविषयक विचार	प्रा. जगदीश रामभाऊजी वाटमोडे	119-121

डॉ वी आर अम्बेडकर का आर्थिक विचार और योगदान

डॉ. अर्जुन मोहनराव मोरे

वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, तेहसील अंबाजोगाई, जि. बीड, महाराष्ट्र राज्य, ४३१५१९.

ई-मेल: dmoream@rediffmail.com

सार:

यह शोधडॉ बाबासाहेब आंबेडकरजी के अर्थशास्त्र विषय पर उन्होंने किया कार्य को उल्लेखित करता है। इस शोधपत्र का प्राथमिक लक्ष्य अर्थशास्त्र के क्षेत्र में डॉ अम्बेडकर की प्रतिबद्धता के बारे में सोचना है। यह पत्र उनके विचारों, विचारों, मूल्यांकन और प्रस्तावों से सहमत होने वाले संभावित परिवर्तनों को समकालीन समय सीमा में वित्तीय पहलुओं के क्षेत्र में व्यावहारिक सुधार लाने के लिए उपयोगी होगी। आर्थिक विकास, आधुनिक विकास आदि की दिशा में अम्बेडकरवाद पर आधारित संभावना चिंतन करने के लिए यह लेख उपयोगी होगा। डॉ बाबासाहेब आंबेडकर 1923 - 1956 के समय के दौरान देश के मौद्रिक मुद्दों और राष्ट्र के वित्तीय मुद्दों की देखरेख करने वाले एक विशेषज्ञ अर्थशास्त्री थे। आश्चर्यजनक रूप से डॉ अम्बेडकरजी ने समय से पहले वैश्वीकरण, उन्नति और निजीकरण जैसी मुक्त अर्थव्यवस्था की रणनीति की सिफारिश की थी। जैसा कि 1923 में हुआ था। उस समय से, भारत सरकार ने सितंबर 1991 में इस व्यवस्था को साकार किया है। वह इस बात से चिंतित थे कि रुपये को स्थिर रखा जाना चाहिए, इस तथ्य के बावजूद कि मुफ्त वित्तीय रणनीति को प्रभावी ढंग से प्रेषित किया जाना चाहिए। उन्होंने 'फ्रेमवर्क सिस्टम' की विशालता और आवश्यकता को रेखांकित किया, जो अभी भी सक्रिय रूप से काम कर रहा है। वह कार्य विभाजन के अग्रदूत हैं क्योंकि उन्होंने गतिशील ढांचे को परिभाषित किया और इस क्षेत्र के लिए कुशल व्यवस्था की, बाद में इसे अच्छी तरह से तैयार किया।

परिचय:

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर अर्थशास्त्र के विषय में औपचारिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले शुरुआती भारतीयों में से एक थे। उन्होंने 1917 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में पीएचडी की पढ़ाई की और बाद में उन्हें 1921 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स द्वारा अर्थशास्त्र में डीएससी से सम्मानित किया गया। उन्होंने उस समय भारत में प्रचलित सामाजिक विकृतियों का अध्ययन करने के लिए एक अर्थशास्त्री के रूप में अपने प्रशिक्षण का उपयोग किया और अपने भारत की आर्थिक समस्याओं की गहरी समझ उनके उत्तेजक भाषणों और बयानों में झलकती थी। उनका विश्लेषण तीक्ष्ण था और बड़े पैमाने पर लोगों के कल्याण पर ध्यान देने के साथ व्यावहारिक नीति समाधान के साथ प्रयोग किया जाता था। यह लेख मौद्रिक अर्थशास्त्र, सार्वजनिक वित्त, कृषि अर्थशास्त्र, जाति व्यवस्था के आर्थिक आयामों और अस्पृश्यता, और भारत के समग्र आर्थिक विकास के लिए उनकी रणनीतियों के क्षेत्र में डॉ अंबेडकरजी के योगदान पर प्रकाश डालता है।

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर और उनका आर्थिक कार्य:

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र में कई डिग्रियाँ प्राप्त कीं। उन्होंने अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में पढ़ाया। वे विदेश में अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। एक अर्थशास्त्री के रूप में, उन्होंने तर्क दिया कि औद्योगीकरण और कृषि विकास भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं। उन्होंने भारत में प्राथमिक उद्योग के रूप में कृषि में निवेश पर जोर दिया। डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर की दृष्टि ने सरकार को अपने खाद्य सुरक्षा उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद की। उन्होंने राष्ट्रीय आर्थिक और सामाजिक विकास का समर्थन किया। बुनियादी सुविधाओं के रूप में शिक्षा, सार्वजनिक स्वच्छता, सामुदायिक स्वास्थ्य, आवासीय सुविधाओं पर जोर दिया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के कारण विकास

के नुकसान की गणना की। उन्होंने मुद्रा प्रबंधन और कर ढांचे से लेकर कृषि से लेकर घरेलू और विदेशी विवादों तक कई मुद्दों पर टिप्पणी की है। 1917 - उन्होंने स्टॉक एंड शेयर डिवाइडर नामक एक कंपनी शुरू की, जो व्यापारियों और व्यापारियों को सलाह देती है। हालांकि, जब यह समझा गया कि कंपनी महार व्यक्ति की है, तो लोगों ने सलाह लेना बंद कर दिया और अम्बेडकरजी को अपनी कंपनी बंद करनी पड़ी।

डॉ बाबासाहेब आंबेडकरजी की तीन किताबें

उन्होंने अर्थशास्त्र पर 3 किताबें लिखीं। इन किताबों में भारत की आर्थिक व्यवस्था के बारे में उनकी क्रांतिकारी सोच शामिल है। -

1) "भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन और वित्त"

2) "ब्रिटिश भारत में प्रांतीय आर्थिक विकास"

3) "रूपए की समस्या: इसकी उत्पत्ति और इसका समाधान"

कानून मंत्री के रूप में, डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर ने अपने शोध प्रबंध, ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का विकास के आधार पर भारत के वित्त आयोग की स्थापना की। इसे बाद में वित्त के ऊर्ध्वधर और क्षेत्रीय संतुलन की समस्या के समाधान के लिए संविधान के अनुच्छेद 280 में शामिल किया गया था।

स्वर्ण मुद्रा विनिमय और भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना पर विचार -

रुपये की समस्या - इस पुस्तक में, डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर रुपये के अवमूल्यन पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। इसके बजाय, उन्होंने स्वर्ण विनिमय मानक (गोल्ड एक्सचेंज स्टैंडर्ड) शुरू करने की सिफारिश की। उन्होंने 1925 में स्थापित हिल्टन यंग कमीशन के समक्ष भी गवाही दी। फिर 1935 में भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना हुई। भारत की मूल आर्थिक सोच भी डॉ बाबासाहेब अम्बेडकरजी के आर्थिक विचार पर आधारित थी। उनका लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में रुपये की समस्या इस प्रबंध पर प्रा. जॉन कीन्स से विवाद हुआ उनकी इसे असहमति थी। प्रा. कीन्स का मत था कि मुद्रा के मूल्य के लिए स्वर्ण विनिमय प्रणाली को अपनाया जाना चाहिए। गोल्ड एक्सचेंज सिस्टम में, किसी देश की मुद्रा का मूल्य सोने के मूल्य से जुड़ा होता है। इस पद्धति को अपनाने वाले देश अपनी कागजी मुद्रा को एक निश्चित दर पर सोने में परिवर्तित करते हैं। साथ ही ऐसे देशों में सोने की कीमत सरकार तय करती है। हालांकि, स्वर्ण मानक प्रणाली में, वास्तविक मुद्रा में कुछ मात्रा में सोने का उपयोग किया जाता है।

मुद्रा संकट: ब्रिटिश सरकार ने मुद्रा संकट के समाधान के लिए रॉयल कमीशन की स्थापना की। इस आयोग के समक्ष बाबासाहेब द्वारा दी गई गवाही में हमें केवल दो बातों पर विचार करना है। इससे दो सवाल उठते हैं। एक तो क्या आपको अपनी विनिमय दर तय करनी चाहिए? और यदि हां, तो अन्यो की तुलना में इसका अनुपात क्या होना चाहिए? इस बहस में डॉ बाबासाहेब आंबेडकरजीने विनिमय दर तय करने के बजाय मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के महत्व पर जोर दिया।

घरेलू और विदेशी वस्तुओं पर विचार:

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकरजीके 28 फरवरी 1920 को मूकनायक इस पत्रिका में व्यक्त विचार:

स्वदेशी अर्थशास्त्री, जो इस बात पर अड़े हैं कि यह गरीब देश घरेलू वस्तुओं का उत्पादन करके समृद्ध होगा, उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि विदेशी वस्तुओं के आयात का कारण यह है कि यह कम कीमत पर उपलब्ध है। इसी तरह, देश में माल का उत्पादन नहीं होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह अधिक महंगा है, इसलिए यह विदेशी वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करता है। इसे बनाए रखने के लिए विदेशी सामान बंद करें, इस मंत्र का जाप किया जा रहा है। लेकिन किसने सोचा होगा कि अगर विदेशी सामान बंद कर दिया गया तो लोग महंगे घरेलू सामान खरीदने को मजबूर हो जाएंगे? यह कहने के बजाय कि इससे देश को फायदा होगा, देश के पूंजीपतियों को फायदा होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि गरीबों को अनियंत्रित व्यापार में मिलने वाले सामान के लिए अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी। इसमें उनका यह संभावना नहीं है कि वे इस तथ्य से संतुष्ट होंगे कि वे इन प्यारे शब्दों 'स्वदेशी' से भर जाएंगे। समृद्धि का यह स्वदेशी तरीका उन्हें घेर लेगा।

कर निर्धारण और सरकारों के बीच कर राजस्व का वितरण:

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकरजी ने ब्रिटिश सरकार और प्रांतीय सरकारों के बीच कर निर्धारण और कर राजस्व के वितरण के विषय पर कोलंबिया विश्वविद्यालय में पीएचडी शोध प्रबंध प्रस्तुत किया था। उस शोध प्रबंध में, उन्होंने कर राजस्व के वितरण में सुधार करने के बारे में विचार दिए थे। उनके शोध के आधार पर ही भारतीय कर निर्धारण एवं केन्द्र एवं राज्य में कर राजस्व के वितरण का सूत्र तैयार किया गया है। 13वें वित्त आयोग ने अम्बेडकरजी के कर राजस्व वितरण के सिद्धांत पर आधारित नीतियां बनाई थीं।

जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के आर्थिक आयाम:

डॉ बाबासाहेब अम्बेडकरजी के समय में, श्रम विभाजन और व्यावसायिक सिद्धांत के सिद्धांत का उपयोग करते हुए 'वर्ण' प्रणाली का औचित्य अपने चरम पर था। डॉ बाबासाहेब अम्बेडकरजी ने अपनी महान कृति, एनीहिलेशन ऑफ कास्ट में, तर्क के माध्यम से ऐसे सिद्धांतों का उपाहास किया और बताया कि ऐसी प्रणालियाँ 'श्रमिकों के विभाजन' पर अधिक आधारित थीं। उन्होंने इंगित किया कि जाति व्यवस्था विभिन्न लोगों के व्यवसायों को सौंपने के लिए जिम्मेदार है और यह पूंजी और श्रम की गतिशीलता में बाधा डालती है जो बदले में देश के आर्थिक विकास को बाधित करती है। जबकि आर्थिक विकास परिवर्तन का परिणाम है, जाति व्यवस्था उसी सामाजिक-आर्थिक प्रणाली को कायम रखती है जिससे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अम्बेडकर अस्पृश्यता के भी घोर आलोचक थे और इसे गुलामी से भी बदतर आर्थिक व्यवस्था मानते थे। व्हाट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टू द अनटचेबल्स (1945) में वे कहते हैं, 'अस्पृश्यता न केवल निरंतर आर्थिक शोषण की एक प्रणाली है, बल्कि अनियंत्रित आर्थिक शोषण की एक प्रणाली भी है।'

भारत के समग्र आर्थिक विकास के लिए रणनीतियाँ: डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर जनता के शोषण पर कार्ल मार्क्स के विचारों से सहमत थे और मानते थे कि भारत के आर्थिक विकास का मार्ग गरीबी और असमानताओं के उन्मूलन और अमीरों द्वारा शोषण का अंत होना चाहिए। हालाँकि उन्होंने एक आर्थिक प्रणाली के रूप में साम्यवाद का समर्थन नहीं किया। अपने निबंध, बुद्ध और कार्ल मार्क्स में, वे बताते हैं कि आर्थिक मकसद मार्क्स द्वारा तैयार की गई सभी मानवीय गतिविधियों का एकमात्र कारण नहीं हो सकता है और इसलिए परिणामी शोषण धार्मिक या सामाजिक भी हो सकता है, खासकर भारत में। डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर लोकतंत्र और मानवाधिकारों के प्रबल समर्थक थे और इसलिए उन्होंने साम्यवाद में तानाशाही और अराजकता की प्रवृत्ति को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने संविधान के सिद्धांतों के भीतर सुधार की बकालत की और इसलिए मार्क्स के एक राज्यविहीन समाज के विचार को खारिज कर दिया। अम्बेडकर ने मार्क्स के अधिनायकवादी दृष्टिकोण के विपरीत देश के आर्थिक विकास को चलाने में राज्य की भूमिका का समर्थन किया। सारांश: डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर उन कुछ आर्थिक सिद्धांतकारों में से एक थे जिनका आर्थिक नीतियों और योजनाओं के प्रति दृष्टिकोण व्यावहारिक और जनहित था। इस प्रकार, चाहे डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर वित्तीय विषयों या मौद्रिक सिद्धांतों पर लिख रहे थे, उनका मूल उद्देश्य उन निष्कर्षों तक पहुँचना था जो व्यावहारिक और सार्वजनिक हित दोनों थे। अर्थशास्त्र के ऐसे विविध क्षेत्रों में उनका योगदान उनकी महानता और बुद्धि का प्रमाण है। यह वास्तव में समग्र रूप से आर्थिक नीति निर्माण के क्षेत्र के लिए एक नुकसान है कि उनके विचारों और दृष्टि को उचित मान्यता नहीं मिली। अर्थशास्त्र के ऐसे विविध क्षेत्रों में उनका योगदान उनकी महानता और बुद्धि का प्रमाण है।

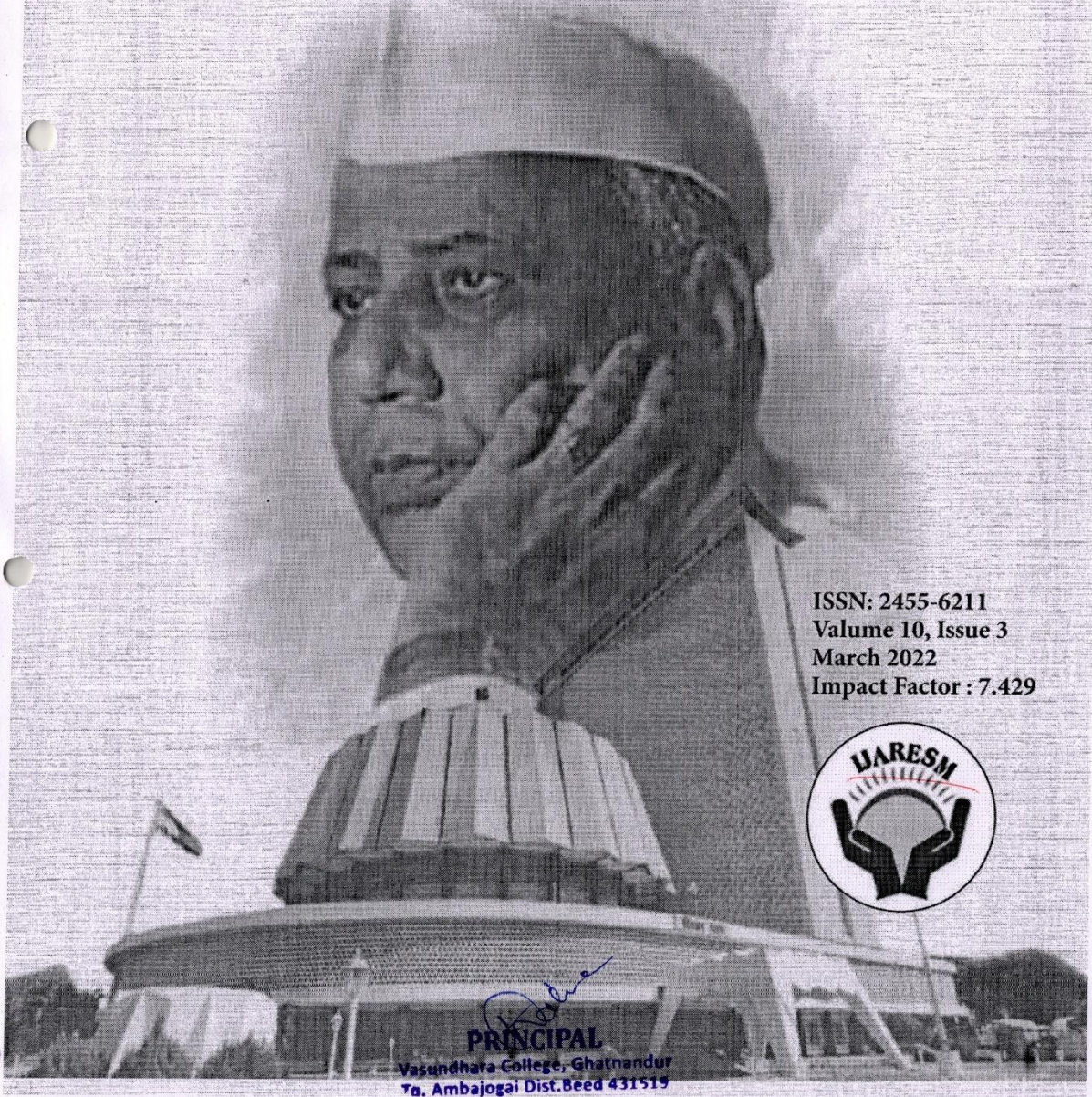
संदर्भ सूची:

1. Taxation Theory & Practice For B.B.A Semester IV of Dr. Bhim Rao Ambedkar University Agra - by Dr. H.C. Mehrotra (Author), Dr. S.P. Goyal (Author)
2. "Neglected Economic Thought of Babasaheb Ambedkar." Economic and Political Weekly 26, no. 15 (1991)- By Jadhav, Narendra.: 980-982.
3. DR. BABASAHEB AMBEDKAR WRITINGS AND SPEECHES Vol. 6 Compiled by Vasant Moon (487, 671)
4. Administration And Finance of The East India Company by Dr.B.R.Ambedkar.
5. Dr. AMBEDKAR'S THOUGHTS ON INDIAN ECONOMY by C. Muniyandl.

यशवंतराव चव्हाण आणि पंचायतराज व्यवस्था



संपादक
डॉ. राजेश करपे | डॉ. गणेश मोहिते



ISSN: 2455-6211
Volume 10, Issue 3
March 2022
Impact Factor : 7.429



[Signature]
PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



... अनुक्रम...

१३५) डॉ. मंगेश शेषराव खराटे, डॉ. अंकुश गंगाराम पाडळे	५२८	169) Asst, Prof. Pratibha Agharde	669
१३६) प्रा. डॉ. अनिल जामकर	५३१	१७०) डॉ. अनिल गंभिराव सोनवणे	६७१
१३७) प्रा. डॉ. सतीश खरात	५३५	१७१) ओंकार अंकुश कोरवले	६७७
138) Dr. Hemchandra Narsingrao Deshmukh	541	१७२) जितेंद्र प्रल्हाद आचमारे, डॉ. महेशकुमार मोट	६८३
१३९) डॉ. एन. वी. आघाव, डॉ. जी. वी. बनसोडे	५४६	१७३) डॉ. उमाकांत बाबुराव राठोड	६८८
१४०) मनिषा जगन्नाथ सनान्से	५४८	१७४) डॉ. प्रमोद चव्हाण, प्रा. धाजी सहदेवन	६९२
१४१) डॉ. मारोती गायकवाड	५५१	१७५) डॉ. योगिता किसनराव राहाणे	६९५
142) Dr. Rupali Prabhakar Palodkar	556	१७६) डॉ. रीना रमेश सुरडकर	६९८
१४३) अश्विनी भास्करराव शिंदे	५५९	१७७) डॉ. वंदना बनकर	७०१
१४४) प्रा. अंकुश तुकाराम करपे	५६२	१७८) प्रा. डॉ. भागवत सुकदेव परकाळ	७०५
145) Supekar Dnyaneshwar Dattatray	567	१७९) प्रा. डॉ. संजय काशिनाथ मगर	७०९
१४६) मरकड श्रीराम विलास, प्रा. डॉ. एम. एस. कांबळे	५७१	१८०) प्रा. प्राजक्ता वी. तुबे	७१४
१४७) डॉ. प्रमोद लक्ष्मणराव चव्हाण	५७६	१८१) प्रा. रासवे दिनकर सुदामराव	७१७
१४८) ज्योती प्रकाश गावंडे	५८०	१८२) प्रा. सदाशिव मोरे, डॉ. एजाज शेख	७२०
१४९) प्रा. किर्ती विजय करंजावणे	५८३	१८३) प्रा. डॉ. मारोती बाळासाहेब भोसले	७२३
१५०) डॉ. प्रमोद लक्ष्मणराव चव्हाण	५८६	१८४) प्रा. डॉ. सुनिल संभाजी साठे	७२९
१५१) डॉ. पांडुरंग श्रीरंग रामनाळ	५९०	१८५) वन्हाडे बापुराव भास्कर	७३४
१५२) प्रा. डॉ. शरद गावंडे, श्री. संजय सदाशिव बनकर	५९३	१८६) श्यामकांत काशिनाथ रुले	७३७
१५३) डॉ. प्रकाश रेशमाजी वाणी	५९८	१८७) श्रीमती लोंढे एस. डी., डॉ. तिडके आर. एन.	७४३
154) K. T. Gaikwad	601	188) Dr. Priya Narendra Kurkure	747
१५५) प्रा. देखणे व्ही. एल., प्रा. डॉ. नलावडे एस. एम.	६०४	१८९) डॉ. सुनील पिंपळे	७५१
१५६) प्रा. दसपुते ए. एम., प्रा. डॉ. नलावडे एस. एम.	६०७	१९०) प्रा. डॉ. रमेश औताडे	७५३
१५७) प्रा. डॉ. द. प्र. डुंबरे, मयुरी पवार	६१२	१९१) शामसुंदर किसनराव चमचे, प्रा. डॉ. शशिकांत पाटील	७५७
१५८) प्रा. डॉ. संतोष देशमुख	६१६	१९२) डॉ. राजू एस. पोपटघट, डॉ. गजानन के. सोनुने	७६१
१५९) डॉ. वैशाली बागुल	६१९	१९३) डॉ. पंडित शेषराव नलावडे	७६५
१६०) प्रा. डॉ. सुभाष राठोड	६२३	१९४) प्रा. डॉ. रविशंकर भगवानराव चव्हाण	७६८
१६१) डॉ. जयसिंग सिंगल, डॉ. देवराव दराडे	६२७	१९५) अजय कृष्णा पवार, डॉ. पंजाबराव पडूळ	७७०
१६२) डॉ. धैर्यशील साळुंके	६३२	१९६) प्रा. डॉ. सोमगोंडे एन. एस.	७७५
१६३) डॉ. गणेश शिंदे, डॉ. लहू घोरपडे	६३७	१९७) विजय तुकाराम हराळ	७७९
१६४) डॉ. गोवर्धन प्रल्हादराव औटे, राहुल श्रीकृष्ण इंगळे	६४१	१९८) समाधान अरुण फदाट	७८७
१६५) अश्विनी कृष्णराव राजत	६५३	१९९) डॉ. नंदिनी रविंद्र रणखांबे	७९०
१६६) सौ. रजनी आबाबाव तायडे	६५७	२००) कल्पना रामराव रामोड	७९५
१६७) सचिन संभाजी नवथर	६६१		
168) Dr, Vilas A. Narwade, Dr. B. B. Kagde	666		



यशवंतराव चव्हाण यांचे राजकीय योगदान

डॉ. पांडुरंग श्रीरंग रनमाळ

क्रीडा विभाग प्रमुख, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर

गोषवारा

यशवंतराव चव्हाण यांचे महाराष्ट्र राज्याच्या विकासात राजकीययोगदान आणि भूमिका जाणून घेणे हा या पेपरचा उद्देश आहे. ४० वर्षांच्या कारकिर्दीत यशवंतरावांचे सर्वच क्षेत्रात अमूल्य योगदान महाराष्ट्राच्या राजकारणाला संतुलित आणि भेदभावरहित मार्गाने योग्य दिशेने नेणारे होते. त्यांचे वर्णन नेहमीच ज्ञानाचे प्रणेते, अत्यंत सर्जनशील, सुसंस्कृत आणि बौद्धिक नेते आणि विरोधी पक्षांसह सर्वांशी आदराने वागणारे शिस्तप्रिय राजकारणी असे केले जाते.

परिचय

मा. यशवंतरावचव्हाण यांचा जन्म १२ मार्च २०१३ रोजी झाला आणि त्यांचे बालपण सातान्याजवळील एका गावात गेले, जे तत्कालीन बॉम्बे प्रेसिडेन्सी शेतकऱ्यांचे पुत्र होते. त्यांची आर्थिकपरिस्थिती नाजूक असूनही, त्यांनी शिक्षण घेण्याचा प्रयत्न केला आणि १९३४मध्ये कोल्हापुरातील राजाराम महाविद्यालयात प्रवेश केला. त्यांनी १९३८ मध्ये बॉम्बे विद्यापीठातून (आताचे मुंबई विद्यापीठ, मुंबई) इतिहास आणि राज्यशास्त्र विषयात पदवी पूर्ण केली आणि कायद्याची पदवी मिळवली. १९४१ मध्ये पुणे येथील लॉ कॉलेजमधून (आताचे आयएलएस लॉ कॉलेज) पदवी प्राप्त केली.

यशवंतराव बळवंतराव चव्हाण हे भारतीय राजकारणी होते. ते एक मजबूत काँग्रेस नेते, सहकारी नेते, सामाजिक कार्यकर्ते आणि लेखक होते. ते सामान्य लोकांचे नेते म्हणून प्रसिद्ध होते. त्यांनी आपल्या भाषणांतून व लेखांतून सामाजिक लोकशाहीचा पुरस्कार केला आणि शेतकऱ्यांकच्या भल्यासाठी महाराष्ट्रात सहकारी संस्था स्थापन करण्यात त्यांचा मोलाचा वाटा होता. त्यांचे पंचायतराजचे योगदान बहुमुल्य आहे. त्यांना सामान्यतः आधुनिक महाराष्ट्रसेवेचे शिल्पकार मानले जाते.

यशवंतराव चव्हाण यांची राजकीय कारकीर्द:

- १९४६ मध्ये ते दक्षिण सातारा मतदारसंघातून पहिल्यांदा मुंबई राज्याच्या विधानसभेचे सदस्य म्हणून निवडून आले.
- त्याच वर्षी त्यांची मुंबई राज्याच्या गृहमंत्र्यांचे संसदीय सचिव म्हणून नियुक्ती झाली. मोरारजी देसाई यांच्या पुढच्या सरकारमध्ये त्यांची नागरी पुरवठा, समाजकल्याण आणि वन मंत्री म्हणून नियुक्ती करण्यात आली.
- १९५३मध्ये ते नागपूर करारावर स्वाक्षरी करणारे होते ज्यात आता महाराष्ट्र राज्य असलेल्या सर्व प्रदेशांच्या समान विकासाची हमी दिली होती. १९५७मध्ये यशवंतराव चव्हाण कराड मतदारसंघातून निवडून आले. यावेळी त्यांची काँग्रेस विधिमंडळ पक्षाचे नेते म्हणून निवड झाली आणि ते द्विभाषिक मुंबई राज्याचे मुख्यमंत्री झाले.
- 1957 ते 1960 पर्यंत त्यांनी अखिल भारतीय काँग्रेस कार्यकारिणीवरही काम केले.
- संयुक्त महाराष्ट्र समिती (संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ) मध्ये ते कधीही सामील झाले नसले तरी ते महाराष्ट्राच्या मराठी भाषिक राज्याच्या निर्मितीतील शिल्पकारांपैकी एक होते. 1 मे 1960 रोजी यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री झाले.



- चव्हाण यांच्या महाराष्ट्राच्या विकासाच्या दृष्टीकोनातून राज्यातील सर्व क्षेत्रांमध्ये औद्योगिक आणि कृषी या दोन्ही क्षेत्रांचा समान विकास व्हावा अशी संकल्पना होती. ही दृष्टी त्यांनी सहकार चळवळीच्या माध्यमातून साकारण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्या मुख्यमंत्री असताना लोकशाही विकेंद्रित संस्था आणि शेतजमीन कमाल मर्यादा कायदा संमत करण्यात आला.

भारत चीन युद्ध:

- 1962 मध्ये, भारत-चीन सीमा संघर्षाच्या पार्श्वभूमीवर कृष्ण मेनन यांनी 1962 मध्ये संरक्षण मंत्रीपदाचा राजीनामा दिल्यानंतर, त्यांना पंतप्रधान जवाहरलाल नेहरू यांनी ते खाते दिले.
- त्यांनी युद्धानंतरची नाजूक परिस्थिती खंबीरपणे हाताळली आणि सशस्त्र दलांना सशक्त करण्यासाठी अनेक निर्णय घेतले आणि पंडित नेहरूंसोबत, शत्रुत्व संपवण्यासाठी चीनशी वाटाघाटी केल्या.

संरक्षण खाते आणि यशवंतराव चव्हाण:

1965 मध्ये, सप्टेंबर 1965 च्या भारत-पाकिस्तान युद्धादरम्यान त्यांनी लाल बहादूर शास्त्री सरकारमध्ये संरक्षण खात्याची जबाबदारीही सांभाळली. पुढील सार्वत्रिक निवडणुकीत 1967 मध्ये, चव्हाण नाशिक लोकसभा मतदारसंघातून खासदार म्हणून बिनविरोध निवडून आले. 14 नोव्हेंबर 1966 रोजी त्यांची पंतप्रधान इंदिरा गांधी यांनी भारताचे गृहमंत्री म्हणून नियुक्ती केली. 26 जून 1970 रोजी, तिने त्यांना भारताचे अर्थमंत्री आणि 11 ऑक्टोबर 1974 रोजी परराष्ट्र मंत्री म्हणून नियुक्त केले. जून 1975 मध्ये, इंदिरा गांधी सरकारने भारतात अंतर्गत आणीबाणी घोषित केली. या काळात श्रीमती गांधींच्या राजवटीला विरोध करणारे नेते आणि पक्ष यांच्यावर कठोर कारवाई झाली. या काळात यशवंतराव त्यांच्या सरकारमध्ये राहिले.

खासदार म्हणून निवडून आले:

त्यानंतरच्या 1977 च्या सार्वत्रिक निवडणुकांमध्ये, पक्षाच्या नेत्या आणि पंतप्रधान इंदिरा गांधींनी स्वतःची संसदीय जागा गमावल्यामुळे काँग्रेसचा पराभव झाला. त्यामुळे नवीन संसदेत चव्हाण यांची काँग्रेस पक्षाच्या संसदीय नेतेपदी निवड झाली. काँग्रेस आता सर्वात मोठा विरोधी पक्ष असल्याने ते विरोधी पक्षनेते झाले.

1980 च्या सार्वत्रिक निवडणुकीत काँग्रेस (आय) ने संसदेत बहुमत मिळवले आणि इंदिरा गांधींच्या नेतृत्वाखाली सत्तेवर आले. या निवडणुकीत यशवंतराव चव्हाण हे महाराष्ट्रातून काँग्रेस (एस) च्या तिकिटावर खासदार म्हणून निवडून आलेले एकमेव उमेदवार होते. 1981 मध्ये, यशवंतराव काँग्रेस (I) मध्ये परतले आणि 1982 मध्ये त्यांना भारताच्या आठ वित्त आयोगाचे अध्यक्ष म्हणून नियुक्त करण्यात आले. 25 नोव्हेंबर 1984 रोजी दिल्लीत हृदयविकाराच्या झटक्याने त्यांचे निधन झाले.

यशवंतराव चव्हाण यांच्या विचारांचा वारसा:

यावरून यशवंतराव चव्हाण यांचे योगदान राष्ट्रीय महत्त्वाच्या विविध क्षेत्रात महाराष्ट्र राज्य अतुलनीय असल्याचे दिसून येते. चव्हाण यांच्या महाराष्ट्राच्या विकासाच्या दृष्टीकोनातून राज्यातील सर्व क्षेत्रांमध्ये औद्योगिक आणि कृषी या दोन्ही क्षेत्रांचा समान विकास होईल. ही दृष्टी त्यांनी सहकार चळवळीच्या माध्यमातून साकारण्याचा प्रयत्न केला. त्यांच्या मुख्यमंत्री असताना लोकशाही विकेंद्रित संस्था आणि शेतजमीन कमाल मर्यादा कायदा संमत करण्यात आला.



1985 मध्ये मुंबईत यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान (स्मारक) स्थापन करण्यात आले. "भारताच्या सामाजिक-राजकीय जीवनात समाज आणि लोकशाही संस्था आणि विकास प्रक्रियेसाठी त्यांच्या समृद्ध , उत्कृष्ट आणि मौल्यवान योगदानाची कबुली देऊन त्यांच्या स्मृतींना चिरंतन करणे आणि विशेषतः सामान्य माणसाच्या उन्नतीसाठी उपक्रम आणि कार्यक्रम हाती घेणे हा स्मारकाच्या स्थापनेचा उद्देश होता. स्वातंत्र्यलढ्यात परिपक्व त्यांच्या कल्पक विचारांना चालना दिली पाहिजे आणि त्याद्वारे भारताच्या सामाजिक-आर्थिक तंतूला बळकटी दिली पाहिजे."

1984 मध्ये नागपूर येथे यशवंतराव चव्हाण अभियांत्रिकी महाविद्यालय नावाने अभियांत्रिकी महाविद्यालयाची स्थापना करण्यात आली. १९८९ मध्ये महाराष्ट्रातील नाशिक येथे 'यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ' या मुक्त विद्यापीठाची स्थापना झाली, यशवंतराव चव्हाण केंद्र सरकारच्या राजकारणातही चमकले.

सारांश

संरक्षण, गृह, अर्थ आणि केंद्र सरकारमधील परराष्ट्र मंत्री अशा विविध विषयांवर निर्णय घेण्यासाठी त्यांचे विचार अत्यंत फलदायी आहेत. त्यांनी मुत्सद्दीपणा, व्यावहारिक कौशल्य आणि राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय स्तरावर आंतरराष्ट्रीय ज्ञानाची छाप दाखवली होती. 1974 मध्ये जेव्हा त्यांची परराष्ट्र मंत्री म्हणून नियुक्ती करण्यात आली तेव्हा त्यांनी "भारताचे परराष्ट्र धोरण" आणि "परदेशी भेटी" ही दोन पुस्तके लिहिली. त्यांनी युनोमध्ये जागतिक दृष्टी आणि भारताच्या भूमिकेबद्दल भाषणे दिली. त्यावर त्यांनी आपल्या पत्नीला पत्र लिहिले जे पुढील पिढ्यांसाठी मार्गदर्शक तत्त्वे आहेत. लोकांसाठी समाजासाठी, राज्यासाठी, राष्ट्रासाठी विचार, नैतिकता, श्रद्धा, निष्ठा आणि विश्वास आणि त्याग यांच्या मुळावर त्यांनी राजकारण केले. 25 नोव्हेंबर 1984 रोजी त्यांच्या निधनाने समकालीन महाराष्ट्राच्या आधुनिक इतिहासाची हानी झाली असे का म्हणतात. यशवंतराव बळवंतराव चव्हाण यांचे भारताच्या सामाजिक-राजकीय जीवनातील लोकशाही संस्था उभारणी आणि विकास प्रक्रियेसाठी योगदान आणि विशेषतः सामान्य माणसाच्या उन्नतीसाठी उपक्रम आणि कार्यक्रम हाती घेणे आणि स्वातंत्र्यलढ्यातील त्यांच्या जपलेल्या आदर्शांना चालना देणे आणि त्याद्वारे सामाजिक आर्थिक आणि राजकीय बळकटीकरण करणे यांचा अंमलबजावणी करणे आपले कर्तव्य राहिले.

संदर्भ सूची

- 1) Maharashtra Shilpakar Yashwantrao Chavan - Patil, Viththalrao Maharashtra Rajya Sahitya Ani Sanskriti Mandal, Mumbai, 2002.
- 2) कृष्णाकांठ लेखक : यशवंतराव चव्हाण - यशवंतराव चव्हाण आत्मचरित्र (खंड पहिला).
- 3) Khobrekar, V. G. (ed.): Yeshwantrao Chavan, Selected Speeches (Marathi) in State Legislature(1946-62) Vol I, Yashwantrao Chavan Pratishthan Mumbai, 1989.
- 4) सहयाद्रीचे वारे - यशवंतराव चव्हाण.
- 5) साहेबयशवंतरावजी चव्हाण - लेखक : रंगनाथ कुलकर्णी.


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519

**Worldwide International
Inter Disciplinary Research Journal**
(A Peer Reviewed)

Year - 7, Vol.I, Issue-XL, 15 December 2021

Swami Ramanand Teerth Marathwada University Nanded

and

Kisan Shikshan Prasarak Mandal, Udgir

Mahatma Phule Mahavidyalaya, Ahmedpur

Dist. Latur - 431515

(NAAC Accredited 'B' Grade)

One Day National Seminar (Online) on

**“Role of Physical Education &
Yoga For Maintainance of Health and Fitness
Under Covid-19 Situation”**

Edited by

Prof.Dr. Abhijeet S. More

Address for Correspondence

Mrs. Pallavi Laxman Shete

Editor in Chief : Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal (A Peer Reviewed Referred)
Principal, Sanskriti Public School, Nanded (MH, India) Email : shrishprakashan2009@gmail.com

Dr. Rajesh G. Umbarkar

House No. 624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (Kh.) Nanded - 431605 (India - Maharashtra)

Email - umbarkar.rajesh@yahoo.com, shrishprakashan2009@gmail.com Mob. No. 9623979067

Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International Contacts only + 91-8857894082)

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management,
Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)

INDEX

Sr. No.	Title of the Paper	Name of Author	Page No.
01.	संपादकीय	डॉ. अभिजीत शामराव मोरे	IX
01.	प्रस्तावना	प्राचार्य डॉ. वसंत बिरादार	XI
02.	ATTITUDE OF STUDENTS TOWARDS PHYSICAL EDUCATION	Dr. Vinod Ganacharya	01
03.	STRESS MANAGEMENT THROUGH YOGA	Prof. Chatse Ashok Jayaji	03
04.	CHALLENGES OF ONLINE PHYSICAL EDUCATION CLASSES IN MIDDLE AND HIGH SCHOOL AND AN EFFECTIVE PLAN TO DEAL WITH THEM	Dr. Nilesh Rajendra Gadekar	06
05.	COVID-19 PANDEMIC AND ILL HEALTH IN SPORTS: CRITICAL STUDY	Dr. SACHIN DAULAT YELBHAR	10
06.	A BRIEF STUDY ON THE ROLE OF EXPERT YOGA TRAINER GUIDANCE ON CONTROLLING LOWER BACK PAIN THROUGH INTEGRATED YOGA THERAPIES	Ms. Archana B. Uikey	14
07.	NUTRITION AND PHYSICAL PERFORMANCE	Dr. Umesh R. Sadegaonkar	20
08.	“IMPORTANCE OF YOGA IN PHYSICAL EDUCATION AND SPORTS”	Dr. Amey Vinayak Kale	24
09.	THE IMPACT OF COVID-19 ON SPORTS, PHYSICAL ACTIVITY AND WELL-BEING AND ITS EFFECTS ON SOCIAL DEVELOPMENT	Dr. Gopal Laxmikant Moghe	27
10.	IMPORTANCE OF DIET DURING COVID-19 SITUATION	Dr. P. S. Ranmal	31
11.	A COMPARATIVE STUDY OF SELECTED HEALTH RELATED PHYSICAL FITNESS COMPONENTS OF DIFFERENT FACULTY GIRL STUDENTS	Dr. Kothe C.K. Miss. Shivani	35
12.	ROLE OF YOGA IN MAINTAIN HEALTH & FITNESS	Dr. Jyotiram D. Chavan	39
13.	SURVEY ON PHYSICAL FITNESS OF TRIBAL AND NON-TRIBAL WOMEN IN TRIPURA	Sajna Begam Dr. A. S. More	43
14.	EFFECT OF YOGA TRAINING PROGRAMME ON BMI & SIT -UPS OF SCHOOL STUDENTS OF NANDED DISTRICT	Dr. Kengale B. D.	46
15.	A COMPREHENSIVE STUDY OF POWERLIFTING AND WEIGHTLIFTING TECHNIQUES AND INJURIES TO ATHLETES	Dr. Kothe Chaya Kishanrao Mr. Hemant Kapile	49

IMPORTANCE OF DIET DURING COVID-19 SITUATION

Dr. P. S. Ranmal

HOD Sports & Physical Education, Vasundhara College, Ghatnandur, Block Ambajogai, Dist. Beed.

ABSTRACT:

This research is focusing on diet which is very helpful in the pandemic situation of Covid-19. With the medicine the diet is playing vital role in the affection of Covid-19, and also meditation and Yoga, exercise also helpful with diet. Here some diet and foods are suggested for improve immunity rapidly and also suggested some important diet plans for different personalities. The wave of coronavirus in the country is becoming dangerous every day. In this, the symptoms of infection are different than before and it is spreading more rapidly than before. The government and doctors are repeatedly asking people to take precautions. But in view of the ever-increasing cases, recently the World Health Organization has advised that proper nutrition and hydration is very important to fight wave of Covid-19. According to the WHO, people who eat a balanced diet have a stronger immune system and are less prone to infectious diseases. If Covid-19 is to be defeated, then every person has to eat foods rich in vitamins, minerals, fiber, protein and antioxidants. Doctors and health counselor says that, proper diet can help to individual for protect from disease and also recover earlier if affected. If we implement the suggested diet there will be definitely help for anyone rather than loss.

KEYWORDS:

Importance of Diet, Pandemic, Immunity, Covid-19, Balanced diet, Nutrition.

INTRODUCTION:

The issue of health and especially food, diet and hygiene has suddenly come up very high in the priority of the people. It is not that these things did not happen in the priority of the people earlier. Yes, it was definitely that food and cleanliness were the things of our lifestyle, in which likes and dislikes were given more priority. These days some people are worried about whether the disease of Covid-19 spreads through food and drink. The organization has said that given the current situation, people must be aware of the specific types of food that can strengthen our immune system to combat Covid-19. So let us tell you in this research paper, what are the guidelines related to diet and lifestyle given by the organization to face Covid-19. Staying indoors, social distance only keeps the virus away from the infected person but does not increase the immunity of the body. To increase immunity in the body, the amount of fruits and vegetables should be increased in the regular diet. For this, adopt the 2 percent rule of food. To increase the immunity of the body, one should definitely take fresh fruits and green vegetables in the morning on an empty stomach as well as a balanced diet is a diet consisting of a variety of foods in certain quantities and proportions so that calories, proteins, minerals, vitamins and alternative nutrients are adequate and a small portion is reserved for nutrients. In addition, a balanced diet should contain bioactive phytochemicals such as dietary fiber, antioxidants that have positive health benefits. A balanced diet should contain 60-70% of total calories from carbohydrates, 10-12% from protein and 20-25% of total calories from fat.

Right diet is the Right *mantra*:

Staying home full time in lockdown is raising serious health concerns in which diet plays an important role. In the present scenario, our physical activities have decreased relatively while food

intake has increased, due to which the driving force of our diet has become unbalanced, which can lead to many health disorders. Follow a healthy diet regimen, which consists of right food choices and more importantly what, how, when and where we eat, will improve our immunity. Conversely, bad habits and food choices weaken our immunity, making us easy prey for virus infections and diseases. To stay healthy in every circumstance, the 'right diet' is the 'right mantra'.

Covid-19 and Indian Diet:

A lot of energy is spent in fighting the virus present inside the body, due to which we feel tired. It is necessary to include calorie rich foods in your diet at this time to get back in form. Including whole grains like millets, oats, rice and starchy vegetables like potatoes, sweet potatoes can help increase calorie intake and make you energized.

To fight Corona, good food and immunity are needed. Make a habit of taking a balanced diet to protect yourself from viruses and diseases. There are three pillars of diet in COVID. Vitamin C, Vitamin D and Zinc. Have juicy fruits for vitamin C. Vitamins and minerals are available from green vegetables. Zinc will be obtained from garlic buds. Ginger will help fight the infection. Vitamin D comes from curd and minerals from spinach. Almonds provide essential vitamins. Sunflower seeds also provide vitamins and minerals. Turmeric, green tea, papaya are beneficial. Kiwi fruit is also a treasure trove of nutrients.

Covid-19 Affected Patient's Plate:

Simple home cooked food is best. Vegetable, dal, rice plate is best. Multi grain roti is best in recovery. Fat, fiber-rich foods, protein, vitamin-rich foods, minerals, anti-oxidants, folate are all essential. The food of the patient should be clean and hot. Portions should be small but protein-rich. Plenty of beverages throughout the day is essential. Junk food, fried things should not be eaten. Avoid high sugar drinks as well.

Immunity increases by eating food at short intervals:

In general, the patient of corona often loses his ability to taste and smell. In such a situation, he does not get the taste of any kind of food. During treatment, due to medicines and fever, they do not have the desire to eat food, but by eating something for a short time, the body's immunity to fight the disease remains.

Eat fruits and vegetables:

This maintains the energy level in the body. If corona is positive, if you eat fruits and vegetables rich in vitamins and minerals in good quantity, then it will be beneficial. If you want, you can take dark chocolate with 70 percent cocoa. Covid patients have a bad taste in the mouth or have difficulty in swallowing food, such people are suggested to have soft food once in a while.

Drinking water and juices for improving immunity:

You must have often heard that everyone should drink 2 to 3 liters of water daily, especially as a protection against the corona virus epidemic, people are keeping themselves hydrated by drinking more water than before, but drinking too much water can be harmful for you. Drink water according to thirst. According to health experts, a person should drink water according to his thirst, drinking water without feeling thirsty can cause you many problems.

You can also consume herbal mixtures, coconut water, milk and fresh juices. Avoid packed juices, caffeine and fizzy drinks.

Patient should consume those foods:

Due to corona, the body feels very weak and tired, in such a situation, the patient should consume those foods, which will increase the strength in the muscles and increase the level of

energy. Experts say that whole grains like *ragi* oats contain a good amount of carbohydrates. It is essential for long term health. Eating cheese, soy, nuts and seeds gives strength to the body. These days, cooking only in walnuts, almonds, olive oil and mustard oil will improve immunity. Covid affected patient should drink turmeric milk once a day.

After Recovery What Should be Eat:

The patient will feel tired for several days even after the Covid cured. To overcome this, it is good to consume energy boosting foods like banana, apple, and orange. Do not forget to include sweet potatoes in salads or meals. Drinking warm water with organic honey and lime will go a long way in relieving fatigue. Despite the corona patient becoming completely healthy, there is weakness in his body. In such a situation, it is very important that not only during the treatment of the disease, but even after that, for a few weeks, keep taking nutritious food and fluids to beat the corona as before. By doing this, the weakness of their body is removed. Along with this, the immunity of their body also develops.

Avoid fried food

Fried foods are high in fat. It is true that often covid positive patients express their desire for fried foods with the intention of improving the deteriorating taste of the mouth. According to a report in 'Curletales', experts suggest that patients should avoid the craving to eat these fried foods during the period of treatment. Such foods can be harmful to the body and can weaken its ability to fight diseases, as such a diet negatively affects the gut microbes and increases the risk of heart diseases by increasing bad cholesterol.

SCHEDULE OF DIET DURING COVID-19 PANDEMIC SITUATION:

Morning: 6-7 soaked almonds, 2-3 whole walnuts and 5-6 raisins with herbal decoction made from ginger, basil leaves and coriander seeds. Also, take one bud of raw garlic with water.

Breakfast: For breakfast have a tall glass of buttermilk with gram flour/*dal/ragi*/spinach cheela with mint chutney or *sabzipoha* or *idlisambar* or *uttapam* with coconut chutney or omelet stuffed with corn and spinach.

Mid-Morning: Coconut water with fruit of your choice (kiwi, orange, apple, papaya, pineapple) or juice of beetroot, spinach and amla.

Lunch: Cumin rice, *Ajwain* roti, *Rajma*, Carrot *matar* vegetable with a bowl of fresh curd. Or a bowl of curd with egg rice, carom bread, fenugreek potato, lentils (of your choice). Vegetable porridge, with a bowl of chickpea curd.

After lunch: 2 pieces of dates (*khajur*).

Evening: Herbal tea with sweet potato/chickpeas/*rajma*/corn/sprout *chaat* and any fruit of your choice.

Dinner: *Moong dal khichdi* with vegetables.- Rice or vegetable bowl, garlic roti with paneer *bhurji* and mixed vegetables.

After dinner: Turmeric milk or turmeric and black pepper water. Increase calorie intake.

CONCLUSION:

After all we can say with proper medicine we need to consume proper and immunity booster food for recover from this fatal disease. Need to avoid spicy foods in your diet. This is because spices can cause acidity. And it can also cause stomach cramps and inflammation. Include fruits in your daily diet. We all know that fruits provide many vitamins. So drink fruit juice or eat fruits regularly. With proper diet plan need to be implemented regularly not for the situation but also for live long and healthy. We should aware about diet and nutrition for our generation to be save.

Therefore, these things with perfect nutrition should be included in the diet to stay physically fit even after recovery from corona disease. It helps in getting healthy and good health forever.

REFERENCE:

- 1) Nutrition During the Covid-19 Pandemic: Healthy Recipes to Support the Immune System – by Farah Hashem – (51-53)
- 2) <https://hindi.moneycontrol.com/news/markets/diet-is-your-shield-in-corona-know-how-to-avoid-infection-immunity-virus-disease--balanced-diet-covid-19-257981.html>
- 3) EAT RIGHT DURING COVID-19 GUIDELINES (EAT RIGHT INDIA) by FSSAI department –(06-14-15-16)
- 4) <https://www.loksatta.com/lifestyle/corona-diet-include-these-foods-daily-recover-early-covid-19-scsm-98-2511495/>
- 5) Zinc in human health: effect of zinc on immune cells. by Prasad A. S. Mol Med 2008; 14:353–7.
- 6) Diet, immunity and inflammation (EDS). Cambridge: Woodhead Publishing, - by Calder PC, Yaqoob P. 2013.
- 7) <https://www.amarujala.com/photo-gallery/lifestyle/fitness/coronavirus-update-include-these-things-in-the-diet-immunity-will-be-stronger?pagelid=2>
- 8) Association of obesity with more critical illness in COVID-19 by Sharma A, Garg A, Rout A, Lavie C



ISSN 2277 - 7539 (Print)
Impact Factor - 5.631 (SJIF)

Excel's International Journal of Social Science & Humanities

An International Peer Reviewed Journal

October - 2021
Special Issue on
PHYSICAL AND SOCIAL VITAL ISSUES

Issue Editor

Dr. Santosh A. Wangujare
Director of Physical Education
Adv. B.D. Hambarde Mahavidhyalaya, Ashti, Dist. Beed

Co-Editor

Dr. Nandkumar N. Kumbharikar
Dept. of Public Administration
SPP Mahavidhyalaya, Sirsala, Dist. Beed
Email - dr.kumbharikarnn@gmail.com



**EXCEL PUBLICATION HOUSE
AURANGABAD**



Sr. No.	Name	Title Name	Page No.
18	प्रा. धप्पाधुळे रामेश्वर शंकरराव	जिल्हापरिषद व पंचायत समिती स्तरावरील प्रमुख प्रशासकीय अधिकाऱ्यांच्या भूमिकेचा अभ्यास	61
19	प्रा. माधव गोरख घोडके	ग्रंथालय आणि माहिती विज्ञानातील अलीकडील घडामोडी	64
20	प्रा.डॉ.कदम एच.पी	डॉ.पंजाबराव देशमुख यांचे राजकीय कार्य व योगदान	69
21	प्रा.सोनवणे जी.एन.	सध्यस्थितीतील भारतातील अंतर्गत सुरक्षाविषयक आव्हाने	72
22	प्रा. परळकर एस.डी.	पंडिता रमाबाई यांचे सामाजिक योगदान व कार्य	75
23	प्रा.डॉ.चव्हाण पी.एल	पंचायत समिती : आर्थिक पैलूंचे अध्ययन	78
24	प्रा.डॉ.अविनाश व. कासांडे प्रा.सुजाता सुर्यकांत हजारे	दलित आत्मकथाकार दया पवार पर आंबेडकर विचारधारा का प्रभाव (अछूत आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)	80
25	डॉ.ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	राष्ट्रभाषा/राजभाषा	83
✓26	प्रा.डॉ.रणमाळ पांडुरंग श्रीरंग	मराठवाड्यातील ग्रामीण खेळ	92



मराठवाडयातील ग्रामीण खेळ

प्रा.डॉ.रणमाळ पांडुरंग श्रीरंग
क्रीडा विभाग प्रमुख

वसुंधरा महाविद्यालय घाटनांदुर, जि.बीड

प्रस्तावणा :

मराठवाडा हा सांस्कृतिक वारसा जपणारा विभाग आहे. आजही मराठवाडयात पूर्वी प्रमाणेच सांस्कृतिक, शैक्षणिक व क्रीडाप्रकारांची परिस्थिती आहे. पूर्वी प्रमाणेच मराठवाडयातील लोक सर्व परंपरा व प्रथांचे तंतोतंत पालन करतात. या दृष्टिकोणातून मराठवाडयातील ग्रामीण क्रीडा प्रकारांना टिकवून ठेवणे त्यांना पुर्व वैभव प्राप्त करून देणे गरजेचे आहे. मराठवाडयातील ग्रामीण भागात खेळल्याजाणारा अनेक क्रीडाप्रकारांना आंतरराष्ट्रीय स्तरावर मान्यता मिळाली आहे. परंतु काही क्रीडाप्रकार असे आहेत की, ज्यांना मान्यता मिळणे दुरच परंतु ग्रामीण भागातून हे खेळ नाहीसे होवु पाहत आहेत. तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीमुळे आज ग्रामीण भागात अनेक क्रीडाप्रकारांच्या ऐवजी मुलांच्या खेळण्याचे साधन म्हणजेच मोबाईल सारख्या वस्तु ठरत आहेत. त्यामुळे अनेक मैदानी खेळ कसरती खेळ खेळले जात नाहीत त्याकारणास्तव या खेळांना भविष्यात ग्रामीण भागात ओळख टिकवणे देखील कठीन होवु पाहत आहे. या खेळांना ग्रामीण भागात टिकविण्यासाठी प्रात्साहन देणे गरजेचे आहे. या खेळांना ग्रामीण भागात प्रोत्साहन देण्यासाठी विशेष व्यवस्था करण्यात येवुन नवीन पिढीपर्यंत अशा महत्वपूर्ण खेळांना पोहचविणे गरजेचे आहे. ग्रामीण भागात हे क्रीडाप्रकार विशेषत्वाने खेळले जात असत. परंतु काळाच्या ओघात हे क्रीडाप्रकार नष्ट होत आहेत. त्यांना नव संजिवनी देणे गरजेचे आहे. यादृष्टीकोनातून प्रस्तुत शोधनिबंधाची दिशा ठरवण्यात आली आहे.

शोधनिबंधाचे उद्देश :

१. मराठवाडयातील ग्रामीण क्रीडाप्रकारांचा आढावा घेणे.
२. ग्रामीण क्रीडाप्रकारांची व्यक्तिमत्व विकासातील आवश्यकता स्पष्ट करणे.
३. मराठवाडयातील लुप्त होत असलेल्या ग्रामीण क्रीडाप्रकारांचा अध्ययन करणे.

संशोधन पध्दती :

मराठवाडयातील ग्रामीण क्रीडाप्रकारांच्या अध्यनासाठी निरीक्षणात्मक संशोधन पध्दतीचा वापर करण्यात आला आहे. यासंशोधन पध्दतीत प्राथमिक तसेच द्वितीयक स्त्रोताद्वारे तथ्यसंकलन करण्यात आले आहे. विशेषता: द्वितीयक स्त्रोतात संदर्भ ग्रंथ तसेच प्रकाशित साहित्याचा आधार घेण्यात आला आहे, तर प्राथमिक स्त्रोतात क्रीडाप्रकाराची जाण तसेच माहिती असणाऱ्या क्रीडा अभ्यासकांची मते घेण्यात आली आहे. मराठवाडयातील लुप्त होत चाललेल्या ग्रामीण क्रीडाप्रकारांचा आढावा पुढील प्रमाणे घेण्यात आलेला आहे.

आटयापाटयाचा खेळ :

मराठवाडयातील ग्रामीण भागात खेळला जाणारा एक मनोरंजनात्मक खेळ म्हणजे आटयापाटयाचा खेळ होय. ह्या खेळाद्वारे मनोरंजनासोबतच भरपूर व्यायाम होतो. हा खेळ विशेषता: फाल्गुण मासात शिमग्याच्या सनाच्या वेळी खेळला जात असे. याखेळाद्वारे अनेक खेळाडु एकाच वेळी प्रदर्शन दाखवु शकत असत. सर्व खेळाडुंना सहभाग नोंदविता येत असल्यामुळे हा खेळ ग्रामीण भागात विशेष लोकप्रियता प्राप्त करु शकला. या खेळात पाटी धरणे म्हणजे खेळणाऱ्यांच्या हुलकावणीस दाद न देता त्यास पाटी ओलांडुन जावु न देणे हे काम पाटी धरणाराचे असते. तर त्यास हुलकावणी देवुन त्याचा स्पर्श न होता पाटीवर जाणे म्हणजेच पाटी खेळणे हे होते. याबरोबरच याखेळात कोंडी, सुर, पालथी उडी या संज्ञा देखील वापरण्यात येत असत. याबरोबरच या खेळातील चांभारपाटी, लोनपाटी, सुरपाटी, सुरकांडे, लोण आणणे, गडी मारणे, कोंडी फोडणे इत्यादी संज्ञा देखील विशेषता: वापरल्या जातात. या खेळात प्रत्येक संघाने आळीपाळीने मिळुन डाव खेळण्यात येत असत. याखेळांना ग्रामीण भागात महत्वपूर्ण स्थान होते परंतु आज काळाच्या ओघात ग्रामीण भागातून हा खेळ लुप्त होत चाललेला आहे. याखेळाला नवसंजिवनी देवुन पुनःरच प्रस्थापित करणे गरजेचे आहे.



विटीदांडु :

विटीदांडु हा खेळ मराठवाडयाच्या ग्रामीण भागात विशेषत्वाने खेळला जातो. विटीदांडू या खेळास मराठवाडयात लोकप्रियता लाभली आहे. मराठवाडयात प्राचीन काळापासुन विटीदांडु हा खेळ खेळला जातो. महाराष्ट्राबाहेर देखील हा खेळ खेळला जातो. याखेळात दोन बाजु असतात. विटीला टोला मारणारे व विटीला झेलणारे असे. तर झेलणाऱ्या खेळाडुंना कर्तबगारी दाखवुन विटी क्रिडांगणाच्या मर्यादेच्या पार जावु न देणे अशा प्रकारची याखेळाची पध्दती आहेत. याक्रिडाप्रकारात गल, कच्चा, कोलने, मारणे, झेलणे इत्यादी महत्वपूर्ण संज्ञा वापरल्या जात असत. याखेळात देखील अनेक खेळाडुंना सहभाग नोंदविण्याची संधी प्राप्त होत असे. हा खेळ ग्रामीण भागातुन आज हद्दपार होवु पाहत आहे.

लगोरी :

मराठवाडयात लगोरी हा खेळ मुख्यत्वे ग्रामीण भागाचे आकर्षण होते. हा खेळ मुला सोबतच मुली देखील खेळत असत. मराठवाडयात प्राचीन काळापासुन लगोरी हयाखेळाचे अस्तित्व आढळुन येते. विशेषता: मुलींसाठी हा खेळ महत्वपूर्ण असा स्वरुपाचा मानला जात असे. विटा, फरशीचे, खारचे टुकडे यांच्या लगोऱ्या केल्या जात असे. लहान मुलां-मुलींना खेळण्यासाठी हा खेळ आकर्षक व मनोरंजनात्मक अशा स्वरुपाचा आहे. हा खेळ अचुकता व चेडुं झेलणे या कौशल्यावर आधारलेला आहे. हा खेळ कमी खर्चीक व कमी जागेवर खेळला जात असल्यामुळे या खेळाची लोकप्रियता मोठ्या प्रमाणात वाढली होती. या खेळासाठी चेडुं व लगोरी याच सांघनाची आवश्यकता लागत असे. या खेळात झेलणार, नेम मारणार, गोलंदाज, इत्यादी संज्ञा वापरल्या जात असत. हा खेळ मराठवाडयाच्या ग्रामीण भागातुन नष्ट होत चाललेला आहे.

जंबीया :

मराठवाडयात ग्रामीणभागात हा खेळ कमी प्रमाणात खेळला जात होता. परंतु, त्याचे अस्तित्व प्रामुख्याने होते. हा खेळ मराठवाडयात प्राचीन काळापासुन म्हणजेच बंदुकीच्या दारुचा शोध लागला नव्हता त्यावेळेपासुन खेळला जातो. त्याकाळात लढाईमध्ये जंबीयाचा वापर केला जात असे. त्याचेच पुढे खेळात रुपांतर झाले कुस्तीप्रमाणे हा जंबीयाचा खेळ आहे. त्यात वार करणार व त्याचा हात धरुन डाव हाणुन पाडणार अशा प्रकारची पध्दती या खेळाची असते. दोन व्यक्ती या खेळात सहभागी होवु शकतात. या खेळात सलामी, शिरवार, आक्रमण, पकड, तमाचा, हेमायलसिधा, पालट, इत्यादी संज्ञा वापरण्यात येतात. ग्रामीण भागात याखेळाचे अस्तित्व नामशुन्य झाले आहे.

समारोप :

मराठवाडा हा अधिकांश ग्रामीण भाग असणारा विभाग म्हणुन ओळखला जातो. मराठवाडयाची ग्रामीण संस्कृती तसेच ग्रामीण चालीरीती, क्रिडाप्रकार यांना प्राचीन वारसा लाभला आहे. मराठवाडयात शैक्षणिक, संस्कृतीक पार्श्वभुमी सोबतच क्रिडाप्रकारची ही पार्श्वभुमी लाभली आहे. मराठवाडयाचे क्रिडापटु विविध क्षेत्रात आपली कामगिरी उंचावुन चमकलेले दिसुन येतात. वास्तविक मराठवाडयात प्राचीन काळापासुन विविधप्रकारचे खेळ खेळले जातात. त्यात ग्रामीण खेळांना विशेष महत्व प्राप्त होते. मराठवाडयातील ग्रामीण खेळात महत्वपूर्ण मानल्या गेलेल्या कबड्डी, कुस्ती यासारख्या क्रिडाप्रकारांना जागतीक पातळीवर देखील विशेष स्थान प्राप्त झाले आहे. यासारखेच अनेक क्रिडा प्रकार मराठवाडयातील ग्रामीण भागातुन जन्माला आले. परंतु या क्रिडाप्रकारांना कालमानानुसार मान्यता मिळने तर दुरच परंतु आज याक्रिडाप्रकारांना घरघर लागलेली दिसुन येते. हे खेळ शारिरीक स्वास्थ्य लाभण्यासाठी अत्यंत आवश्यक असे खेळ आहे.याखेळामधुन व्यक्तीमत्व विकासासाठी उपयोग देखील होतो अशा क्रिडाप्रकारामध्ये प्रामुख्याने आटयापाटया, विटीदांडु, लगोरी, लाठीलढत, जंबीया याखेळांचा उल्लेख केला जावु शकतो. याक्रिडाप्रकारांना महाराष्ट्रात ग्रामीण भागात विशेष स्थान आहे.

संदर्भ ग्रंथसुची :

१. मुजुमदार आबासाहेब - व्यायाम ज्ञानकोश खंड दुसरा.
२. शरद आहेर, बालाजी पोटे - मराठवाडयातील खेळ.
३. मुजुमदार दत्तात्रय - व्यायाम ज्ञानकोश.
४. आरोग्य व शारिरीक शिक्षण - हस्तपुस्तिका.
५. दैनिक लोकसत्ता :-वर्तमानपत्र



PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519

ISSN 0976-0377

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
Ta. Ambajogai Dist. Beed 431519



INDEX

No.	Title for Research Paper	Page No
1	The Discourse Analysis of Mahesh Elkunchwar's Old Stone Mansion from the Perspective of Cooperative Principle R. D. Dhule	1
2	Integrating Factor - A Simple Method of Solving Differential Equations P. G. Sasane	8
3	The Challenges before National Integration Suresh R. Khiste	14
4	Studies on the Physico Chemical Params of Ule Tank Solapur (M.S.) India Dr. Snehalata Muley	24
5	महिला क्रीडा शिक्षण : महाराष्ट्राची परंपरा आणि वर्तमान प्रवाह डॉ. छत्रपती पांगरकर	27
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा लिंग असमानतेचा ऐतिहासिक दृष्टीकोण डॉ. धनंजय ना. मोगले	34
7	ग्रंथालय माहिती संकलनाचे तंत्र आणि साधन रिटा खोसे (कदम)	38
8	भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व भजन-कीर्तन परंपरा डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	45
9	आंतरमहाविद्यालयीन मुलींच्या क्रीडा स्पर्धा व क्रीडा शिक्षकांची अभिवृत्ती डॉ. पी. एस. रनमाळ	53
10	महाराष्ट्रातील सत्तांतर व आघाड्यांची सरकारे डॉ. एच. पी. कदम	58
11	लोकशाही शासन पद्धतीत मतदारांची भूमिका डॉ. पी. बी. ईरलापल्ले	62



आंतरमहाविद्यालयीन मुलींच्या क्रीडा स्पर्धा व क्रीडा शिक्षकांची अभिवृत्ती

डॉ. पी. एस. रनमाळ

संचालक, क्रीडा विभाग,
वसुंधरा महाविद्यालय,
घाटनांदूर, जि. बीड

9

Research Paper - Physical Education

खेळ हा मानवी जीवनातील एक अविभाज्य घटक आहे. खेळातील स्त्री-पुरुषांचा सहभाग हा राष्ट्राचा सन्मान वाढविणारा ठरतो. परंतु पुरुष ज्या पध्दतीने क्रीडास्पर्धेत सहभागी होतो. त्या प्रमाणात स्त्रियांचे प्रमाण अल्प असल्याचे जाणवते. या विषयी डॉ. सुधाताई काळदाते यांचे विधान तपासण्यायोग्य आहे. मराठवाडा विभागामध्ये महिलांचा क्रीडा सहभाग हा तेवढा सम-समान नाही. त्यामागे रुढीप्रियता व मागासलेपणाची कारणे आहेत. मराठवाडयाच्या मागासलेपणाचे विधान स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठातील आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धानाही लागू पडणारे आहे. पूर्वी मराठवाडा विद्यापीठामध्ये आठ जिल्हे होते. त्याची विभागणी करून १९९४ ला लातूर, हिंगोली, परभणी या जिल्हयाचा शैक्षणिक विकास उंचावण्यासाठी स्वतंत्र विद्यापीठाची स्थापना करण्यात आली. हे चारही जिल्हे मागास म्हणून ओळखले जातात. त्यांच्या सर्वांगीण दृष्टिने विकास होण्यासाठी या विद्यापीठाची निर्मिती झाली. त्यानुसार विद्यापीठामध्ये विविध विषयाचा अभ्यासक्रम ठरवून उपक्रम राबविण्यात आले. त्या पैकी क्रीडा क्षेत्रातील एक महत्वाचा उपक्रम म्हणजे विद्यापीठांतर्गत दरवर्षी घेतल्या जाणा-या आंतर महाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धा होत.

आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धेचे स्वरूप -

आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धा म्हणजे एकाच विद्यापीठाच्या कार्यक्षेत्रात घेण्यात आलेल्या विविध महाविद्यालयीन खेळाडू संघाच्या क्रीडा स्पर्धा घेण्यात आलेल्या स्पर्धा होत.

या स्पर्धेत विद्यापीठाच्या कार्यक्षेत्रातील महाविद्यालयाने ठरविलेल्या नियोजनानुसार ज्या ठिकाणी स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आलेले आहे. तेथे महाविद्यालयाच्या क्रीडा संघाने त्या स्पर्धेत सहभागी व्हावे लागते. एका महाविद्यालयाने एका स्पर्धेसाठी एकच संघ पाठविलेला असतो. त्यामुळे महाविद्यालयीन पातळीवर संघाची निवड करून महाविद्यालय महाविद्यालयामध्ये चुरसीच्या क्रीडा स्पर्धा होतात. त्यातून प्रथम व द्वितीय क्रमांक काढला जातो.या एकूणच क्रीडा स्पर्धेत खेळलेल्या गुणवत्त विद्यार्थ्यांची निवड करून आंतरविद्यापीठीय स्पर्धेसाठी निवड करण्यात येते.

**आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धेत मुलींचा सहभाग -**

काळाच्या ओघाप्रमाणे सुधारणा होउन मुलींच्या महाविद्यालयीन शिक्षणामध्ये संख्यात्मक व गुणात्मक लक्षणीय वाढ झालेली आहे. परंतु शारीरिक शिक्षणाच्या क्षेत्रात मात्र म्हणावी तेवढी प्रगती मुलींनी घेतलेली दिसून येत नाही. असेच म्हणावे लागते.

सर्वसाधारणतः मुलींच्या शिक्षणात वाढ झाली आहे. परंतु क्रीडा स्पर्धेत सहभागी होण्यात मात्र त्या उदासिन राहिलेल्या आहेत.

विद्यापीठ संकुल व महाविद्यालयामधील मुले व मुलींची संख्या दर्शविणारा तक्ता

अ.क्र.	इ.स.	एकूण महाविद्यालये	वि.संकुल	एकूण वि.संख्या	एकूण मुलींची संख्या	टक्केवारी
१	२००४-०५	१६७	०९	५२०३७	१८०६७	३४.७५
२	२००५-०६	२००	०९	६११३२	२०९२०	३४.४०
३	२००६-०७	२०३	०९	५९२१९	२१६८६	३६.००
४	२००७-०८	२८५	१०	६५८६०	२२२५	३३.७५
५	२००८-०९	२८६	०९	७९१९३	२६१९३	३३.७५
६	२००९-१०	३५९	०९	८९१९३	३६१९३	३५.५०

वरील तक्त्यावरून असे आढळून येते की मुलींच्या संख्येत वाढ झालेली दिसून येत असली तरी, एकूणच टक्केवारीत मात्र फारसा बदल झालेला नाही.

आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धेत सहभागी झालेले महिला संघ -

२००४-२००५	खेळ	संघ
	व्हालिबॉल	०७ संघ
	मलखांब	०३ संघ
	टेबल टेनिस	०७ संघ
	खो-खो	०७ संघ
	बॅडमिंटन	०४ संघ
	बास्केटबॉल	०३ संघ
	कबड्डी	०३ संघ
	क्रिकेट	०४ संघ
	मैदानी स्पर्धा	१० संघ
	योगा	०३ संघ
	पोहणे	०४ संघ



RNI. MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377

Issue : XXIV, Vol.VII, July 2021 To Dec. 2021

55



२००५-२००६	व्हालिबॉल मलखांब टेबल टेनिस खो-खो बॅडमिंटन बास्केटबॉल कबड्डी क्रिकेट मैदानी स्पर्धा योगा पोहणे	०६ संघ ०४ संघ ०५ संघ ०८ संघ ०५ संघ ०६ संघ १० संघ ०४ संघ ११ संघ ०४ संघ ०३ संघ
२००७-२००८	व्हालिबॉल मलखांब टेबल टेनिस खो-खो बॅडमिंटन बास्केटबॉल कबड्डी क्रिकेट मैदानी स्पर्धा योगा पोहणे	०५ संघ ०४ संघ ०७ संघ ०८ संघ ०५ संघ ०६ संघ १० संघ ०६ संघ १५ संघ ०४ संघ ०६ संघ
२००८-२००९	व्हालिबॉल मलखांब टेबल टेनिस खो-खो बॅडमिंटन बास्केटबॉल कबड्डी क्रिकेट मैदानी स्पर्धा योगा पोहणे	०७ संघ ०५ संघ ०६ संघ १० संघ ०६ संघ ०३ संघ १२ संघ ०५ संघ १५ संघ ०३ संघ ०६ संघ



२००९-१०	व्हालिबॉल	०९ संघ
	मलखांब	०४ संघ
	टेबल टेनिस	०६ संघ
	खो-खो	११ संघ
	बॅडमिंटन	०५ संघ
	बास्केटबॉल	०४ संघ
	कबड्डी	१५ संघ
	क्रिकेट	०४ संघ
	मैदानी स्पर्धा	१६ संघ
	योगा	०४ संघ
	पोहणे	०६ संघ

उपरोक्त दोन्ही तक्ते पाहता आंतरमहाविद्यालयीन मुलींच्या क्रीडा स्पर्धेत सहभागी होणारे संघ खुप अल्प आहेत. २००८-०९ ला १६७ महाविद्यालये कार्यरत आहेत. परंतु आंतरमहाविद्यालयीन एका क्रीडा स्पर्धेत ७ किंवा १० महाविद्यालयापेक्षा अधिक महाविद्यालयाने सहभाग नोंदवलेला नाही. तीच परिस्थिती थोड्याफार प्रमाणात बदल झालेली असला तरी २००९-१० मध्ये आहे. महाविद्यालयाच्या संख्येत लक्षणीय वाढ होवुन ३५९ संख्या झाली आहे. परंतु एकाही आंतरमहाविद्यालयीन क्रीडा स्पर्धेत ३५९ महाविद्यालयाने सहभाग नोंदवलेला नाही. याचाच अर्थ काही ठरावीक स्पर्धेत ठरावीक महाविद्यालयाचेच कमी-अधिक प्रमाणात खेळाडूंचा संघ सहभाग नोंदवतात त्याचेही प्रमाण महाविद्यालयाच्या संख्येच्या प्रमाणात खुप अत्यल्प असल्याचे दिसून येते. यामध्ये बदल होवून स्पर्धेची एकुणच संख्या वाढणे महत्वाचे आहे.

क्रीडाशिक्षकांची अभिवृत्ती -

आंतरमहाविद्यालयीन मुलींच्या क्रीडास्पर्धेचा अभ्यास करत असताना क्रीडास्पर्धेची माहिती व क्रीडास्पर्धेत सहभागी होण्यासाठी क्रीडाशिक्षकाची महत्त्वाची भूमिका असते. क्रीडाशिक्षक जर क्रीडास्पर्धेविषयी उदासिन राहिला. तर, मुलींना क्रीडास्पर्धेत सहभागी होण्यापासून वंचित रहावे लागते. म्हणून क्रीडाशिक्षकांचीही आंतरमहाविद्यालयीन व एकूणच क्रीडाविषयक अभिवृत्तीची प्रश्नावली तयार करुन १०० क्रीडाशिक्षकाची चाचणी घेण्यात आली त्यात स्वच्छेने क्रीडाशिक्षक झालो. या विधानाला १०० पैकी ६७ क्रीडाशिक्षक पूर्ण सहमत तर आहे. यचाच अर्थ २२ क्रीडा शिक्षक हे स्वच्छेने क्रीडाशिक्षक बनले आहेत. जेव्हा माणूस स्वच्छेने एखादे काम करतो त्यावर कसलेही दडपण नसते. तेव्हा ते काम निश्चितच चांगले होते.



RNL MAHMUL02805/2010/33461

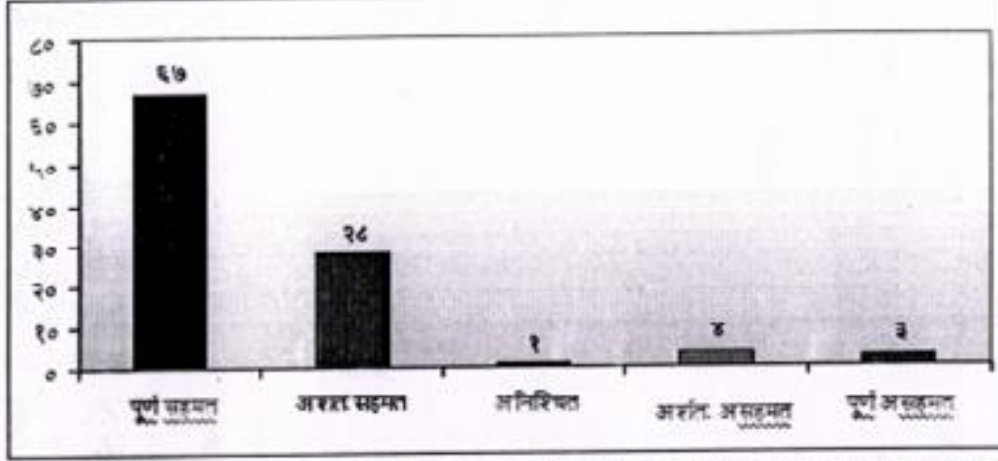
Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377

Issue : XXIV, Vol.VII, July 2021 To Dec. 2021

57



क्रीडाशिक्षकांच्या म्हणण्यानुसार लाजाळू वृत्ती, समाजाचा रोष, लग्न, समज, अपसमज, इ. अनेक गोष्टी महिलांच्या क्रीडासहभागाविषयी कारणीभूत आहेत. तसेच पालकांची मनस्थिती बाहेरगावी क्रीडा स्पर्धेला पाठविण्याची तयारी नसते. त्यामुळे जास्तीत जास्त महाविद्यालये क्रीडा स्पर्धेत सहभागी होऊ शकत नाहीत.

बोडक्यात मुलींना खेळण्याविषयी आवड आहे परंतु सांगाजिक, कौटुंबिक दडपणामुळे त्या क्रीडाक्षेत्राकडे वळत नाहीत. मुलींनी खेळात सहभागी होण्यासाठी पालकांचे सहकार्य लागते. पालक या विषयी उदासिन असल्यामुळे क्रीडा शिक्षकांना मुलींचा क्रीडासंग तयार करण्यासाठी कमालीची कसरत करावी लागते असा निष्कर्ष निघतो.

संदर्भ सूची :-

- 1) क्रीडाशिक्षकांची क्रीडाअभिवृत्ती मापिका
- 2) स्वा.रा.ती.म. विद्यापीठ विशेषांक २००४ ते २०१०
- 3) विद्यापीठ क्रीडाविभागाचे माहितीपत्रक
- 4) वाखारकर दि.गो. शारीरिक शिक्षणाचे नेते ऐतिहासिक स्वरूप
- 5) वाखारकर दि.गो. महाराष्ट्रातील शारीरिक शिक्षणाची वाटचाल, मराठवाडा सांस्कृतिक मंडळ, औरंगाबाद, १९७३
- 6) गोगटे भा.रा. - शारीरिक शिक्षण विकास व नियोजन, महाराष्ट्र शिक्षण मंडळ प्रकाशन, पुणे, १९५५


PRINCIPAL
Vasundhara College, Ghatnandur
To. Ambajogai Dist. Beed 431519

ISSN 2278-9820

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education

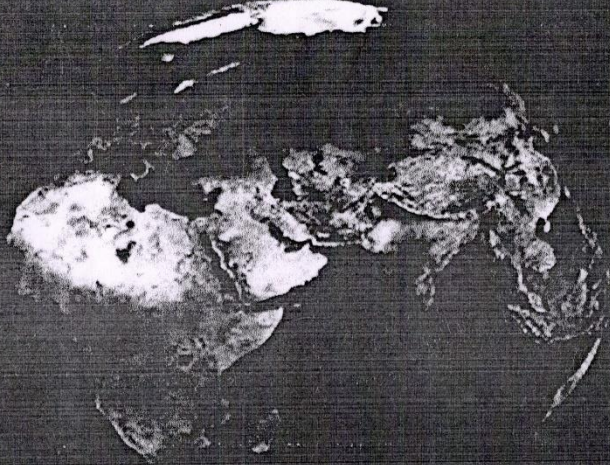
VISION RESEARCH JOURNAL FOR GEOGRAPHY & GEOLOGY

(UGC Approved & Peer Reviewed Research Journal)

Year - XI, Issue - XXI, Vol.III

Impact Factor 6.50
(GRIF)

Dec. 2021 To May 2022



EDITOR IN CHIEF

DR. JAIDEEP R. SOLUNKE


PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogal Dist. Beed 431519





अंबाजोगाई आणि केज तहसिल अंतर्गत पीक विविधतेचा तुलनात्मक अभ्यास

जी. आर. झाडके

भूगोल विभाग,
वसुंधरा महाविद्यालय,
घाटनांदुर, जि. बीड

Research Paper - Geography

प्रस्तावना —

बीड जिल्ह्यातील अंबाजोगाई आणि केज तालुक्यातील मंडळ निहाय पीक विविधतेचा अभ्यास केला जाणार आहे.

पीक विविधता म्हणजे एखाद्या प्रदेशात पीकांची संख्या भरपूर असते. म्हणजेच जेवढी पीकांची संख्या जास्त तेवढी पीक विविधता जास्त असते. या उलट, जेवढी पीकांची संख्या कमी तेवढी पीक विविधता कमी असते. पीक विविधता ठरविताना विशिष्ट प्रदेशातील वेगवेगळ्या पीकांखालील क्षेत्र व एकूण पीकांची संख्या यांच्या गुणोत्तरावरून ठरविली जाते. कृषी क्षेत्रातील पीक विविधता ही पीक पध्दती कृषी व्यवसाय, पशुधन पध्दती यावर अवलंबून असते. पीक विविधता पीक विविधतेवर परिणाम करणा—या अनेक घटकांपैकी भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक आणि तांत्रिक घटकांचा परिणाम पीक विविधतेवर होत असतो. अभ्यास क्षेत्रातील दोन्ही तालुक्यातील पीक विविधतेच्या अभ्यासासाठी भाटिया यांच्या पध्दतीचा उपयोग केला आहे.

व्याख्या—

१. “पीक विविधता म्हणजे एखाद्या शेतजमिनीतील वेगवेगळ्या पीक घनतेतील स्पर्धा होय.”
२. “पीक विविधता म्हणजे विशिष्ट क्षेत्रात विशिष्ट वेळेला विविध पीकांचे उत्पादन घेणे होय.”
३. “पीक प्रारूपाची विविधता म्हणजे लागवडी योग्य जमिनीसाठी पीकांच्या विविध



जातीची वाढ करणे.”

४. “Diversification of cropping pattern means raising variety of crop for a areable land-“

कृषी भूगोलाच्या अभ्यासाचे महत्त्व—

१. कृषी भूगोलाच्या अभ्यासामुळे उपलब्ध करून दिलेल्या माहितीच्या आधारे प्रादेशिक नियोजक वेगळी पिके व कृषी क्षेत्रात काम करू शकतात.
२. शेती साधने, जलसिंचनाची नवी साधने—तंत्रे जैवतंत्रज्ञानाचा वापर यांचा विविध अंगांनी अभ्यास करून त्यांचे यथायोग्य मूल्यमापन करण्याचे काम कृषी भूगोलतज्ञ करू शकतात.

संशोधन विषयाची निवड व अभ्यास क्षेत्र—

महाराष्ट्र राज्याच्या मध्य भागात महत्त्वपूर्ण स्थान असलेल्या बीड जिल्ह्यातील अंबाजोगाई व केज हे दोन तालुके अभ्यास क्षेत्र म्हणून निवडण्याचे कारण म्हणजे हे तालुके जुने असून, येथील ऐतिहासिक व भौगोलिक पार्श्वभूमी ही महत्त्वपूर्ण आहे. तसेच या प्रदेशात प्रमुख अशी धार्मिक क्षेत्र व पर्यटन क्षेत्र अस्तित्वात आहेत. त्याच प्रमाणे बीड जिल्हा हा ऊस तोड कामगारांचा जिल्हा म्हणून ओळखला जातो. त्यातही केज तालुका हा प्रामुख्याने ऊस तोड कामगारांचा पुरवठा करणारा तालुका म्हणून ओळखला जातो. केज तालुका हे एक समस्या प्रधान क्षेत्र म्हणून ओळखले जाते. येथील लोकसंख्या, रोजगार, कुशल कामगारांचा अभाव, हलक्या प्रतिच्या जमिनी इत्यादी महत्त्वाच्या समस्या आहेत.

अभ्यासाचा हेतू आणि उद्दिष्ट्ये—

- १) अंबाजोगाई आणि केज तहसिल अंतर्गत प्राकृतिक, सामाजिक आणि आर्थिक घटकांचा तुलनात्मक अभ्यास करणे.
- २) अंबाजोगाई आणि केज तहसिल अंतर्गत येणा—या भूमी उपयोजन पीक क्षेत्राचा तुलनात्मक अभ्यास करणे.
- ३) अंबाजोगाई व केज तहसिल अंतर्गत येणा—या जलसिंचन सुविधांचा कृषी उत्पादनावर होणारा परिणाम अभ्यासणे.

गृहितके—

१. अभ्यास क्षेत्रातील भूमीउपयोजनाच्या क्षेत्रात वाढ झालेली आहे.
२. जलसिंचन सुविधांचा भूमी उपयोजनावर परिणाम होवून त्यांचा परिणाम घनात्मक पध्दतीने झालेला आहे.



३. अंबाजोगाई व केज तहसिल अंतर्गत भूमी उपयोजनाचा पीक प्रारूपावर बदल झालेला दिसतो.
४. अंबाजोगाई व केज तहसिल अंतर्गत पीक विविधतेवर झालेला बदल दिसून येतो.

माहितीचे स्रोत आणि अभ्यास पध्दती—

प्रस्तुत संशोधनामध्ये प्रामुख्याने प्राथमिक आणि द्वितीयक सामुग्रीचा उपयोग केला आहे. संशोधनासाठी निवडलेल्या अंबाजोगाई आणि केज तहसिल अंतर्गत मागील १५ वर्षांच्या कालावधीतील तलाठी सज्जा, तालुका कृषी कार्यालयाच्या पीक नोंदणीनुसार तसेच जिल्हा कृषी कार्यालयाच्या सांख्यिकीय नोंदीच्या आधारे माहिती प्राप्त करून विश्लेषण करण्यात येईल. तसेच सदरील संशोधन पूर्ण करण्यासाठी अनेक भूगोल तज्ञांनी लेखन केलेल्या साहित्याचे पुर्नवालोकन करण्यात आले आहे.

प्रकरण दुसरे यामध्ये अंबाजोगाई व केज तालुक्यातील प्राकृतिक व अ-प्राकृतिक घटकांना अनुसरून अभ्यास करण्यात आलेला आहे. प्रस्तुत प्रकरणामध्ये अभ्यासक्षेत्राचे स्थान व विस्तार, प्राकृतिक रचना, नदी प्रणाली, हवामान, मृदा, नैसर्गिक वनस्पती, ऐतिहासिक पार्श्वभूमी, जलसिंचन, लोकसंख्या, पशुधन, कृषी विषयक अवजारे, सुधारीत बियाणे, रासायनिक खते, कृषी वित्त पुरवठा, कृषी विपणन, विद्युत पुरवठा व वापर, कृषी उत्पन्न बाजार समिती, वाहतूक व संदेशवहन इ. घटकांचा आढावा घेण्यात आलेला आहे. वरील घटक हे बदलणारे आहेत, मात्र या बदलाची प्रक्रिया अत्यंत सावकाश पध्दतीने होत असते. अंबाजोगाई तालुक्याचा अक्षवृत्तीय विस्तार १८°९' उत्तर ते २५' उत्तर अक्षवृत्ता दरम्यान तर रेखावृत्तीय विस्तार ६८° ५४' पूर्व ते ६५° ५७' पूर्व रेखावृत्ता दरम्यान आहे. तालुक्याचे एकुण क्षेत्रफळ ८८५.३४ चौ.कि.मी. असून ते बीड जिल्ह्याच्या ७.८९: एवढे आहे. तर केज तालुक्याचा अक्षवृत्तीय विस्तार १८° ३३' उत्तर ते १८° ५४' उत्तर अक्षवृत्ता दरम्यान तर रेखावृत्तीय विस्तार ७५° ४७' पूर्व ते ७५° १८' पूर्व रेखावृत्ता दरम्यान आहे. तालुक्याचे एकुण क्षेत्रफळ १७६९.९२ चौ.कि.मी. असून बीड जिल्ह्याच्या ६.३४: आहे.

अंबाजोगाई तालुक्यातील महसूल मंडळ निहाय पीक विविधतेचा सन २००१-०२ मध्ये अभ्यास केला असता, ती पीक विविधता १०.९८ इतकी होती. तर सन २०१५-१६ मध्ये पीक विविधता ५.११ इतकी झाली. सर्वात कमी अंबाजोगाई तालुक्यामध्ये पीक विविधता सन २०१५-१६ मध्ये ५.११ इतकी आहे. तर अंबाजोगाई तालुक्यातील जोखंडी सावरगाव या मंडळात सन २०१५-१६ मध्ये सर्वात जास्त असलेली दिसून



येते. तसेच केज तालुक्यातील महसूल मंडळ निहाय पीक विविधतेचा अभ्यास केला असता, सन २००१-०२ मध्ये सर्वात कमी पीक विविधता ७.१३ इतकी विडा या मंडळात दिसून येते. तर सर्वात जास्त युसुफ वडगाव या मंडळात ८.१२ असलेली दिसून येते. सन २०१५-१६ चा अभ्यास केला असता, त्यात झालेला मुल्य बदल बनसारोळा या मंडळात +८.७० इतका मुल्य बदल झालेला दिसून येतो. तर ऋण मुल्य बदल - ०.२३ होळ या मंडळात झालेला दिसून येतो. सर्वात कमी मुल्य बदल हनुमंतपिंप्री या मंडळात - ०.२१ इतका झालेला दिसून येतो.

संदर्भ सूची :-

- १) Chatterji S- P- 1960 : [Planning for Agricultural Development in India] [National Geographer] Vol-4-
- २) Chouhan T- S- 1987 : Agricultural Geography A case study of Rajasthan State- Academic Pulication] Jaipur] P- No- 37&42-
- ३) Phule S- J- 1999 : [An Agricultural Geography of Marathwada Region] [Un published Ph-D- Thesis] Dr- B-A-M- University Aurangabad] 1999&2000-
- ४) डॉ. सुरेश फुले (२००२) - "कृषी भूगोल," विद्याभारती प्रकाशन, लातूर पृष्ठ क्र. १६८-१८७.
- ५) जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन सांख्यिकी जिल्हा हिंगोली (२०१६)-अर्थ
- ६) जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन सांख्यिकी जिल्हा हिंगोली (२०१६)- अर्थ व संचालनालय महाराष्ट्र शासन, मुंबई (१९९३).
- ७) भास्कर के. एस. (१९८७) रू महाराष्ट्रातील विदर्भ प्रदेशाची कृषी उत्पादन क्षमता.
- ८) भोसले प्र.बा. (संपादक) बळीराजा कृषी मासिक/कृषी विज्ञान प्रकाशन, पुणे ऑक्टोबर-२०१०, नोव्हेंबर-२०१०, डिसेंबर-२०१०, जानेवारी-२०११.
- ९) हुसैन माजिद (२०००) "कृषी भूगोल" रावत पब्लिकेशन्स, जयपूर पृष्ठ क्र. ६७-७४.
- १०) सोनवणे बी. जी. रू नांदेड जिल्ह्यातील कृषी विषयक बदलाचा अभ्यास (१९९८) पृष्ठ क्र. ५७, ५९, ६२.
- ११) खतीब ए. के. भारतीय कृषी भूगोल, पृष्ठ क्र. ४७, ५२-५५.

PRINCIPAL

Vasundhara College, Ghatnandur
Tq. Ambajogai Dist. Beed 431519



ग्रामीण विकासाच्या विविध योजना

डॉ.गंगणे अमोल उत्तमराव

(इतिहास विभाग), वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदूर, ता.अंबाजोगाई जि.बीड

प्रस्तावना

भारत हा कृषी प्रधान देश असून येथील 68% जनता ग्रामीण भागात वास्तव्य करते. ग्रामीण भागातील जनतेचा सर्वांगीण विकास करण्याकरिता केंद्र व राज्य सरकारने वेगवेगळ्या विकासात्मक लोककल्याणकारी योजना सुरु केल्या आहेत. या लोक कल्याणकारी योजनांमुळे ग्रामीण भागात ही आरोग्य, शैक्षणिक, व्यावसायिक प्रशिक्षणाच्या सुविधा गतीने होत आहेत. तसेच तांत्रिक कृषीव्यवसाय शेतीला पुरक व्यवसाय, कुटीर उद्योगाला चालना देणे. तसेच लघुउद्योगाची निर्मिती इत्यादी करिता शासन आर्थिक अनुदान देत आहे. त्यामुळे ग्रामीण समुदायाच्या विकासाला निश्चित दिशा मिळून गती प्राप्त झाली आहे.

विकासाच्या संकल्पनेत देशाची अथवा समाजाची सर्वांगीण प्रगती अभिप्रेत असते. विकासाच्या प्रक्रियेत आर्थिक आणि सामाजिक घटकांच्या व्यवस्थेत परिवर्तन होते. म्हणूनच विकास ही सतत चालणारी प्रक्रिया आहे. या विकास प्रक्रियेचा केंद्र बिंदू मनुष्य आहे. विकास मानवी समाजाचे एक ध्येय व उद्दिष्टे आहे. विकास या संकल्पनेत केवळ प्रगती किंवा आर्थिक वृद्धी ऐवढेच अभिप्रेत नाही तर भाषणाच्या सामाजिक, आर्थिक, राजकीय आणि सांस्कृतिक बाबींचा विकास सामाविष्ट आहे. ग्रामीण विकास हा लोकांच्या एका विशिष्ट समूहाच्या आर्थिक किंवा सामाजिक सुधारणा आणण्यासाठी स्विकारलेली व्युत्पन्न आहे. या व्युत्पन्नेत छोटे शेतकरी, कष्टकरी किंवा भूमिहीन समूहाला सहभागी केले जाते.

ग्रामीण विकासाचा संदर्भ ग्रामीण भागातील गरीब लोकांचा जीवन स्तर सुधारण्याशी आहे. ग्रामीण विकासाचे चार महत्त्वपूर्ण तत्वे असतात. यामध्ये गरीब व्यक्तींची सक्रिय भागीदारी, भौतिक व मानवीय साधनांचा उपयोग, अर्थसाठा आणि तंत्रज्ञानाचा उपयोग ग्रामीण भागातील विकासाचे स्वप्न पाहतांना महात्मा गांधी म्हणतात की, "भारत की आत्मा गाँव में बसती है। जब तक गाँवों का विकास नहीं होगा तथा गाँव पुनः आत्मनिर्भर नहीं होंगे, तब तक देश का विकास नहीं हो सकता." महात्मा गांधींच्या ग्राम स्वराज्य संकल्पनेत स्वायत्त व स्वयंपूर्ण खेड्यांना महत्त्व देण्यात आलेले होते.

अशा ग्रामीण विकास योजनांचे स्वरूप, रचना, उद्देश आणि परिणाम इत्यादींचे अध्ययन करण्याकरिता पुढीलप्रमाणे संशोधनाची उद्दिष्टे मांडण्यात आली.

संशोधनाची उद्दिष्टे:

- 1) ग्रामीण विकास संकल्पनेचे स्वरूप व व्याप्ती अभ्यासणे.
- 2) ग्रामीण विकासाच्या विविध योजनांचा आढावा घेणे.
- 3) लोक कल्याणकारी योजनेत फलीत अभ्यासणे.

सदरील उद्दिष्टांच्या अध्ययना करिता खालीलप्रमाणे गृहितकांची मांडणी करण्यात आली.



गृहितके:

- 1) लोक कल्याणकारी योजनामुळे ग्रामीण विकासाला गती मिळाली.
- 2) लोक कल्याणकारी योजना समतोल विकास घडवून आणतात.
- 3) लोक कल्याणकारी योजनांना काही उणिवा आहेत.

उपरोक्त गृहितकांच्या पडताळणीकरिता पुढीलप्रमाणे संशोधन पध्दतीचा अवलंब करण्यात आला आहे.

संशोधन पध्दती:

प्रस्तुत संशोधनाच्या तथ्य संकलना करिता प्रामुख्याने द्वितीयक स्रोतातील प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतांचा अवलंब करण्यात आला आहे. प्रकाशित स्रोतांमध्ये संदर्भग्रंथ, क्रमिक पुस्तके, मासिके, वर्तमान पत्रे, वार्षिक अहवाल इत्यादींचा वापर करण्यात आला आहे. तर अप्रकाशित स्रोतांमध्ये एम.फिल, पीएच.डी. चे प्रबंध, शासकीय व निम्नशासकीय संस्थांचे अहवाल, इंटरनेट इत्यादींचा वापर केला आहे. सदरील संशोधनाच्या मांडणी करिता प्रामुख्याने वर्णनात्मक संशोधन आराखड्याचा अवलंब करण्यात आला.

विषयप्रतिपादन:

ग्रामीण विकास योजनांचे स्वरूप विशाल आहे. या योजनांचा उद्देश ग्रामीण समुदायातील सर्वच घटकांचा सर्वांगीण विकास घडवून आणणे आहे. असा विशाल उद्देश असाणाऱ्या योजना व योजनांचे स्वरूप पुढीलप्रमाणे नमुद करता येईल.

ग्रामीण विकासाच्या विविध योजना:

अ) कृषि विकास व कृषिपुरक योजना:

कृषि विकास योजना ह्या शेतीची मालकी, शेतीकरिता आर्थिक मदत, कृषि व्यावसाय इत्यादीशी निगडित आहेत. या योजनांचे स्वरूप पुढीलप्रमाणे स्पष्ट करता येते.

जमीन सुधारणा: जमीन सुधारणा कायदा 1967 मध्ये पारित करण्यात आला. या कायदानुसार एका व्यक्तीकडे जास्तीत जास्त जमीन किती असावी हे ठरवण्यात आले. त्याच बरोबर कुळांना जमीनीचे मालकी हक्क देणे, कसल त्याची जमीन इत्यादी सुधारणा करण्यात आल्या.

पीक विमा योजना: पीक विमा योजना ही केंद्र सरकार मार्फत देशातील सर्वच राज्यात चालवली जाते. या योजने अंतर्गत शेतकऱ्यांच्या पीकांचा विमा काढला जातो. पीक उत्पादनाच्या आनेवारी शेतकऱ्यांना पीकाची आर्थिक नुकमान भरपाई दिली जाते.

जवाहर विहिर योजना: जीवनधारा ही केंद्र सरकार पुरस्कृत योजना सन 1988-89 पासून सर्वच राज्यात राबविली जात आहे. या योजने अंतर्गत अनुसूचित जाती, जमाती मधील अल्पभूधारकांना शेती मध्ये विहिर खोदण्याकरिता अनुदान दिले जाते.

कृषि पंढरी योजना: ही योजना 1986-84 मध्ये सुरु करण्यात आली. ही योजना कोरडवाहू शेतीतून जास्तीत जास्त उत्पादन काढण्याच्या दृष्टीने आधुनिक कृषी तंत्रज्ञान शेतकऱ्यांपर्यंत पोहचविते. याशिवाय शेतकऱ्यांना आधुनिक वि-वियाणे देते. तसेच पाणी आडवा पाणी जिरबा योजना, पाझर तलाव, गावतळी, माठवण तलाव, कोल्हापुरी बंधारे, तुपार सिंचन असे जमिनीशी निगडित कार्यक्रम राबविले जातात.

ब) भारत निर्माण योजना: भारत निर्माण योजना ही ग्रामीण समुदायाला पायाभूत सुविधा निर्माण करून देते. यामध्ये पाणीपुरवठा, घरकुल, रस्ते वैद्यकीय सुविधा इत्यादीची निर्मिती करून देते. तसेच या योजने अंतर्गत खालील योजना राबविल्या जात आहेत.



ग्रामीण विद्युतीकरण: मानवाच्या गरजापैकी विद्युत ही एक आवश्यक वाव आहे. त्यामुळे ग्रामीण विकासाच्या प्रक्रियेतील विद्युतीकरण हा एक महत्वाचा घटक आहे. ग्रामीण विद्युतीकरणाची प्रक्रिया ही 1988 पासून गतीने सुरु झाली आहे.

ग्रामीण जलपुरवठा: केंद्रीय ग्रामविकास मंत्रालय आणि राज्य शासन यांच्या सहभागातून ग्रामीण पाणी पुरवठा योजना सुरु करण्यात आली आहे. या योजने अंतर्गत गाव, बाड्या, तांडे, शाळा वस्त्या यांना पाण्याची सुविधा करून दिली जाते.

ग्रामीण रस्ते बांधणी: पंतप्रधान ग्रामसडक योजने अंतर्गत गाव वस्ती पासून शेतीपर्यंत सत्याची सुविधा या योजनेद्वारे केली जाते. तसेच गाव ते बाजार पेठ द्या रस्त्याची सुविधा या योजनेच्या माध्यमातून केली जाते.

जलसिंचन: केंद्रीय जलस्रोत मंत्रालय आणि राज्य सरकार यांच्या सहकार्याने छोटे, मध्यम आणि मोठे जलप्रकल्प उभारून जलसिंचन सुविधा निर्माण करण्याचे ध्येय आहे. या योजनेत नवीन प्रकलपाच्या माध्यमातून जलसिंचन क्षमतेचा विकास करणे, त्याच बरोबर बापरात नसलेल्या जलस्रोतांचा पुर्नविकास करणे. तसेच ही योजना तलावातील गाळ काढून जलसाठा वाढवण्याचे कार्य करते.

क) रोजगार विषयक योजना:

ग्रामीण भागातील नागरिकांना रोजगाराची उपलब्धता करून देण्याकरिता केंद्र सरकारने 1966 पासून रोजगार हमी योजना सुरु केली आहे. या योजने अंतर्गत ग्रामीण मजुरांना या योजनांचे स्वरूप पुढीलप्रमाणे तमुद करता येते.

रोजगार हमी योजना: रोजगार हमी योजनेची सुरुवात 26 जानेवारी 1979 पासून करण्यात आली. ही योजना केंद्रशासना मार्फत चालविली जात आहे. या योजनेच्या माध्यमातून मजुरांना रोजगार पुरविला जातो. त्याच बरोबर मजुरांना अन्न धान्याची सुविधा केली जात आहे.

पंतप्रधान रोजगार योजना: ही योजना 2 ऑक्टोबर 1993 पासून सुरु करण्यात आली आहे. या योजने अंतर्गत सुशिक्षित बेरोजगारांना स्वतःचा उद्योग उभारता यावा. या करिता आर्थिक मदत केली जाते. या योजने मार्फत सुशिक्षित बेरोजगारांना उद्योगाच्या निर्मितीकरिता 5 लाख रुपयाचे कर्ज दिले जाते.

सुवर्णजयंती ग्राम स्वयंरोजगार योजना: ही योजना सन 1999 पासून सुरु करण्यात आली. या योजने अंतर्गत आर्थिकदृष्ट्या दारिद्र्यात असलेल्या म्हणजेच दारिद्र्य रेषेखालील कुटुंबांना रोजगाराची सुविधा देवून दारिद्र्यरेषेच्या वर आणले जाते. ही योजना कुटीर उद्योग, लघुउद्योग, जोड उद्योग या माध्यमातून स्वरोजगार निर्माण करून देते.

राष्ट्रीय ग्रामीण हमी योजना: ही योजना 2005 मध्ये सुरु करण्यात आली. ही योजना केंद्र सरकारच्या अंतर्गत चालते. या योजने अंतर्गत ग्रामीण भागातील मजुरांना एका वर्षात कमीत कमी 100 दिवसांच्या कामाची सुविधा करून दिली जाते. या योजनेचे लाभार्थी अल्पभूधारक, शेतमजूर, सुशिक्षित बेकार, भुमीहित, इत्यादी वर्गातील आहेत.

ड) ग्रामीण महिला विषयक योजना:

ग्रामीण भागातील महिलांच्या मोठ्या प्रमाणात अशिक्षित आहेत. त्या रोजी रोजगारावर आपला दररोज चा खर्च भागवतात. अशा मजूर महिला करिता केंद्र शासन व राज्य शासन यांच्या संयुक्त विद्यमाने ज्या योजना राबविल्या जात आहेत त्यांचे स्वरूप पुढील प्रमाणे तमुद करता येते.

महिला सशक्तीकरण योजना: महाराष्ट्रात महिला आयोगाची स्थापना 1993 मध्ये करण्यात आली. महाराष्ट्र हे महिलांसाठी स्वतंत्र आयोग स्थापन करणारे पहिले राज्य आहे. स्थानिक स्वराज्य संस्थात एकूण जागांच्या 33% आरक्षण महिलांना दिले तेच आरक्षण 110 व्या



घटनादुरुस्ती मध्ये 50% करण्यात आले. महिलांना आरक्षण देवून महिलांच्या सर्वांगीन विकासासाठी शासन वेळोवेळी विविध योजना राबवित आहे.

महत्त्व

ग्रामीण विकासाच्या विविध योजनांचे अध्ययन केले असता निदर्शनास येते की, केंद्र व राज्य शासन हे ग्रामीण समुदायाचा आणि ग्रामीण भागातील नागरीकांचा सर्वांगीन विकास करण्याकरिता सातत्याने नवनविन योजना राबवित आहे. या योजनांची ग्रामीण नागरीकांना महिती देण्याचे कार्य सदरील संशोधनाच्या माध्यमातून होणार आहे. तसेच योजना मध्ये ज्या उणिवा आहेत त्या उणिवा सोडवण्याचे कार्य सदरील संशोधनाच्याद्वारे होईल.

संदर्भ सूची

- 1) प्रा.घाटोळे रा.ना. 'संशोधन' पध्दती आणि तत्वे श्रीमंगेश प्रकाशन, नागपुर 2005.
- 2) डॉ.दा.घो काचोळे 'समाजशास्त्रीय संशोधन पध्दती' कैलाश पब्लिकेशन्स, औरंगाबाद 2008.
- 3) कराळे गंगाधर 'ग्रामीण विकासाचा एकात्मिक दृष्टिकोन' श्री मंगेश प्रकाशन नागपूर 2006.
- 4) ग्रामीण विकासाचा अरुणोदय, मराठवाडा, वैधानिक विकास मंडळ, औरंगाबाद 2005.
- 5) न्युजलेटर 'ग्रामीण विकास' न्युजलेटर प्रकाशन, हैद्राबाद 1994.
- 6) www. mahapanchyat gov.in.
- 7) www.wikipedia.